ओ३म्

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

संस्कृत-व्याकरण के सूर्य (प्रज्ञा-चक्षु)
गुरुवर विरजानन्द सरस्वती

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के मन्त्रदाता

आर्य समाज के संस्थापक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

# श्रद्धा

## वार्षिक विशेषाङ्क
## अप्रैल २०१४

शुद्धि-आन्दोलन के प्रवर्तक एवं निर्भीक स्वतन्त्रता सेनानी

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के संस्थापक
अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

प्रकाशक

**विद्यालय-विभाग**

**गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय**

**हरिद्वार (उत्तराखण्ड)-249404**

website:gurukulkangrividyalaya.org
E-mail:gurukulkangri@gmail.com

# वेदमंजरी

## विश्वस्य भवनस्य राजा

महाँ असि महिष वृष्ण्येभिर्धनस्पृदुग्र सहमानो अन्यान्।
एको विश्वस्य भुवनस्य राजा स योधया च क्षयया च जनान्।। ऋग्. ३.४६.२

ऋषिः गाथिनो विश्वामित्रः। देवता – इन्द्रः। छन्दः त्रिष्टुप्।

(महिष) हे महनीय! (उग्र) हे प्रचण्ड! (धनस्पृत्) धनस्य दाता, (अन्यान् सहमानः) नास्तिकान् पराभवन् त्वम् (वृष्ण्येभिः) वर्षकैर्गुणैः बलैश्च (महान् असि) महिमान्वितो विद्यसे। त्वम् (एकः) एकलः (विश्वस्य भुवनस्य राजा) सकलस्य ब्रह्माण्डस्य सम्राट् वर्तसे। (सः) असौ त्वम् (जनान्) मनुष्यान् अस्मान्(योधय च) संघर्षं कारय च (क्षय य च) निवासय च।

हे हृदयाधिराज परमात्मन्! त्वं महिषोऽसि, महान् असि, परम महनीयोऽसि। त्वयि महत्तायाः पराकाष्ठा विद्यते। वयम् अमहान्तः क्षुद्र जनास्तु तव गगनचुम्बिनीं सर्वव्यापिनीं महत्तां दृष्ट्वा विस्मयस्तिमिता भवामः। त्वं 'धनस्पृत्' असि, सर्वविधानाम् ऐश्वर्याणां प्रदाता विद्यसे। अस्मिन् जगतीतले यान्यपि विविधान्यैश्वर्याणि वर्तन्ते, तेषां जनका वयं मानवा न स्मः, प्रत्युत त्वमेव तेषां जनयिता प्रदाता च भवसि। वयम् अल्प बला जनास्तु त्वत्प्रदत्ताम् उपादानसामग्रीं विना क्षुद्रमपि वस्तु रचयितुं न समर्थाः स्मः। त्वं नास्तिकजनानां पराभविता विद्यसे। तेषां पराभवं त्वं द्विप्रकारेण करोषि। त्वं तान् कयाचित् चामत्कारिकघटनया प्रभावितान् कृत्वा आस्तिकान् विदधासि, यद्वा त्वं त्वद्विरोधे भाषणानि कुर्वतस्तान् स्वकीयेन भयङ्करेण चक्रवातेन उड्डाय्य न जाने कस्मिन् विपत्ति कूपे पातयसि। त्वं स्वकीयैरनेकैर्गुणैः बलैश्च महिमान्वितो विद्यसे। त्वं निर्गुणानां गुणकरोऽसि, निर्बलानां बलकरोऽसि। येऽपि सत्यन्यायदयादयो गुणगणाः, आत्मिकानि शारीराणि च बलानि जगति दृश्यन्ते, तेषाम् उद्गमभूमिस्त्वमेव वर्तसे।

त्वं सकलस्य भुवनस्य, समस्तस्य ब्रह्माण्डस्य एको राजा, अद्वितीयः सम्राड् विद्यसे। स्वकीयराजत्वस्य गर्वं कुर्वन्तो महान्तोऽपि जनाः त्वत्सम्मुखं सेवकाः सन्ति। त्वत्समः अन्यः कोऽपि विश्वस्य सम्राड् नास्ति। येऽपि अग्निवायुसूर्ययमविष्णुरुद्रवरुणप्रभृतयो देवा वेदेषु स्तूयन्ते, ते तवैव विभिन्नानि नामानि सन्ति।

अयि राजाधिराज इन्द्र! त्वम् अस्मान् संग्रामे प्रवर्तय, संघर्षेषु संपात्य अस्मान् सतेजस्कान् कुरु, विजयिनश्च संपादय। अकर्मण्यः सन्, संघर्षेभ्यो भीतः सन् कोऽपि जनो निवासं लब्धुं न शक्नोति। हे देव! अस्मत्प्रार्थनां पूरय, येन राजराजेश्वरस्य तव छत्रच्छायायां निवसन्तो वयं चरमम् उत्कर्षं प्राप्तुं शक्नुयाम।

आचार्य रामनाथ वेदालङ्कारः

ओ३म्

# श्रद्धा

## वार्षिक विशेषाङ्क
## अप्रैल 2014


जयप्रकाश विद्यालंकार
सहायक मुख्याधिष्ठाता

डॉ० विजेन्द्र शास्त्री
का० मुख्याध्यापक

डॉ० योगेश शास्त्री
प्रधान सम्पादक

अशोक कुमार आर्य
सम्पादक

सम्पादक मण्डल
श्री प्रकाशवीर
श्री हुकम चन्द
श्री टीकम सिंह
श्री अश्विनी कुमार



प्रकाशक
विद्यालय-विभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-२४९४०४
www.gurukulkangrividyalaya.org.
Email-gurukulkangri@gmail.com

## संरक्षक-मण्डल

**महाशय धर्मपाल जी**, प्रधान- आर्य विद्या सभा, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

**डॉ॰ रामप्रकाश जी**, कुलाधिपति- गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

**डॉ॰ सुरेन्द्र कुमार जी**, कुलपति- गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

**श्री आचार्य यशपाल जी**, मुख्याधिष्ठाता- गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

**श्री जयप्रकाश जी विद्यालंकार**- सहायक मुख्याधिष्ठाता एवं प्रकाशक

---

**डॉ० विजेन्द्र शास्त्री**- का॰ मुख्याध्यापक, गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, हरिद्वार

**डॉ० योगेश शास्त्री** (प्रधान सम्पादक)

**श्री अशोक कुमार आर्य** (सम्पादक)

### सम्पादक मण्डल

श्री प्रकाशवीर

श्री हुकम चन्द

श्री टीकम सिंह

श्री अश्विनी कुमार

### सहयोगी छात्र

**ब्र० रुस्तम**- विद्याधिकारी प्रथम खण्ड (9 ब)

**ब्र० अभिषेक**- विद्याधिकारी प्रथम खण्ड (9 ब)

**ब्र० कौशल**- विद्याधिकारी प्रथम खण्ड (9 अ)

### छात्र सम्पादक

**ब्र० अर्पण**- विद्याविनोद द्वितीय खण्ड (12)

**ब्र० शक्ति**- विद्याविनोद प्रथम खण्ड (11)

**ब्र० हर्ष**- विद्याधिकारी द्वितीय खण्ड (10)

**ब्र० आलोक**-विद्याधिकारी द्वितीय खण्ड (10 )

### सहयोगी छात्र

**ब्र० अमित जोशी**- अष्टम

**ब्र० कृपाशंकर**- सप्तम

**ब्र० हितेश**- पंचम

### प्रबन्धकर्ता

**श्री नन्दकिशोर मिश्रा**, लिपिक

**श्री सत्यवीर सिंह**, लिपिक

**श्री फकीर चन्द**, लिपिक

**श्री मामराज सिंह**, लिपिक

### विशेष सहयोग

**श्री राजबहादुर सिंह**, लिपिक (अंशकालीन)

**श्री सुरेन्द्र सिंह बिष्ट**, लिपिक (अंशकालीन)

**श्री राकेश मेहरा**, लिपिक (अंशकालीन)

आचार्य बलदेव
प्रधान

सार्वदेशिक आर्य
प्रतिनिधि सभा,
नई दिल्ली

# आशीर्वचांसि

यह जानकर अतीव प्रसन्नता हो रही है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा संस्थापित गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, हरिद्वार अपनी वार्षिक विवरणिका श्रद्धा पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है।

पत्रिका में गुरुकुल के छात्रों की ज्ञान-निधि, अजस्त्र रूप में प्रेरणा पूर्ण ढंग से छात्रों में उत्कृष्टता को समादृत कर सकेगी।

मैं श्रद्धा पत्रिका के प्रकाशन की सफलता हेतु अपनी हार्दिक मंगलकामनाएँ प्रदान करता हूँ। सम्पादक मण्डल को शुभकामनाओं एवं आशीर्वाद के साथ।

(आचार्य बलदेव)

**महाशय धर्मपाल**

प्रधान

**आर्य विद्या सभा**

**गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार**

# शुभकामना संदेश

मुझे प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार द्वारा संचालित गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय-विभाग हरिद्वार "श्रद्धा पत्रिका" का प्रकाशन कर रहा है। जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारी छात्रों के विविध ज्ञान का आलोकन दृष्टिगत् हो रहा है। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा त्रिभाषा (संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी) में विचार मंथन एवं चिन्तन नूतन ज्ञान-प्रवाह को उद्‌घाटित कर सका तो देश का भविष्य सुरक्षित रहेगा, ये ब्रह्मचारी ही भारत का भविष्य हैं।

वार्षिक विवरणिका "श्रद्धा" के प्रकाशन की साफल्यता हेतु मैं सभी को आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ, तथा ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि श्रद्धा गुरुकुल के ब्रह्मचारी छात्रों की ज्ञान रश्मि को उच्चता एवं लेखन प्रतिभा को मुखरता प्रदान करें।

श्रद्धा के प्रकाशन हेतु गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय-विभाग के सभी कुलवासियों को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद।

**शुभाकांक्षी**

**(महाशय धर्मपाल)**

**डॉ. रामप्रकाश**
कुलाधिपति

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

# मनोभाव

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, (विद्यायल-विभाग) हरिद्वार 'श्रद्धा-पत्रिका' का प्रकाशन कर रहा है। जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारी छात्रों के विभिन्न विषयों पर विचार-मंथन एवं चिंतन से जहाँ ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में नूतन एवं विस्तृत आयाम उद्घाटित होंगे, वहाँ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की लेखन एवं वक्तृत्व कला भी समुन्नत होगी।

'श्रद्धा' के प्रकाशन की सफलता हेतु मैं हार्दिक शुभाशंसा एवं मंगलकामनाएँ प्रदान करता हूँ कि श्रद्धा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की योग्यता एवं लेखन प्रतिभा को उच्चता प्रदान करें।

इस पुनीत कार्य के लिए मैं गुरुकुल विद्यालय के समस्त कुलवासियों को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

**डॉ. रामप्रकाश**

**डॉ० सुरेन्द्र कुमार**
कुलपति

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय
हरिद्वार ( उत्तराखण्ड )

# स्वस्ति-पथ

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा 4 मार्च 1902 में संस्थापित गुरुकुल कांगड़ी ने अपने स्थापना काल से जहाँ वैदिक नाद को अक्षुण्ण रखा है, वहाँ गुरुकुल के स्नातकों ने वेद, संस्कृत, व्याकरण, दर्शन, योग, आयुर्वेद, विज्ञान, गणित, राजनीति, समाज सेवा एवं पत्रकारिता आदि क्षेत्रों में अतुलनीय कार्य कर वैदिक संस्कृति, नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों को संरक्षित कर गुरुकुलीय परम्परा को विश्व इतिवृत्त के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों में मण्डित किया है।

गुरुकुल स्थापना काल से ही ज्ञान-विज्ञान एवं चारित्रिक अवमूल्यों की शिक्षा को उच्चता प्रदान कर, देश-देशान्तर एवं द्वीप-द्वीपान्तर में प्रसारित करने हेतु कृतसंकल्प है।

गुरुकुल के स्नातकों ने कुलमाता के यश, वर्चस्व एवं वैभव को सदैव अक्षुण्ण रखा है। इस परम्परा को सत्कृत करने हेतु गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के ज्ञान-विज्ञान, लेखन एवं वक्तृत्व कला को गति प्रदान करने हेतु 'श्रद्धा' पत्रिका का प्रकाशन गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय-विभाग द्वारा किया जा रहा है।

मुझे पूर्णतः विश्वास है कि गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति में पोषित ब्रह्मचारियों की ज्ञान-रश्मि से आप्लावित संस्कृत, हिंदी एवं आंग्लभाषा में निबंध, लेख एवं कविताएँ उनकी योग्यता एवं क्षमता को संवर्धित करेगी।

श्रद्धा के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

**(डॉ० सुरेन्द्र कुमार)**

**यशपाल आचार्य**
मुख्याधिष्ठाता

**आर्य विद्या सभा,**
**गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार**

# शतपथ

अज्ञान अंधकार में फँसी भारतीय जनता को जागृत करने के लिए युगदृष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली का विवेचन किया तथा अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने आचार्य के विश्व कल्याणकारी संदेश को जन-जन तक पहुँचाने के लिए चौ० अमन सिंह जी द्वारा दान में प्रदान की गयी भूमि पर वसन्तोत्सव के पावन पर्व पर गुरुकुल की स्थापना की थी।

शनैः-शनैः स्वामी श्रद्धानन्द का यह उपवन उन्नति एवं यौवन को प्राप्त कर वटवृक्ष के रूप में समस्त विश्व में विशिष्ट एवं अद्वितीय स्थान को प्राप्त कर रहा है।

गुरुकुल के यशस्वी स्नातकों ने अपनी वाग्मिता लेखन एवं अद्‌भुत ज्ञान प्रतिभा के द्वारा समाज के प्रत्येक बिन्दु पर अतुलनीय कार्य कर गुरुकुल शिक्षा पद्धति को विश्व स्तर पर गौरवान्वित किया है।

इसी परम्परा को समुन्नत करने हेतु गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय-विभाग द्वारा संस्कृत-हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषाओं में ब्रह्मचारियों की वाग्वर्धिनी श्रद्धा पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है, जिससे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों में पठन-पाठन और लेखन के प्रति रुचि जागृत होगी।

श्रद्धा पत्रिका के प्रकाशन पर मैं सभी सहयोगी जनों को हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएँ देता हूँ।

**( यशपाल आचार्य )**

**आचार्य विजयपाल**
प्रधान

**आर्य प्रतिनिधि सभा**
**हरियाणा**

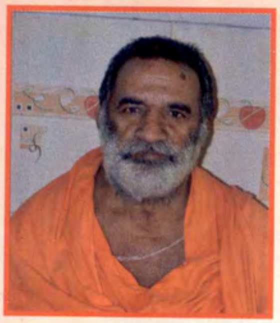

# संदेश

यह जानकर हर्ष हुआ कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के साक्षात् शिष्य हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का वटवृक्ष गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय-विभाग, हरिद्वार, छात्रों की प्रतिभा की उत्कृष्टता हेतु श्रद्धा पत्रिका का वार्षिकोत्सव पर सम्पादन कर रहा है। जिसके प्रकाशन से छात्रों में योग्यता, लेखन एवं वाक्चातुर्य में उन्नति होगी।

गुरुकुल का ब्रह्मचारी जब समस्त सत्य विद्याओं में पारंगत होकर समाज का दर्पण बनता है, तो वैदिक मान्यताएं संरक्षित रहती है।

श्रद्धा के प्रकाशन पर सभी ब्रह्मचारियों एवं सम्पादक मण्डल के सदस्यों को मेरी शुभकामनाएं।

(आचार्य विजयपाल)

**ब्र० राजसिंह आर्य**
प्रधान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
दिल्ली

# शुभकामना

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के उन्नायक, समाज सुधारक, स्वतन्त्रता के मन्त्रदाता, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वप्नों को साकार करने में सतत् प्रयत्नशील, स्वामी श्रद्धानन्द का सर्वमेध यज्ञ गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार छात्रों की मानसिक योग्यता एवं लेखन प्रतिभा की उच्चता हेतु गतवर्षों की भांति इस वर्ष भी **श्रद्धा** का प्रकाशन कर रहा है। श्रद्धा में त्रिभाषाओं में प्रकाशित लेख जहाँ जनमानस को समादृत करेंगे, वहाँ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को पुरातन स्नातकों की ज्ञान-धारा से भी जोड़ेंगे। जिससे वैदिक-आर्य परम्परा पल्लवित होंगी तथा भारत माता का गौरव भी बढ़ेगा।

मैं श्रद्धा के सफल प्रकाशन की शुभ-कामना प्रदान करता हूँ।

**( ब्र० राजसिंह आर्य )**

हरीश रावत

मुख्यमंत्री

उत्तराखण्ड सरकार

उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सरकार

## शुभकामना संदेश

यह जानकार अतीव प्रसन्ता हो रही है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा संस्थापित गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, हरिद्वार अपनी वार्षिक विवरणिका श्रद्धा पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है।

पत्रिका में गुरुकुल के छात्रों की ज्ञान-निधि अजस्र रूप में प्रेरणा पूर्ण ढंग से छात्रों में उत्कृष्ट्ता को समादृत कर सकेगी, मेरा यह विश्वास है।

मैं श्रद्धा पत्रिका के प्रकाशन की सफलता हेतु अपनी हार्दिक मंगलकामनाएँ प्रदान करता हूँ।

शुभाकांक्षी

(हरीश रावत)

प्रो० महावीर अग्रवाल
कुलपति

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय
बी०एच०ई०एल० मोड़
हरिद्वार-दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग,
पो०ओ० बहादराबाद, हरिद्वार-249 402
फोन: 01334-250896, 8449088884
फोन आ० : 01334-228544
ई-मेल: mahavir_gkv@yahoo.co.in
वेबसाईट: www.usvv.org

# मनोगतम्

अमरहुतात्मभिः परमपूज्यैः स्वामिश्रद्धानन्दवर्यैः संस्थापिते गुरुकुलकांगड़ीविश्वविद्यालये प्रारम्भत एव ब्रह्मचारिणः विविधेषु-शात्रेषु रममाणाः शारीरिकीं मानसीं बौद्धिकीं च क्षमतां सततं संवर्धयन्ति।

गुरुकुलादस्माद् उत्तमां शिक्षां संप्राप्य विद्वांसः स्नातकाः निखिलेऽपि देशे वैदिकज्ञानस्य, संस्कृतेः, आदर्शाणां, देशभक्तेश्च समुन्नयनेऽनारतं प्रयतमानाः कं जनं नानन्दयन्ति?

एतेषां ब्रह्मचारिणां तथा च वेदादिशास्त्रेषुकृतभूरिपरिश्रमाणां विदुषां विविधान् विषयान् आश्रीत्य विरचितानि शोध-पत्राणि, पद्यानि, संस्मरणानि च प्रकाशयितुं श्रद्धा नाम्नी काचिद् अद्भुता पत्रिका गुरुकुले प्रकाश्यते।

संवत्सरेऽस्मिन् श्रद्धायाः विशेषांकः सोत्साहं प्रकाश्यत इति ज्ञात्वा मोमुद्यन्तेनश्चेतांसि।

पत्रिकायाः सम्पादन-प्रकाशन वेलायां मुख्याधिष्ठातृ पदे विराजमानांमान्यानाम् आचार्य यशपालमहाभागानां सहायकअधिष्ठातृ पदं विभूषयतां जयप्रकाशविद्यालंकाराणं, मुख्याध्यापकानां प्रियानां डॉ. विजेन्द्रशास्त्रिमहाभागानां तथा च सम्पादकानां डॉ. योगेशशास्त्रिमहोदयानां अभिनन्दनं कुर्वाणोऽहं पत्रिकायाः सर्वविधं शुभं मंगलञ्च कामये।

मंगलाभाषी

(प्रो० महावीर अग्रवाल)
कुलपति

निवासः वेदालोक 22, नन्द विहार पो.गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

**मंत्री प्रसाद नैथानी**
मंत्री
विद्यालयी शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा
संस्कृत शिक्षा, पेयजल

उत्तराखण्ड सरकार

फोन : 2665080 (का.)
फैक्स : 2665121
कक्ष सं. : 16-17
विधान भवन, देहरादून

## संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय-विभाग, हरिद्वार की वार्षिक पत्रिका **"श्रद्धा"** का सत्र 2013-14 का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारी छात्रों की लेखन प्रतिभा का संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में प्रकाशन किया जाता है। आशा है कि पत्रिका में विभिन्न शिक्षाविदों, सामाजिक तथा राजनैतिक चिन्तकों की प्रेरणाप्रद रचनाओं के साथ अनेक जानकारियों एवं सुझावों का समावेश किया जायेगा।

वार्षिक पत्रिका "श्रद्धा" के सफल प्रकाशन हेतु मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनायें।

(मंत्री प्रसाद नैथानी)

**आदेश चौहान**
विधायक
बी.एच.ई.एल. रानीपुर क्षेत्र, हरिद्वार

उत्तराखण्ड सरकार

निवास
'मानव सेवा भवन'
रूड़की रोड, बहादराबाद,
मो0. 9719000572

# शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, हरिद्वार की वार्षिक पत्रिका श्रद्धा शीघ्र प्रकाशित होने जा रही है।

मुझे आशा है कि धार्मिक विचार से ओत-प्रोत उक्त पत्रिका संस्थान के विषय में विभिन्न प्रकार की जानकारी के साथ साथ अन्य ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक, रुचिकर एवं महत्वपूर्ण पाठ्य सामग्री से परिपूर्ण होगी, जिससे छात्रों में राष्ट्रीय भावना एवं संस्कारों का संचार होगा।

'श्रद्धा' पत्रिका के प्रकाशन की सफलता के लिये मेरी ओर से शुभकामनाएं

(आदेश चौहान)

**स्वामी यतीश्वरानन्द**
विधायक
35–हरिद्वार ग्रामीण

उत्तराखण्ड शासन

**निवास एवं कैम्प कार्यालयः**
वेद मन्दिर आश्रम,
निकट तहसील ज्वालापुर,
जनपद–हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
फोन : (01334)–250894

पत्रांक 152/14

दिनांक 1-4-14

# शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि गुरूकुल कागॅडी विश्वविद्यालय (विद्यालय विभाग)**हरिद्वार द्वारा** श्रद्वा पत्रिका 2014 का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका राष्ट्र एवं समाज की उन्नति के लिए सदा सहायक सिद्ध होगी तथा देश के सामने उपस्थित सभी समस्याओं के निराकरणार्थ मे सहायक सिद्ध होगी ऐसा मुझे विश्वास है। पत्रिका के प्रकाशन के अवसर पर मेरी हार्दिक बधाइयाँ एवं धन्यवाद।

यतीश्वरानन्द
विधायक
हरिद्वार ग्रामीण

निवास (देहरादून) : 18 प्रथम तल, विधायक निवास, रेसकोर्स, देहरादून (उत्तराखण्ड)

**संजय गुप्ता**
विधायक

उत्तराखण्ड सरकार

लक्सर
विधानसभा

## शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हर्षानुभूति हो रही है कि गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, हरिद्वार की वार्षिक पत्रिका श्रद्धा का शीघ्र प्रकाशन हो रहा है।

आशा है कि पत्रिका में ज्ञानवर्धक, प्रेरणापूर्ण एवं रुचिकर पाठ्य सामग्री छात्रों को सुसंस्कार एवं राष्ट्रीय भावनाओं से आप्लावित करेगी, जिससे छात्र प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति कर सकेंगे।

श्रद्धा के प्रकाशनार्थ मेरी शतशः मंगलकामनायें।

**भवन्निष्ठ,**

**( संजय गुप्ता )**

# गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रो० विनोद कुमार शर्मा
कुलसचिव

## शुभकामना संदेश

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के साक्षात् शिष्य अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा संस्थापित गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, हरिद्वार द्वारा श्रद्धा पत्रिका का इस वर्ष भी प्रकाशन किया जा रहा है। यह जानकर अतीव प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। पत्रिका में छात्रों के शिक्षापरक लेख एवं कविताएँ जहाँ उनकी प्रतिभा का परिचय देंगे, वहाँ उनमें स्वाध्याय, लेखन एवं वक्तृत्व कला के विकास को भी उन्नत करने की प्रेरणा देंगे।

श्रद्धा के सफल प्रकाशन के लिये मेरी शुभकामनाएं।

प्रो० विनोद कुमार शर्मा
कुलसचिव

धर्मपाल आर्य

ओ३म्

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
दिल्ली

# स्वस्ति-पथ

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के स्वप्न को साकार करने हेतु अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना सर्वस्व समर्पित करके गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार की स्थापना की थी। तब से लेकर आज तक गुरुकुल वैदिक पथ पर अग्रसर है।

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, हरिद्वार ब्रह्मचारियों के बौद्धिक विकास एवं उन्हें आर्य परम्पराओं से पल्लवित करने हेतु श्रद्धा पत्रिका का प्रकाशन पूर्व वर्षों की भाँति इस वर्ष भी कर रहा है, जिसमें ब्रह्मचारियों ने स्व योग्यता से स्व प्रतिभा का परिचय दिया है।

मैं गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर श्रद्धा के प्रकाशन हेतु समस्त गुरुकुल परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

**मंगलाभिलाषी**

( धर्मपाल आर्य )

**विनय आर्य**
महामंत्री

ओ३म्

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
दिल्ली

## शुभकामना संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है, कि गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, हरिद्वार श्रद्धा पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। जिसमें विविध विषयों पर विचार-मंथन एवं चिन्तन से जहाँ ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में नूतन एवं विस्तृत आयाम उद्घाटित होगें, वहाँ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की लेखन एवं वक्तृत्व कला भी समुन्त होगी।

वस्तुत: अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा संस्थापित गुरुकुल कांगड़ी ने अपने प्रतिमानो एवं उच्चादर्शों से जनमानस को सदैव मार्गदर्शन प्रदान किया है।

गुरुकुल के वार्षिकोत्सव 12 एवं 13 अप्रैल 2014 के अवसर पर श्रद्धा पत्रिका के प्रकाशन की सर्वविध सफलता हेतु मैं हार्दिक शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ।

इस पुनीत कार्य के लिए मैं समस्त गुरुकुलवासियों को धन्यवाद भी ज्ञापित करता हूँ।

**शुभाकांक्षी**

**( विनय आर्य )**

मा॰ रामपाल सिंह
महामंत्री

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा,
हरियाणा

## संदेश

यह जानकर हर्षातिरेक की अनुभूति हो रही है कि स्वामी श्रद्धानन्द का तपोवन गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, हरिद्वार वार्षिकोत्सव 2014 पर **श्रद्धा** पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि श्रद्धा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों में क्रियात्मक रुचि जागृत करने में समर्थ हो

इस कार्य के लिए मैं अपनी मंगलकामनाएँ प्रदान करता हूँ।

भवदीय

( मा॰ रामपाल सिंह )

**सतपाल ब्रह्मचारी**
पूर्व अध्यक्ष

**नगरपालिका परिषद्**
हरिद्वार

## शुभकामना संदेश

अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि गुरुकुल कांगड़ी, विद्यालय-विभाग, हरिद्वार द्वारा गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर प्रकाशित श्रद्धा पत्रिका ब्रह्मचारियों में शिक्षा के साथ-साथ उन्हें संस्कृत, अंग्रेजी एवं हिन्दी में भी निपुणता प्रदान करेगी।

'श्रद्धा पत्रिका' के प्रकाशन पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

**( सतपाल ब्रह्मचारी )**

जयप्रकाश विद्यालंकार
सहायक मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल कांगड़ी, विद्यालय-विभाग
हरिद्वार


# प्रगति पथ

वेद अनन्त ज्ञान के स्रोत तथा सभी सत्य विद्याओं के आगार हैं। वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सभी आर्यों का परम धर्म माना गया है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने गुरु ऋषि दयानन्द सरस्वती के इस हृदयग्राही उपदेश को हृदयङ्गम करके 04 मार्च 1902 को भगवती भागीरथी के पावन तट पर चौ० अमन सिंह जी द्वारा दान में प्रदत्त भूमि पर वैदिक संस्कृति एवं परम्पराओं के रक्षण हेतु गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी। गुरुकुल ने अपनी स्थापना से ही वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार का जहाँ पुनीत कार्य किया है, वहाँ इसके स्नातकों ने भी स्वतन्त्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गुरुकुल के स्नातक देश एवं समाज के कर्त्तव्यों को अपना परमधर्म समझते थे। सक्रिय भावनाओं से ओत प्रोत, स्वतन्त्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण अग्रणी भूमिका वाले गुरुकुल कांगड़ी को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, राष्ट्रीय संस्था मानते थे। गुरुकुल ने ही महात्मा गांधी को प्रथम बार महात्मा शब्द से वाचित किया था। मुझे भी इस गुरुकुल (कुलमाता) के आंचल में बैठकर विद्या मधु को प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, और आज मैं सहायक मुख्याधिष्ठाता के रूप में गुरुकुल को प्रगति पथ की ओर ले जाने हेतु कृतसंकल्प हूँ।

गुरुकुल का संचालन आर्य विद्या सभा के प्रधान दानवीर महाशय धर्मपाल जी, कुलाधिपति डॉ. रामप्रकाश जी, कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार, मुख्याधिष्ठाता आचार्य यशपाल जी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के पदाधिकारियों की प्रेरणा से आर्य विद्या सभा द्वारा किया जा रहा है।

इस वर्ष भी गुरुकुल की वार्षिक पत्रिका श्रद्धा का प्रकाशन किया जा रहा है, इसमें त्रिभाषा में छात्रों की योग्यता, दक्षता एवं लेखन प्रतिभा का परिचय प्राप्त होता है। मैं श्रद्धा पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु का० मुख्याध्यापक डॉ. बिजेन्द्र शास्त्री, प्रधान सम्पादक डॉ० योगेश शास्त्री एवं उनके सहयोगी सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ।

(जयप्रकाश विद्यालंकार)

डा० विजेन्द्र शास्त्री
का० मुख्याध्यापक

गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय
हरिद्वार

## शुभकामना सन्देश

आजकल स्कूल कॉलेजों से जो विद्यार्थी निकलते हैं, वास्तविक जीवन को उनमें प्राय: अभाव होता है। अत: जो कुछ पढ़ते हैं, उसे वे व्यवहार में नहीं लाते। वे जो शिक्षा पाते हैं, वह सब उनके व्यवहारिक जीवन में प्राय: प्रतीत नहीं होती, इसका मुख्य कारण यही है कि आज के विद्यार्थियों को ब्रह्मचर्य की कीमत नहीं समझायी जाती। ऐसे पढ़े-लिखे लोगों से समाज चल तो सकता है, परन्तु दुश्चरित्र लोगों से समाज कायम नहीं रह सकता। वह शक्ति ब्रह्मचर्य ही है जिससे मनुष्य का शरीर मन, मस्तिष्क सुदृढ़ बनता है और इसके कारण अपने कर्त्तव्य-पालन के योग्य बन सकता है। गुरुकुल के आचार्यों का एकमात्र यही उद्देश्य है कि उनके ब्रह्मचारी मानसिक दृष्टि से इतने सुदृढ़ बन जाते हैं कि वे जो कुछ पढ़ते हैं, उसे भली-भांति अपने जीवन में धारण करते हैं। इस प्रकार गुरुकुल का ब्रह्मचारी राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत होता हुआ, समाज में एक ऊंचा आदर्श स्थापित करता है। इसी के लिए गुरुकुल के आचार्य निरन्तर प्रयासरत् रहते हैं।

श्रद्धा के प्रकाशन पर मैं प्रधान सम्पादक डॉ० योगेश शास्त्री एवं सम्पादक मण्डल के सभी साथियों को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं धन्यवाद देता हूँ, तथा सम्पादन कार्य में सहयोगी छात्रों को भी शुभाशीर्ष प्रदान करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ।

( डा० विजेन्द्र शास्त्री )

## सार्वदेशिक एवं आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारीगण

आचार्य बलदेव जी
प्रधान सार्वदेशिक सभा

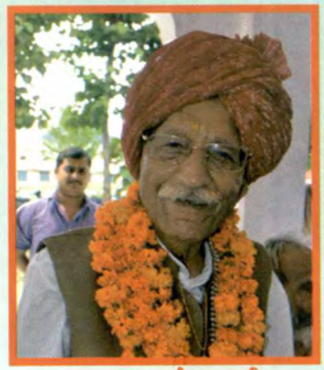

महाशय धर्मपाल जी
प्रधान आर्य विद्या सभा, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

आचार्य विजयपाल जी
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा

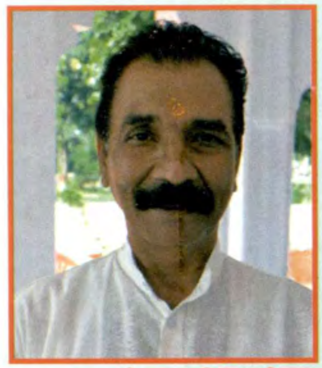

ब्रह्मचारी राज सिंह जी
प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

श्री विनय आर्य
महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

श्री धर्मपाल आर्य
कोषाध्यक्ष आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

# गुरुकुल कांगड़ी के अधिकारीगण

डॉ0 रामप्रकाश जी
कुलाधिपति

डॉ0 सुरेन्द्र कुमार जी
कुलपति

प्रो0 ओमकुमार आर्य
मंत्री

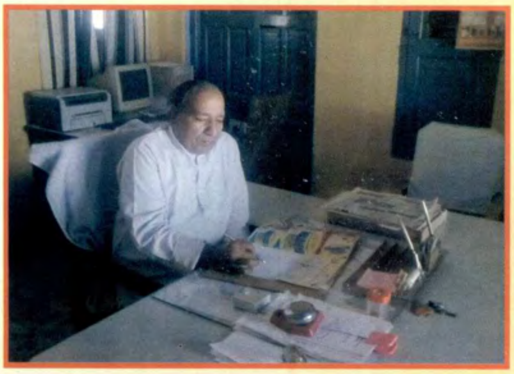

आचार्य यशपाल जी
मुख्याधिष्ठाता

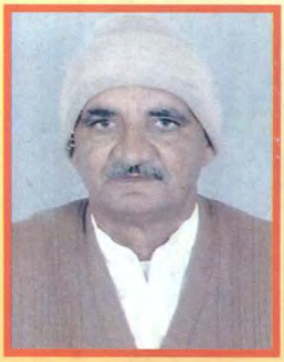

श्री मा॰ रामपाल सिंह जी
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा

श्री जयप्रकाश विद्यालंकार
सहायक मुख्याधिष्ठाता

महाशय धर्मपाल जी एवं कुलाधिपति डॉ. रामप्रकाश जी का
स्वागत करते कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी

महाशय धर्मपाल जी एवं कुलाधिपति डॉ. रामप्रकाश जी का
स्वागत करते कुलसचिव डॉ. विनोद कुमार जी

गुरुकुल के श्रद्धानंद सदन के छात्र शोभा यात्रा में पद यात्रा की मुद्रा में

महाशय जी एवं कुलाधिपति जी का स्वागत करते
सहायक मुख्याधिष्ठाता जयप्रकाश विद्यालंकार जी

कुलाधिपति जी का स्वागत करता गुरुकुल का ब्रह्मचारी छात्र

कुलाधिपति जी एवं महाशय जी का स्वागत करते मुख्याधिष्ठाता जी

शोभा यात्रा में ओम ध्वज लेकर नेतृत्व करता ब्रह्मचारी गौरव

ब्रह्मचारियों के साथ कुलाधिपति जी, महाशय धर्मपाल जी एवं दिल्ली सभा के प्रधान ब्र० राजसिंह जी आर्य

कुलाधिपति डॉ. रामप्रकाश जी के साथ आर्य विद्या सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी एवं सहायक जी

श्रद्धानंद बलिदान पर्व २०१३ के अवसर पर कुलपताका का अरोहण करते कुलाधिपति जी, महाशय जी, कुलपति जी एवं ब्र० राजसिंह जी

कार्यक्रम स्थल की ओर जाते गुरुकुल के अधिकारीगण

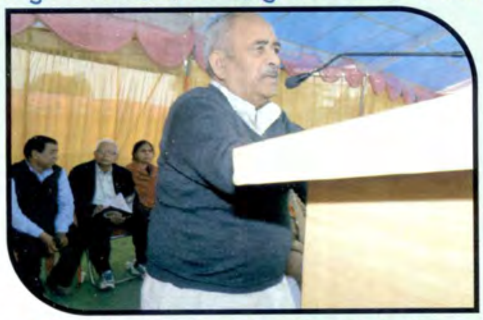

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर उद्बोधन की मुद्रा में कुलाधिपति डॉ रामप्रकाश जी

मन्त्रोच्चार, पुष्पवर्षा द्वारा स्वागत मुद्रा में ब्रह्मचारीगण

श्रद्धानन्द बलिदान पर्व पर उद्बोधन देते कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी

गुरुकुल विद्यालय में कुलपति जी का स्वागत करते हुए मुख्याधिष्ठाता जी, सहायक जी एवं अधिकारीगण

आंग्लभाषा में अभिभाषण करता गुरुकुल का छात्र ब्र० भव्य, एकादश

मंचासीन अतिथिगण त्रिभाषण प्रतियोगिता के समापन पर

अमृत वाटिका यज्ञशाला में आर्य विद्या के प्रधान महाशय धर्मपाल जी, कुलाधिपति डॉ. रामप्रकाश जी , कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी यज्ञ करते हुए

अतिथियों के स्वागत की प्रतीक्षा हेतु गुरुकुल के छात्र

आर्य विद्या सभा के प्रधान बनने पर महाशय जी का स्वागत

व्यायाम प्रदर्शन करते गुरुकुल के छात्र

त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागी मंचासीन अधिकारियों एवं अतिथियों के साथ

त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता में विद्यमान अभिभावकगण एवं अतिथिगण

त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता में एकाग्रचित बैठे हुए गुरुकुल के छात्र

स्वागत गीत प्रस्तुत करते गुरुकुल के ब्रह्मचारी

श्रद्धानन्द बलिदान पर्व २३ दिसम्बर २०१३ पर निकाली गयी झांकी का दृश्य

शोभा यात्रा में स्तूप बनाते गुरुकुल के ब्रह्मचारी छात्र

कुलाधिपति जी का स्वागत करते श्री विनय आर्य

श्रद्धानंद क्रिकेट प्रतियोगिता में विजयी ट्राफी देते
विधायक आदेश चौहान एवं अतिथिगण

श्रद्धानंद क्रिकेट प्रतियोगिता में मैन ऑफ द मैच देते कुलसचिव
प्रो.विनोद कुमार शर्मा

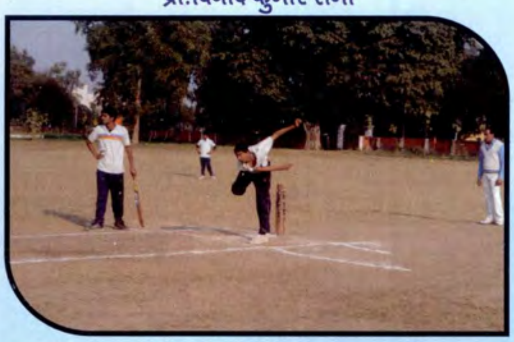

श्रद्धानंद क्रिकेट प्रतियोगिता के फाइनल मैच का मनोहारी दृश्य

त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता में उद्बोधन की मुद्रा में अतिथिगण

गुरुकुल के ब्रह्मचारी छात्रों द्वारा विभिन्न स्पर्धाओं में जीते गये पदक एवं शील्ड आदि

ब्रह्मचर्याश्रम (छात्रावास)

कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी के साथ मुख्याधिष्ठाता जी एवं सहायक जी

उपनयन संस्कार पर अमृत वाटिका यज्ञशाला में यज्ञ करते अधिकारीगण

नवप्रविष्ट ब्रह्मचारियों को उपनीत करते मंचासीन
विद्वत्गण एवं अतिथिगण

कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी को रक्षा सूत्र
बांधते हुए गुरुकुल का ब्रह्मचारी छात्र-अभिषेक नवम ब

गुरुकुल आगमन पर महाशय धर्मपाल जी का स्वागत

अंग्रेजी भाषण की मुद्रा में ब्रह्मचारी वरूण

पूर्व जिलाशिक्षा अधिकारी का सत्रारंभ २०१३-१४ पर
यज्ञ में स्वागत करते अधिकारीगण

हिन्दी भाषण प्रस्तुत करती कु० ऋचा आर्या बीएमडीएवी सुपुत्री डॉ० विजेन्द्र शास्त्री

संस्कृत भाषण की मुद्रा में ब्रह्मचारी रूस्तम नवम् ब

हिन्दी भाषाण प्रस्तुत करता ब्र. अलोक-दशम

संस्कृत भाषण प्रस्तुत करता ब्र० हर्ष, दशम

गुरुकुल का बैण्ड शोभायात्रा का नेतृत्व करते हुए

त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता का उदघाटन करते पूर्व आचार्य एवं उपकुलपति प्रो. वेदप्रकाश जी शास्त्री, मुख्याधिष्ठाता आ० यशपाल जी एवं सहायक जी

मुख्याधिष्ठाता आचार्य यशपाल जी का स्वागत करते सहायक जी

हिन्दी भाषण प्रतियोगिता के निर्णायक डॉ. मोहर सिंह मीणा का स्वागत

संस्कृत भाषण प्रतियोगिता निर्णायक डॉ० विजयालक्ष्मी जी का स्वागत

आंग्ल भाषा भाषण प्रतियोगिता के निर्णायक प्रो. वी.के. सिंह जी का स्वागत

गुरुकुल के पूर्व आचार्य एवं उपकुलपति प्रो. वेदप्रकाश शास्त्री जी का सम्मान करते सहायक जी

स्वागतगान प्रस्तुत करते ब्र०. विनीत, आलोक, योगेश, नीतिश, एवं अभिषेक आदि

त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता के संयोजक डॉ. योगेश शास्त्री संचालन मुद्रा में

## विजयादशमी क्रीड़ा प्रतियोगिताओं के पुरस्कृत छात्र एवं गुरुकुल के अधिकारीगण

## श्री दिलबाग सिंह एवं श्री राजबहादुर सिंह जी के सेवानिवृत्ति के पल

# विजयादशमी क्रीड़ा प्रतियोगिताओं के समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण के यादगार क्षण

# विजयादशमी क्रीड़ा प्रतियोगिताओं के पुरस्कृत छात्र, सहायक जी एवं गुरुजनों के साथ

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान पर्व, दयानन्द जयंती एवं 23 मार्च 2014 (शहीद भगत सिंह के बलिदान पर्व)
के शुभअवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा श्री अशोक कुमार आर्य के
निदेशन में स्वनिर्मित चित्रों द्वारा दिया गया संदेश....

ब्र0 आकाश, कक्षा - अष्टम

ब्र0 लक्ष्मण, कक्षा - षष्ठ

ब्र0 हर्षित, कक्षा - पंचम

ब्र0 चेतन, कक्षा - अष्टम

ब्र0 कमल कक्षा - षष्ठ

ब्र0 निशांत, कक्षा- सप्तम एवं पंकज, कक्षा - एकादश

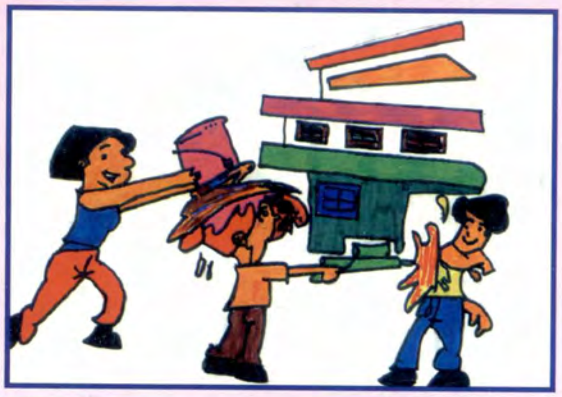

ब्र0 लक्ष्मण, कक्षा - षष्ठ

ब्र0 विमल, कक्षा - सप्तम

ब्र0 कार्तिक, कक्षा - अष्टम

ब्र0 कमल, कक्षा - षष्ठ

ब्र0 हर्षित, पिंकू व निशांत, कक्षा - सप्तम

ब्र0 हर्ष सिंह, कक्षा - षष्ठ

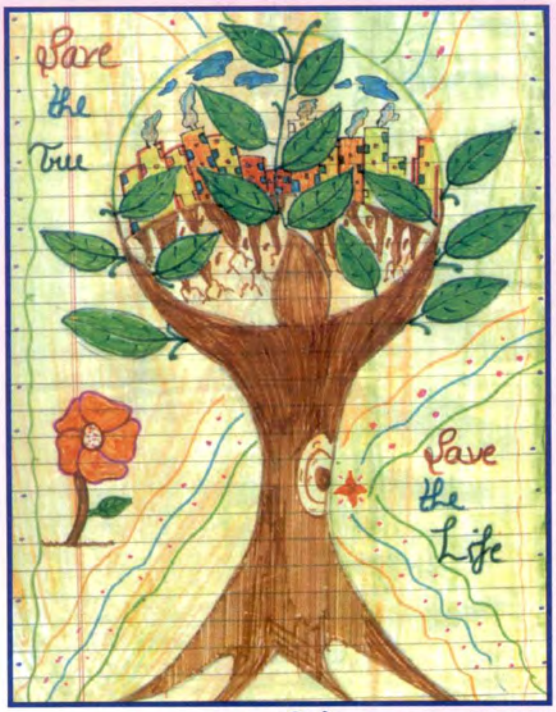


ब्र0 अभिषेक, कक्षा - नवम ए

ब्र0 आदित्य, कक्षा - तृतीय

ब्र0 हर्ष, कक्षा - नवम ए

ब्र0 पीयूष, कक्षा - पंचम

ब्र0 आकाश, कक्षा - अष्टम

ब्र0 राघव, कक्षा - सप्तम

ब्र0 शिवकुमार, कक्षा - सप्तम

ब्र0 कृपाशंकर एवं राघव, कक्षा - सप्तम

ब्र0 दुष्यन्त एवं कार्तिक, कक्षा - अष्टम

# अनुक्रमणिका


| क्र.सं. | विषय | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|
| 1. | सम्पादकीयम | 4-7 |
| 2. | श्रद्धासूक्त | 8 |
| 3. | कुलगीत | 8 |
| 4. | श्रद्धेय श्रद्धानन्द सप्तकम् | 9 |
| 5. | दयानन्द-स्तोत्रम् | 10 |
| 6. | गुरुकुलोद्देश्यानि | 10 |
| 7. | गुरुकुल के बढ़ते कदम | 11-13 |
| 8. | वार्षिक परीक्षा परिणाम (सत्र-2012-13) | 14-15 |
| 9. | गुरुकुल के अधिकारी, प्राध्यापक वर्ग व कर्मचारीगण | 16-18 |
| 10. | संस्कृत भाषा | 19-28 |
| 11. | हिन्दी भाषा | 29-62 |
| 12. | आंग्ल भाषा (अंग्रेजी) | 63-73 |
| 13. | प्राध्यापकों की कलम से | 74-90 |
| 14. | विद्यालय प्रगति विवरण | 91-98 |
| 15. | घोष बैण्ड | 99 |
| 16. | दानदाताओं की सूची | 100-104 |
| 17. | कुल वन्दना | 104 |
| 18. | समाचार पत्रों के दर्पण में... | 105 |

# सम्पादकीयम्

भारत के भविष्य के निर्माण का संकल्प अपने हृदय में संकल्पित करने वाले महान् आचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के सार्थक शिष्य अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा संस्थापित गुरुकुल कांगड़ी का स्वर्णिम इतिवृत्त एवं गौरव गाथा का उद्गान अपने स्थापना काल से ही प्राच्य एवं अर्वाच्य विद्याओं के अध्ययन-अध्यापन एवं उच्चस्तरीय अनुसंधान एवं प्रकाशन के केन्द्र के रुप में रहा है। मानव निर्माण एवं विश्वकल्याण के केन्द्र रुप में गुरुकुल की स्थापना 4 मार्च 1902 को भगवती भागीरथी के पावन तट पर प्राचीन भारतीय आदर्शों एवं जीवन मूल्यों को साकार रूप प्रदान करने के लिए गुरुकुलीय परम्परा के पुनरावर्तन के रुप में हुई थी। इन महापुरुषों का यह दृढ़ विश्वास था कि वेद-विद्या के प्रचार-प्रसार और उन्नयन से ही देश का निर्माण होगा, जब तक वेद में छिपे हुए रहस्यों को संसार के समक्ष नहीं रखा जायेगा, तब तक अविद्या अन्धकार दूर नहीं होगा। वेद भाष्यकार एवं आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के तृतीय नियम में स्पष्ट घोषणा की–**वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।** अपने आचार्य के प्रेरणा-स्रोत इन हृदया-पल्लवित विचारों को जानकर गुरुकुल के स्नातकों ने वेद विषयक अनेक उत्तमोत्तम ग्रन्थों का निर्माण किया है। आचार्य अभयदेव विरचित वैदिक विनय एवं आचार्य रामनाथ वेदालंकार प्रणीत वेदमञ्जरी एवं सामवेद भाष्य आदि अनुपम ग्रन्थों को पढ़कर सभी सुपथगामी बनकर आनन्द विभोर हो जाते हैं।

इसी मन्तव्य को दृष्टिगत रखते हुए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विद्यालय-विभाग की वार्षिक पत्रिका "श्रद्धा" नाम से आपके हाथों में है। शतपथ ब्राह्मण के **''मातृमानपितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद''** के अनुसार बालक का तीन गुरु माता, पिता और आचार्य होते हैं। माता-पिता और आचार्य के प्रति बालक की श्रद्धा ही उनके जीवन में आयु, विद्या, यश और बल की वृद्धि का संचार करती है।

**अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।**
**चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्॥**

श्रद्धापूर्वक बालक आचार्य के चरणों में बैठकर ज्ञान प्राप्ति करता है, तो वह श्रद्धा की अग्नि में स्वयं को समिधा बनाकर उस ज्ञानाग्नि में तपकर कुन्दन बन जाता है, क्योंकि–

**श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।**
**श्रद्धां भगस्य मूर्ध्नि वचसा वेदयामसि॥**

इस वेदवाक्य के अनुसार श्रद्धा सत्य में स्थित है, और हृदय में स्थित सच्ची श्रद्धा ही ईश्वर मिलन अर्थात् मोक्ष के मार्ग को प्रशस्त किया करती है।

जिस दयालु गुरुवर के सम्मुख जिज्ञासु मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के तर्कयुक्त प्रश्न, सत्यास्थित श्रद्धा की वेदी पर आकर मौन हो गये। श्रद्धा की सत्यता ने हृदयाकाश में वह अग्नि प्रज्वलित की, कि भयंकर जंगल में भगवती भागीरथी के तट पर हिमालय पर्वतमाला की

उपत्यका में भी ईश्वरविश्वासी कुलपिता ने वेद मन्त्रोच्चार की पवित्र ध्वनि को सत्कृत कर दिया। यह श्रद्धा का ही प्रतिफल था कि उन्होंने दिल्ली के ऐतिहासिक चांदनी चौक में अंग्रेजों की संगीनों के सामने सीना तानकर कहा था कि **हिम्मत हो तो चला दो गोली संन्यासी का सीना खुला हुआ है।** इस श्रद्धावनत वाक्य से वे बलिदान की वेदी पर आहूत होकर अमर हुतात्मा बनकर मृत्युञ्जय बन गये। वास्तव में श्रद्धा, आत्मसंयमिता एवं विश्वास की वह अग्नि है, जो मानवीयता को सबलता एवं सक्षमता प्रदान कर, भय और द्वन्द्वों को समाप्त कर देती है।

मनुष्य हृदय में स्थित श्रद्धा को प्रेरणा बनाकर जब शुभ संकल्प को धारण कर लेता है, तो परमात्मा भी उस पवित्र संकल्प को पूर्ण करता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी की भावना को जानकर गुरुकुलीय परम्परा के उन्नयन की संकल्प रुपी अग्नि को पूर्ण करने हेतु नजीबाबाद निवासी **चौ. अमन सिंह** जी ने स्वयं को साधन रुप में समर्पित कर दिया और उस ज्ञानाग्नि के संकल्प से यह ज्ञान का मन्दिर एकान्त-वन में पर्वतमाला की उपत्यका में स्थित गुरुकुल कांगड़ी दिनों-दिन उन्नति को प्राप्त कर रहा है। आज कोटिशः जनमानस इस पुण्यभूमि के दर्शन कर गंगा के पावनमयी तट पर आर्यों के इस उपवन को देखकर नैसर्गिक आनन्दानुभूति का अनुभव करते हैं। कुलमाता का अखण्ड सुरभित गौरव जननी-जन्मभूमि के रक्षणार्थ-उत्साह, वीरता एवं प्रसन्नता का प्रस्फुटन कर गुरुकुलीय महत्ता को प्रतिपादित करता है।

गुरुकुल त्याग, तपस्या और साधना की तपस्थली हैं, और इस ज्ञान की अग्नि में स्वजीवन को तपाकर अनेकों प्रतिभावान स्नातकों ने कुलमाता की गौरवगाथा को दिग्-दिगन्त तथा विद्वत्मण्डली के मध्य में गौरवान्वित किया है। **इन प्रतिभाशाली यशस्वी स्नातकों में पं. बुद्धदेव जी विद्यामार्तण्ड, पं. हरिश्चन्द्र, पं. इन्द्र जी विद्यावाचस्पति, (दोनों क्रमशः स्वामी श्रद्धानन्द के सुपुत्र) आचार्य अभयदेव जी, पं. धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड, आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति, डॉ. रामनाथ जी वेदालंकार, आचार्य रामप्रसाद जी वेदालंकार, डॉ. जयदेव जी वेदालंकार (जिन्हें इस वर्ष राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त हुआ है), पं. सत्यकाम जी विद्यालंकार, पं. जनमेजय जी विद्यालंकार तथा पं. सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार आदि वाग्मि विद्वान् प्रमुख हैं।**

स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी गुरुकुल के स्नातकों का अग्रणी योगदान रहा है। हैदराबाद सत्याग्रह, पंजाब प्रान्त के टिहरी सत्याग्रह और गौरक्षा सत्याग्रह में गुरुकुल के शिक्षकों एवं ब्रह्मचारियों की अग्रणी भूमिका रही है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा दक्षिण अफ्रीका में चलाये जा रहे आन्दोलन में गुरुकुल के शिक्षकों एवं ब्रह्मचारियों द्वारा बांध पर कार्य करके प्राप्त हुए धन को दक्षिण अफ्रीका महात्मा जी के पास भेजना गुरुकुल की राष्ट्रभक्ति के सार्वभौमिक स्वरुप का प्राञ्जल उदाहरण है।

वेद, साहित्य, व्याकरण, आयुर्वेद, योग, पत्रकारिता, राजनीति, समाजसेवा एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों के रक्षण एवं संवर्द्धन आदि में गुरुकुल के स्नातकों की पहचान ने राष्ट्र को वेद के मार्ग पर चलकर वैदिक ध्वजा को सम्पूर्ण विश्व में फहराने का अप्रतिम संदेश दिया है।

आज जहाँ समस्त विश्व विज्ञान के चर्मोत्कर्ष पर है। वहाँ उद्योगों, शिल्पों, संचार-साधनों,

भवनों, राजमार्गों और **''टका धर्मः, टका कर्मः, टका हि परमं पदम्''** की संकल्पना तो साकार हो रही है, परन्तु मानवता निर्जीव सी प्रतीत होती है। शिक्षा के नित नवीन संसाधन दिखाई देते हैं। विद्यालयों में शिक्षकों और छात्रों की संख्या दिनों दन बढ़ रही है, परन्तु निराशा, हताशा, कुण्ठा और अवसाद ने जैसे युवा पीढ़ी को पथभ्रष्ट सा साकार दिया है। धनाभाव एवं साधनोभाव में जीवनयापन करने वाला वर्ग-अपराध, हिंसा, द्वेष, नशाखोरी, आतंकवाद, भ्रष्टाचार में संलिप्त होकर मार्ग से भटक रहा है। प्रतिदिन मर्मान्तक एवं दुःखान्तक दृश्य और समाचार देखने और सुनने को मिलते हैं। भौतिकवाद की आंधी ने मानव को संस्कार, सभ्यता, संस्कृति, ज्ञान एवं बौद्धिक मान्यताओं और मूल परम्पराओं से पृथक् कर दिया है। आज सम्पूर्ण विश्व अग्नि के मुख में जाता दिखता है, चारों ओर भय, आशंका और अशान्ति का वातावरण -व्याप्त है।

राग, द्वेष, हिंसा, अत्याचार, अनाचार, दुराचरण, जातिवाद, प्रान्तवाद, क्षेत्रवाद, स्वार्थवाद एवं आतंकता के विषधर मानवीय प्रेम एवं संवेदनाओं को निगल रहे हैं। प्रेम, दया, करूणा, सहृदयता, मित्रता, सहिष्णुता एवं अहिंसा की सन्देशवाहक वैदिक संस्कृति **वसुधैव कुटुम्बकम्** और **कृण्वन्तो विश्वमार्यम** की उद्घोषक आर्य-संस्कृति का प्रवाह क्षीण सा हो रहा है। अमर शहीदों और महापुरुषों पर मिथ्या आरोप लगाने वाले, तथाकथित बुद्धिजीवियों ने भारता माता के स्वर्णिम इतिवृत्त को दूषित कर युवापीढ़ी को राष्ट्रगौरव एवं आत्म गौरव के पथ से पथभ्रष्ट करने का षड्यन्त्र चला रखा है।

चारों वेद, उपनिषद्, आरण्यक, ब्राह्मण, वेदांग, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष विषयक ग्रन्थ तथा सांख्य, योग, वैशेषिक, न्याय, वेदान्त, मीमांसा, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार-विधि, सत्यार्थ प्रकाश, पंचतन्त्र, नीतिशतक एवं संस्कृत की रससिक्त काव्य रचनाएँ और उनका वैभव हमारी ही नहीं अपितु समस्त विश्व की समस्याओं का समाधान और ज्ञान की अनन्त रश्मियां इन सद्ग्रन्थों में विद्यमान है। चारों वेद ज्ञान की अक्षय निधि है। इसीलिए युगप्रवर्तक, स्वतन्त्रता के सूत्रधार महर्षि दयानन्द ने मानव मात्र को वेदों की ओर लौटने का अमर संदेश दिया है, क्योंकि वेदों में सार्वकालिक और सार्वभौमिक सत्य निहित है। वैदिक ज्ञान और विज्ञान में समस्त समस्याओं का समाधान सन्निहित है। वेदों का नियमित स्वाध्याय एवं आचरण ही मनुष्यमात्र के कष्टों का निवारण करने में सक्षम है।

आज गुरुकुल अपनी 113 वर्षों की यात्रा को पूर्ण कर रहा है। अंग्रेज राज्य में भी गुरुकुल ने अपने गौरव को सदैव अक्षुण्ण रखा है। वर्तमान में गुरुकुल का संचालन आर्य विद्या सभा के यशस्वी प्रधान दानशिरोमणि, महाशय धर्मपाल जी, मन्त्री प्रो. ओम कुमार जी, कोषाध्यक्ष श्री धर्मपाल आर्य जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य राजसिंहजी, महामंत्री श्री विनय आर्य जी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान आचार्य श्री विजयपाल जी, मंत्री जी रामपाल जी, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. रामप्रकाश जी, यशस्वी कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी, गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता आचार्य यशपाल जी, आर्ष

साहित्य प्रचार ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री धर्मपाल आर्य एवं सहायक मुख्याधिष्ठाता, श्री जयप्रकाश विद्यालंकार जी के मार्गदर्शन में हो रहा है। भारत के भविष्य के निर्माण के संकल्प से संचालित गुरुकुल कांगड़ी की वार्षिक पत्रिका **'श्रद्धा'** आपके हाथों में है। जिसमें गुरुकुल के छात्रों ने अपनी योग्यता एवं क्षमता से अपने भावों को उद्भाषित किया है। गुरुकुल कांगड़ी में अध्ययनरत ब्रह्मचारियों की लेखन प्रतिभा की प्राञ्जलता हेतु **श्रद्धा** पत्रिका का प्रकाशन आर्य विद्या सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी, कुलाधिपति डॉ० रामप्रकाश जी, मनुस्मृति के भाष्यकार प्रसिद्ध वैदिक मनीषी माननीय कुलपति डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी, मुख्याधिष्ठाता आचार्य यशपाल जी एवं सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री जयप्रकाश विद्यालंकार जी की प्रेरणा से हो रहा है। गुरुकुल के मुख्याध्यापक डॉ०विजेन्द्र जी शास्त्री का सहयोग एवं मार्गदर्शन भी इस कार्य की पूर्णता का साधन है। सम्पादक मण्डल के सहयोगी महानुभाव श्री प्रकाशवीर जी, श्री अशोक कुमार आर्य जी, श्री हुकम चन्द जी, श्री अश्विनी कुमार जी, श्री टीकम सिंह जी, श्री लोकेश शास्त्री जी P.T.I , विद्यालय कार्यालय से श्री नन्दकिशोर जी, श्री सत्यवीर सिंह जी, श्री राजबहादुर जी, श्री सुरेन्द्र बिष्ट जी, चौ० हरपाल सिंह जी, श्री फकीर चन्द्र जी, श्री मामराज जी, श्री राकेश मेहरा जी, श्री रतन सिंह जी, श्री रमेश कुमार जी एवं श्री मुकेश कुमार जी आदि समस्त महानुभावों एवं कर्मचारी साथियों के अतिशय सहयोग, मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से ही श्रद्धा यह रूप ले सकी है। अतः सभी सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

आश्रमाध्यक्ष श्री अमरसिंह जी, सभी अधिष्ठाताबन्धु, विद्यालय भण्डार एवं विद्यालय गऊशाला के सभी साथियों का भी हृदय से धन्यवाद है, जिनकी अतिशय प्रेरणा एवं सहयोग सदैव शक्ति प्रदान करता है। गुरुकुल में अध्ययनरत समस्त ब्रह्मचारी छात्र और सम्पादक मण्डल के छात्र भी आशीर्वाद के पात्र हैं। जिन्होंने अहर्निश परिश्रम कर अपनी श्रद्वामयी भावना का प्रस्फुटन अपने लेखों द्वारा किया है। ईश्वर से उनके अभ्युदय की मंगलकामना है

किरण प्रिटिंग प्रेस के स्वामी श्री चन्द्रकिरण सैनी जी एवं उनके प्रतिष्ठान के सहयोग के बिना यह कार्य सम्भव नही था। परमात्मा करे कि उनका प्रतिष्ठान सदैव उन्नतिशील रहे।

इस श्रद्वा पत्रिका में जो-जो उत्तम एवं ग्राह्य है, अमृत रूप है, यह सभी गुरुजनों, कर्मचारियों एवं छात्रों की साधना, तपस्या एवं प्रेम का ही परिणाम है, तथा जहाँ जो कमियां रह गयी हैं, वे सब मेरी है अथवा यों कहूँ कि मानवोचित अल्पज्ञता के कारण हैं। पुनः आप सभी सुहृज्जनों से क्षमा याचना करते हुए श्रद्वा आपके कर कमलो में सादर समर्पित है।

**गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येवप्रमादतः।**
**हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनः॥**

**विदुषांवशंवदः-**
**डॉ० योगेश शास्त्री**
(प्रधान सम्पादक)

## श्रद्धासूक्त

श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।
श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि॥१॥

प्रियं श्रद्धे ददतः प्रियं श्रद्धे दिदासतः।
प्रियं भोजेषु यज्वस्विदं म उदितं कृधिः॥२॥

यथा देवा असुरेषु श्रद्धामुग्रेषु चक्रिरे।
एवं भोजेषु यज्वस्वस्माकमुदितं कृधि॥३॥

श्रद्धां देवा यजमाना वायुगोपा उपासते।
श्रद्धां हृदय्यऽयाकूत्या श्रद्धया विन्दते वसु॥४॥

श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यन्दिनं परि।
श्रद्धां सूर्यस्य निम्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः॥५॥ (ऋग्वेद- 10/151/1-5)

## कुल-गीत

**प्राणों से हमको प्यारा 'कुल' हो सदा हमारा।**
विष देने वालों के भी, बन्धन कटाने वाले।
मुनियों का जन्म-दाता, कुल हो सदा हमारा॥1॥
कट जाय सिर न झुकना, यह मन्त्र जपने वाले।
वीरों का जन्म-दाता, कुल हो सदा हमारा॥2॥
स्वाधीन्य-दीक्षितों पर, सब कुछ बहाने वाले।
धनियों का जन्म दाता, कुल हो सदा हमारा॥3॥
निज जन्म-भूमि भारत, को क्लेश से छुड़ा कर।
गौरव बढ़ाने वाला, कुल हो सदा हमारा॥4॥
तन-मन सभी न्यौछावर, कर वेद का संदेशा।
जग में ले जाने वाला, कुल हो सदा हमारा॥5॥
हिम-शैल तुल्य ऊँचा, भागीरथी सा पावन।
भटकों का मार्गदर्शक, दुखियों का हो सहारा॥6॥
आजन्म ब्रह्मचारी, ज्योति जगा गया है।
अनुरूप पुत्र उस का कुल हो सदा हमारा॥7॥

**- श्री बुद्धदेव विद्यालंकार**

# श्रद्धेय श्रद्धानन्दसप्तकम्

अनाधृष्यो वीरः, प्रखरतरपुण्यो बहुमतः,
महाप्राणो वाग्मी, निखिलतपसां यो निधिरभूत।
दयालुर्दीनानाम्, अभिनततरो यश्च सुहृदां,
यतिः श्रद्धानन्दो विपुलगुणवृन्दो विजयते।।1।।

प्रशस्तं प्रांशुत्वं, स च बहुमतो देहविभवः,
सुदीर्घौ तौ बाहू, गतिरपि च सा केसरिसमा।
उरो व्यूढं पूज्यौ, परमरमणीयौ च चरणौ,
ऋते श्रद्धानन्दात्, क्वचिदपि न दृष्टं तदखिलम्।।2।।

प्रणेता देशस्य, प्रथमगणनीयो मतिमतां,
धुरीणो वीराणां, भयकरतमो भारतरिपोः।
महामान्दो नेता, प्रतिदिनमभूदार्यसमितेः,
नुमः श्रद्धानन्दं, तममरसमानं यतिवरम्।।3।।

यदीयाः संकल्पाः, सततमभवन् पूर्णसफलाः,
प्रसादाः कोपा वा, कथमपि न मोघाः नामभवन्।
दृढामिच्छाशक्तिं, कथयति जनो यस्य महतीं,
कृती श्रद्धानन्दो न खलु न नमस्यष्टि जगताम्।।4।।

गिरिवः सिन्धुर्वा, प्रियसुहदत्र च बलवत्,
स्तुतिव निन्दावा, धनसधनामा वातिगहना।
विधातु सन्मार्गाः, प्रविंचात्मेकं पदमपि,
यतिं श्रद्धानन्दं, क्षणमपि न शोकुः क्वचिदपि।।5।।

वनं घोरं राजा, परमविमुखः, क्वपि न धनं,
सहायो नैवासीत्, परिहसितवन्तो नयविदः।
तथाप्येकः श्रीमान्, प्रबलतरसत्त्वः स्थिरमतः,
अहो मुंशी1 रामो गुरुकुलमपूर्व व्यरचयत्।।6।।

वसन् पारेगङ्गं, कनकगिरिशूले गुरुकुले,
दधानः प्रेमाणं, तनयसमशिष्येषु विपुलम्।
तपस्वी तेजस्वी, निरवधियशस्वती विगतभीः,
गुर्मुंशीरामो विगलितविरामो विजयते।।7।।

**पं० जनमेजय विद्यालंकारः**
पूर्व संस्कृतोपाध्यायः विद्यालयविभागस्य

## दयानन्द-स्तोत्रम्

महात्मानं लोकं त्रयविदीत कीर्तिं यतिवरं,
निधानं विद्यानामखिल तपसामालयमिव।
श्रुतिनामावासं गुरुवरमिवाशेष जगतम्,
दयानन्दं वन्दे क्षितितल निलीनेन शिरसा।।1।।

अहो धन्यः कोऽयं नववयसि योऽयं गृहसुखं,
समृद्धं प्रेमाणं पितुरपि जनन्याश्च विपुलम्।
परित्यज्य प्राज्यं धननिचय पूर्णञ्च भवनम्,
अरण्यानीं याति प्रखरतर वैराग्य वशतः।।2।।

अहो पारेगङ्गं प्रमुदित विहगं धनवनं,
हिमानिभिः शीतं नगपतिममुं प्रांसुशिखरम्।
दधानः कौपीनं न खलु निदधानोऽपर पदं,
न जानीमः कोऽयं प्रविशति तपस्तपतुमभयम्।।3।।

प्रणम्यो लोकानां निधिरयमशेषस्य सहसः,
समुद्धर्तुं लोकान् धृतपरिकरोऽयं मुनिवरः।
अयं विद्धनिक प्रभवति जगच्छिक्षण विधौ।
दयानन्दोऽयं यो भुविसकल पाखण्ड दलनः।।4।।

## गुरुकुलोद्देश्यानि

लोकेतपोधनपुनर्जननं तथा स्यात्,
तेजो विहीन जनता विलयो यथा स्यात्।
सद् ब्रह्मचर्य चरण प्रसरो यथा स्यात्,
एतत्तथा गुरुकुलं विबुधा निबद्धम्।।1।।

आचार्य शिष्यजनभावनया विहीनां,
कीरोपमाज्ञजनमात्र विभूति दक्षाम्।
शिक्षां विचार्य मनसा किल दूषयित्रीम्,
एतत्तथा गुरुकुलं विबुधा निबद्धम्।।2।।

याः कारणं सकलबोधकलोदयानाम्,
आद्यो गुरु सः भगवांश्च यदीय वक्ता।
तासां कथा निगमपुण्यगिरां जगत्यां,
कर्त्तुं पुनर्गरुकुलं विबुधा निबद्धम्।।3।।

**श्री हरिश्चन्द्र विद्यालंकार**
(स्वामी श्रद्धानन्द महोदयस्य ज्येष्ठ पुत्रः)

# गुरुकुल के बढ़ते कदम

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा संस्थापित गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, हरिद्वार "**ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत**" की वेदोक्ति को चरितार्थ करने वाले प्रत्येक क्षेत्र में विश्व प्रसिद्ध कीर्तिमानों से मंडित आर्य समाज की शिक्षण संस्था के रुप में दिनोदिन प्रगति पथ पर अग्रसारित है। विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति डॉ० रामप्रकाश जी, आर्य विधानसभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी, माननीय कुलपति डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी एवं मुख्याधिष्ठाता आचार्य यशपाल जी के निर्देशन में संचालित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (विद्यालय-विभाग) के समस्त कर्मचारियों के सहयोग से जून 2011 से अब तक की कार्योन्नति-सहायक मुख्याधि ष्ठाता श्री जयप्रकाश विद्यालंकार द्वारा-

1. विद्यालय के छात्रावास ब्रह्मचर्याश्रम की गत पचास वर्षों से जर्जर छत की मरम्मत का कार्य किया गया।
2. समस्त गुरुकुल का सफेदीकरण व रंग-रोगन किया गया।
3. विद्यालयाश्रम में छात्रों हेतु दोनों उपरीतलों पर लघुसंकालयों व स्नानागारों का निर्माण कराया एवं आश्रम के दोनों ऊपरी तलों पर पानी की पक्की सीमेंन्टेड टंकी बनवाई।
4. प्रदूषण से बचने के लिए सैप्टिक टैंकों का निर्माण कराया गया।
5. अतिक्रमण व प्रदूषण दूर करने हेतु उपाय तथा प्रयास किये गये जिसके अन्तर्गत् पेड़ पौधे लगाए गये।
6. सभी फिक्स पे पर कार्यरत कर्मचारियों की 20 प्रतिशत वेतन-वृद्धि के साथ-साथ पी. एफ. कटौती की प्रक्रिया जारी की गयी।
7. गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से रूका हुआ मकानों का किराया विद्यालय को प्राप्त करया गया, बकाया के लिए प्रयासरत्।
8. वन महोत्सव पर सागौन, जामुन व यूकेलिंप्टिस के लगभग 2000 पेड़ लगवाये गये।
9. ब्रह्मचारियों को प्राकृतिक रूप से फलादि मध्यान में प्राप्त हो सकें, इसके लिए चीकू, लीची, आम, आड़ू, अमरूद, नीम्बू, जामुन, पपीता, आलू-बुखारा, कटहल, खुमानी आदि के पेड़ छात्रावास, भण्डार एवं विद्यालय परिसर में लगवाये गये।
10. विद्यालय भण्डार एवं छात्रावास में अन्धकार के निराकरण हेतु अमृत-वाटिका यज्ञशाला एवं रामदेव द्वार तक समस्त विद्यालीय प्रांगण में स्ट्रीट लाईट की व्यवस्था की गई।
11. कृषि विभाग के 1997 के पुराने ट्रैक्टर के स्थान पर नया ट्रैक्टर खरीदा गया।
12. विद्यालय में आर्थिक समस्या के निराकरण हेतु 50 वर्षों से भट्टे की 40 बीघा बंजर जमीन का समतलीकरण कराकर कृषि योग्य बनाया गया। जो गुरुकुल को रु. 2,50,000 (दो लाख पचास हजार) की औसत आय देगी। बकाया भट्टे की जमीन भी समतल करायी गई।
13. 36000 (छत्तीस हजार) ईंटों को काफी समय से लगभग 15 वर्षों से मलबे में दबी पड़ी थी एकत्र कराकर रखा जिनकी कीमत लगभग आज के रेट में रु. 1,75000 (एक लाख पच्चहत्तर हजार) बनती है।

14. विद्यालय प्रांगण की सड़क जो कच्ची थी, उसे विद्यालय के मुख्य अमन द्वार से अमृत वाटिका यज्ञशाला के चौराहे तक आर.सी.सी. की बनवाई गयी जिसकी लागत लगभग रु.................... है।

15. छोटा व बड़ा परिवार एवं छात्रावास में 30 वर्षों से जलापूर्ति हेतु पानी की समस्या को देखते हुए सबमर्सिबल पम्प का नया बोर कराकर चालू किया गया।

16. गुरुकुल कांगड़ी गौशाला में पानी की समस्या को देखते हुए जलापूर्ति हेतु सबमर्सिबल पम्प का नया बोर कराकर चालू किया गया।

17. गुरुकुल कांगड़ी की विद्युत समस्या को देखते हुए 100 के०वी० जनरेटर व उसके लिए कमरे की व्यवस्था पूर्ण की।

18. विद्यालय के मेन द्वार को नये स्वरूप में बनाकर उसका नया नाम "अमन द्वार" का निर्माण कराया।

19. विद्यालय भण्डार का दक्षिणी भाग जीर्णोद्धार करके उसका नव निर्माण कराया गया। बकाया विद्यालय भण्डार के मध्य भाग व स्टोर का जीर्णोद्धार कराया जा रहा है।

20. गुरुकुल के गेस्ट हाउस (अतिथि गृह) के उपरीतल का निर्माण कराया गया।

21. यज्ञशाला चौक से रामदेव द्वार मेन हाइवे तक सड़क का निर्माण कराया जाएगा।

22. एम.डी.एच. ट्रस्ट द्वारा 10,000 (sago) दस कमरों 20x25 का बरामदे सहित निर्माण कराया गया।

23. संग्रहालय के पीछे व अमृत वाटिका के पास 15 बीघे जमीन लेवल करके नर्सरी स्थापित की गई थी और 15 हजार ईंटें निकाली गईं जिनकी कीमत 75,000 है।

24. भट्टे के पास बकाया 25 बीघे जमीन को लेवल करके गेहूँ उत्पादन किया गया।

25. भट्टे पर सबमर्सिबल ट्यूवेल लगाया जाएगा।

26. आवारा पशुओं से कृषि सुरक्षा हेतु दीवार का निर्माण कराया गया।

27. गौशाला व भण्डार से आश्रम तक R.C.C. सड़क का निर्माण कराया जायेगा।

28. छात्रों का पाठ्यक्रम गुरुकुल की वेबसाइट www.gurukul kangri vidyalaya.org पर डाला गया तथा समस्त विद्यालय का विवरण भी। आगामी सत्र से कक्षा 9 से 12 तक अंग्रेजी माध्यम व संस्कृत अनिवार्य विषय के रूप में होगी।

29. गुरुकुल के छात्रों का I.I.T. खडकपुर, मिलट्री व एयरफोर्स में चयन।

30. उत्तराखण्ड राज्य योग प्रतियोगिता में छात्रों का गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर चयन। बालीवाल, फुटवाल में राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर विजय प्राप्त की।

31. छात्रों को पाठ्य पुस्तकों को समय पर जौलाई मास में आपूर्ति की एवं सुव्यवस्थित सत्र प्रारम्भ किया गया।

32. छात्रों को Extra कक्षाऐं लगाई जा रही है। जिससे छात्रों को व्यक्तिगत एवं सर्वांगीण विकास हो।

33. विद्यालय के भण्डार में छोटे ब्रहमचारियों के भोजन कक्ष का जीर्णोद्धार एवं ऊपर छत पर भण्डार के कर्मचारियों हेतु दो नवीन कक्षों का निर्माण कार्य कराया गया।

34. **विशेष** -

1. तैराकी में ब्रह्मचारी राधेश्याम का राज्यस्तर पर चयन।
2. फुटबाल में राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर छात्रों का चयन।
3. बॉलीवाल में राज्य स्तर पर छात्रों का चयन।
4. योग प्रतियोगिता में राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर छात्रों का चयन।
5. अन्तर्राष्ट्रिय योग महोत्सव में ब्रह्मचारी सर्वजीत कक्षा नवम् 'ब' का तृतीय स्थान पर चयन।

## भावी रूपरेखा

आगामी सत्रों में विद्यालय को C.B.S.E. पैटर्न की मान्यता लेकर गुरुकुलीय पद्धति से कायम रखते हुए योगा, धर्मशिक्षा, संस्कृत व अंग्रेजी को अनिवार्य विषय के रूप में ही रखा जाएगा। दिन प्रतिदिन अग्रसर उन्नति के कदम रखते हुए गुरुकुल में, घुडसवारी, तीरंदाजी व अन्य स्पर्धा के खेलों की व्यवस्था भी की जाएगी। जबकि अन्य सभी स्पर्धा खेल कायम है। दिन प्रतिदिन बढ़ती महंगाई और नि:शुल्क शिक्षा को देते हुए धन अभाव की समस्या, हर समय रहती है, क्योंकि किसी भी प्रकार का अनुदान व सहायता गुरुकुल को प्राप्त नहीं होती। अपने आप आय स्रोतो से (स्वपोषित संस्था के रूप में) व्यवस्था चलानी होती है। अत: बढ़ते कदम और गुरुकुल की बढ़ती ब्रह्मचारियों की संख्या को देखते हुए छात्रावास कक्ष व अन्य भवनों की भी आवश्यकता है।

अत: सभी सामाजिक, राजनीतिक व व्यवसायिक संस्थाओं व दानवीरों से करबद्ध निवेदन आर्थिक सहायता के लिए अपेक्षित है।

**जयप्रकाश विद्यालंकार**
(सहायक मुख्याधिष्ठाता)

# वार्षिक परीक्षा परिणाम सत्र 2012-13
## बोर्ड-परीक्षा परिणाम

विद्याधिकारी (हाईस्कूल) एवं विद्याविनोद (इण्टरमीडिएट) कक्षाओं का सत्र 2012-13 का बोर्ड-परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा है। आर्य विद्या सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी, कुलाधिपति डॉ. रामप्रकाश जी, कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार, आर्य विद्या सभा के मंत्री प्रो॰ ओमकुमार जी, कोषाध्यक्ष श्री धर्मपाल जी आर्य, मुख्याधिष्ठाता आचार्य यशपाल जी, एवं सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री जयप्रकाश जी विद्यालंकार के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में संचालित गुरुकुल कांगडी विद्यालय के ब्रह्मचारी छात्रों ने बोर्ड परीक्षाओं में शत-प्रतिशत सफलता प्राप्त कर गुरुकुल एवं कुलमाता के गौरव को गौरवान्वित किया है।

### विद्याधिकारी प्रथम खण्ड ( कक्षा IX )

| | ब्र0 का नाम | पितृनाम | प्राप्तांक/पूर्णांक | स्थान |
|---|---|---|---|---|
| 1. | आलोक | श्री अनन्तराम भट्ट | 504/650 | प्रथम स्थान |
| 2. | मेहर अमित | श्री अशोक कुमार वर्मा | 501/650 | द्वितीय स्थान |
| 3. | हर्ष कपूर | श्री अनिल कपूर | 486/650 | तृतीय स्थान |

### विद्याधिकारी द्वितीय खण्ड ( कक्षा X )

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | रविन्द्र | श्री करतार सिंह | 462/1300 | प्रथम स्थान |
| 2. | आर्यन आर्य | श्री धर्मवीर सिंह | 421/1300 | द्वितीय स्थान |
| 3. | महेश पंवार | श्री मोहन सिंह पंवार | 413/1300 | तृतीय स्थान |

### विद्याविनोद प्रथम खण्ड ( कक्षा XI )

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | हिमांशु | श्री संजय गुप्ता | 601/825 | प्रथम स्थान |
| 2. | करण | श्री प्रवेश कुलश्रेष्ठ | 592/825 | द्वितीय स्थान |
| 3. | राहुल कुमार | श्री वेदपाल सिंह | 549/825 | तृतीय स्थान |

### विद्याविनोद द्वितीय खण्ड ( कक्षा XII )

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | रविसूदन | श्री दिनेश कुमार | 643/825 | प्रथम स्थान |
| 2. | सचिन थपलियाल | श्री रामचन्द्र थपलियाल | 634/825 | द्वितीय स्थान |
| 3. | पुष्पेन्द्र आर्य | श्री केशरी लाल मौर्य | 627/825 | तृतीय स्थान |

## गृह-परीक्षा-परिणाम सत्र- 2012-13

कक्षा प्रथम से अष्टम् तक का वार्षिक परीक्षाओं का परीणाम भी शत प्रतिशत रहा है। कक्षाशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले ब्रह्मचारी छात्र निम्न हैं-

### कक्षा प्रथम ( Ist )

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | ब्र० सागर | श्री महीपाल | 832/1100 | प्रथम स्थान |
| 2. | ब्र० विशाल | श्री जयवीर | 723/1100 | द्वितीय स्थान |

## कक्षा द्वितीय ( IInd )

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | ब्र० शिवा | श्री ताराचन्द | 894/1100 | प्रथम स्थान |
| 2. | ब्र० दिव्या | श्री पवन | 830/1100 | द्वितीय स्थान |
| 3. | ब्र० विकास | श्री नरेश | 819/1100 | तृतीय स्थान |

## कक्षा तृतीय ( IIIrd )

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | ब्र० सुमित | श्री देवेंन्द्र कुमार | 1166/1100 | प्रथम स्थान |
| 2. | ब्र० प्रभव | श्री नरेश साहनी | 1073/1100 | द्वितीय स्थान |
| 3. | ब्र० अनुराग | श्री नरेन्द्र कुमार | 1051/1200 | तृतीय स्थान |

## कक्षा चतुर्थ ( IVth )

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | ब्र० रितेश | श्री रामसुन्दर | 1227/1400 | प्रथम स्थान |
| 2. | ब्र० तरुण | श्री बीरबल सिंह | 1164/1400 | द्वितीय स्थान |
| 3. | ब्र० बब्बन | श्री बाबूलाल | 963/1400 | तृतीय स्थान |

## कक्षा पंचम ( Vth )

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | ब्र० सिद्धार्थ | श्रीमती संजू | 1061/1400 | प्रथम स्थान |
| 2. | ब्र० उमंग | श्री लक्ष्मी | 1051/1400 | द्वितीय स्थान |
| 3. | ब्र० लक्ष्मण | श्री बाबूलाल | 1002/1400 | तृतीय स्थान |

## कक्षा षष्ठ ( VIth )

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | ब्र० लवली | श्री सतीश | 1314/1700 | प्रथम स्थान |
| 2. | ब्र० निशान्त | श्री सुरेन्द्र सिंह | 1284/1700 | द्वितीय स्थान |
| 3. | ब्र० गौरव | श्री राजकुमार | 1190/1700 | तृतीय स्थान |

## कक्षा सप्तम् ( VIIth )

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | ब्र०अमित कुमार | श्री राजेन्द्र प्रसाद | 1260/1700 | प्रथम स्थान |
| 2. | ब्र०आनन्द त्रिपाठी | श्री विजय कुमार त्रिपाठी | 1244/1700 | द्वितीय स्थान |
| 3. | देवेन्द्र कुमार पाल | श्री भोलू सिंह | 1227/1700 | तृतीय स्थान |

## कक्षा अष्टम् ( VIIIth )

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | ब्र०अभिषेक | श्री अनिल कपूर | 1367/1700 | प्रथम स्थान |
| 2. | ब्र०रुस्तम चौधरी | श्री धर्मवीर सिंह | 1293/1700 | द्वितीय स्थान |
| 3. | ब्र० आनन्द | श्री विजेन्द्र कुमार | 1290/1700 | तृतीय स्थान |

**डॉ. विजेन्द्र शास्त्री**
**( का० मुख्याध्यापक )**

# गुरुकुल के मान्य अधिकारी, प्राध्यापकवर्ग एवं कर्मचारीगण

**प्रशासनिक वर्गः-**

1. महाशय धर्मपाल जी (प्रधान, आर्य विद्यासभा गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार)
2. डॉ॰ रामप्रकाश जी (कुलाधिपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)
3. डॉ॰ सुरेन्द्र कुमार जी (कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)
4. श्री आचार्य यशपालजी (सहायक मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार)
5. श्री जयप्रकाश जी विद्यालंकार(सहायक मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार)

**(क) शिक्षक वर्गः-**

1. श्री डॉ0 विजेन्द्र शास्त्री
   का॰ मुख्याध्यापक
2. श्री अशोक कुमार आर्य (अध्यापक)
3. श्री जितेन्द्र कुमार वर्मा (अध्यापक)
4. श्री डॉ॰ योगेश कुमार शास्त्री (अध्यापक)
5. श्री हुकमचन्द (अध्यापक)
6. श्री प्रकाशवीर (अध्यापक)
7. श्री टीकम सिंह (अध्यापक)
8. श्री रामदयाल सिंह (अध्यापक)
9. श्री अश्विनी कुमार (अध्यापक)
10. श्री रणवीर सिंह (अध्यापक)
11. श्री वेदपाल आर्य (अध्यापक)
12. श्री लोकेश कुमार (व्यायाम शिक्षक)
13. श्री विपुल सिंघल (अंशकालीन अध्यापक)
14. श्री वीरेन्द्र कुमार दीक्षित (अंशकालीन अध्यापक)

**(ख) कार्यालय-**

1. श्री नन्दकिशोर मिश्रा (लिपिक)
2. श्री सत्यवीर सिंह (लिपिक)
3. श्री फकीर चन्द (लिपिक)
4. श्री राजबहादुर सिंह (अंशकालीन लिपिक)
5. श्री राकेश कुमार मेहरा (अंशकालीन लिपिक)

6. श्री सुरेन्द्र सिंह बिष्ट (अंशकालीन लिपिक)
7. श्री रतन सिंह (विद्युत विभाग)
8. श्री रमेश कुमार (सेवक)
9. श्री अनिल कुमार (माली)
10. श्री सूर्यप्रकाश (सेवक विद्युत)
11. श्री पवन कुमार (सेवक/ड्राइवर)
12. श्रीमती विमला (सफाई कर्मचारी)
13. श्री रविकान्त (सुरक्षा निरीक्षक अंश.)

**(ग) कृषि फार्म-**

1. श्री हरपाल सिंह (कृषि निरीक्षक अंश.)
2. श्री रोहित कुमार (सहा० कृषि निरीक्षक अंश.)
3. श्री देशपाल सिंह (ट्रैक्टर ड्राईवर)
4. श्री अखलेश कुमार (श्रमिक)
5. श्री सुखवीर सिंह (अंशकालीन श्रमिक)

**(घ) विद्यालय शिक्षकेत्तर कर्मचारी गण-**

1. श्री मामराज सिंह (लिपिक)
2. श्री मुकेश कुमार (सेवक)
3. श्रीमती सरोज (अंशकालीन सफाईकर्मचारी)
4. श्री ईसमपाल (माली/सेवक)

**(ङ) विद्यालय ब्रह्मचर्याश्रम (छात्रावास)-**

1. श्री अमर सिंह (आश्रमाध्यक्ष)
2. श्री जसवीर सिंह (अधिष्ठाता)
3. श्री गिरजाशंकर पन्त (अधिष्ठाता)
4. श्री योगेश कुमार (अधिष्ठाता)
5. डॉ० ब्रजेश सिंह विद्यालंकार (अधिष्ठाता)
6. श्री धर्मेन्द्र कुमार (अधिष्ठाता)
7. श्री भगत सिंह (अधिष्ठाता)
8. श्री परिदीन (माली)
9. श्री सुरेन्द्र सिंह (सुरक्षाकर्मी)

10. श्री रणजीत कुमार (सुरक्षाकर्मी अंश.)

11. श्री राजवीर सिंह (सुरक्षाकर्मी अंश.)

**(च) विद्यालय भण्डार-**

1. श्री उदयराज (भण्डारी)
2. श्री हरीश सिंह (कोठारी)
3. श्री किशन सिंह (पाचक)
4. श्री मोहन सिंह (पाचक)
5. श्री विजयपाल सिंह (कहार)
6. श्री उत्तम सिंह (कहार)
7. श्री राजकुमार (कहार)
8. श्री विनोद सिंह (कहार)

**(छ) गौशाला-**

1. श्री अमर सिंह (श्रमिक)
2. श्री नाथीराम (श्रमिक अंश.)
3. श्री सुनील कुमार (श्रमिक अंश.)

**(ज) सफाई कर्मचारी-**

1. श्री सोमपाल (सूरता)
2. श्री सोमेशचन्द
3. श्री मित्रपाल
4. श्रीमती सन्तोष
5. श्री दीपक कुमार (अंश.)

**जयप्रकाश विद्यालंकार**

(सहायक मुख्याधिष्ठाता)

संस्कृत
भाषा

## युग प्रवर्तकः महर्षि दयानन्दः

संसार यदा धर्मस्य ग्लानिर्भवति यदा जनाः धर्मस्य मूलतत्त्वानि विस्मृत्य केवलं बाह्याडम्बरमेव धर्मत्वेन स्वीकृत्य तथैव आचरणं करोति, तदा कस्यचिन्महापुरुषस्य जन्म भवति, यो बाह्याडम्बराणां निराकरणं कृत्वा मानव-समाजं पुनः सत्यपथमानयति। काठियावाड़प्रान्ते औदीच्य ब्राह्मणे गृहे स्वामिनो दयानन्दस्य जन्माभूत। स्वामी दयानन्दस्य बाल्यकालस्य नाम 'मूलशंकरः' आसीत्। स बाल्यादेव शिक्षाप्राप्त्यनन्तरस्वामिनो विरजानन्दस्य प्रेरणाय स्वामी दयानन्दो हिन्दूसमाजादज्ञामतिमिरान्धत्वं दूरीकर्तुं प्रतिज्ञावान्। तदनन्तरं स्वामी दयानन्दो भारते विभिन्नतीर्थेषु पवित्रस्थानेषु राज्येषु च परिभ्रम्य सर्वत्र वैदिकधर्म प्रचारं कृत्वा वेदानाञ्च प्रामाण्य प्रतिपादितवान्। एवमसौ बाह्याडम्बरणि, अन्धविश्वासान् अज्ञानम्, अविद्याम् पाखण्डानि, दुराचारान् विविधाश्च कुप्रथाः दूरीकृत्य हिन्दूसंस्कृतेवैदिक धर्मस्य च यथार्थं स्वरुपं प्रदर्शितवान्।

**ब्र० अनिवेश**

षष्ठ

## विद्याधनं सर्वधन प्रधानम्

विद्यायाः विषये कथितं 'न चौरहार्यं न भ्रातृभाज्यं' मिति। अतः विद्यायाः विस्मयकारिणी महिमा वर्तते। विद्याविहीनः नरः पशुतुल्यो भवति। सत्यमुक्तं महाकविना भर्तृहरिणा यद् 'विद्याधनं सर्वधनं प्रधानम्'। संसारे केचिद्जनाः सुवर्णादिकम्, केचिच्च पुत्रादिकं, धनत्वेन स्वीकुर्वन्ति, परन्तु वस्तुतो ज्ञानस्य जननी विद्यैवास्ति सर्वोत्कृष्टं धनम्। विद्या पितेव हिते नियोजयति, मातेव सर्वत्र रक्षति, योग्यमित्रमिव सहायतां करोति, विपत्तिकाले च धैर्यं यच्छति कर्त्तव्यं च बोधयति।

**विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्।**
**पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्मं ततः सुखम्॥**

विद्या विनयं ददाति। जनः विनयात् पात्रतां प्राप्नोति। सः पात्रत्वात् धनम् आप्नोति। धनात् धर्मम् आप्नोति। धर्मात् च सुखम् आप्नोति। अनेन विद्वांसः अन्ततोगत्वा अपूर्व सुखं लभन्ते।

**नाम-जतिन**

कक्षा-अष्टम्

## मम विद्यालयः

मम विद्यालयः हरिद्वार नगरे अस्ति। विद्यालयस्य भवनानि दर्शकानां चेतांसि हरन्ति। अस्य मुख्याद्वारे श्रद्धानन्दद्वारं वर्तते। मम विद्यालये अध्यापकानां संख्या विंशतिः सन्ति। छात्राणां च संख्या पञ्चशतादधिकं वर्तते। अस्य प्रधानाचार्यः सुयोग्योनुशासन प्रियोऽस्ति। विद्यालयस्य अध्यापकाः स्व-स्वविषये निष्णाताः सन्ति। ते छात्रान् स्नेहेन पाठयन्ति। छात्रा अपि तान् सर्वभावेन् सेवन्ते। वयं चात्र प्रतिदिनं पठनाय पुस्तकानि समाचारपत्राणि च लभामहे। शिक्षायां मम विद्यालयः समग्रेप्रदेशे अपूर्व ख्यातिमस्ति। अत्र न केवलं पुस्कानामेव पठनं, पाठनम्, अपि तु सदाचारस्य पाठोपि पाठयते। विद्यार्थिनः न केवलं पठने एव, निपुणतमाः अपि तु क्रीडने, वादने, तरणे, भाषणे प्रतियोगितास्वपि। देशसेवायां, समाजसेवायाम् च ते विशिष्टं स्थानं लभन्ते। मम विद्यालये रमणीयमेक क्रीडाक्षेत्रं विद्यते, यत्र वयं प्रातः सायं च भ्रमणाय गच्छामः। मम विद्यालये एका विज्ञानोपकरणालंकृता विज्ञानप्रयोगशालापि वर्तते। यत्र प्रयोगेण छात्राः विज्ञानसिद्धान्तानवगच्छन्ति। क्रीडनादिप्रतियोगितासु योग्यतमाश्चछात्राः पारितोषिकमापि प्राप्नुवन्ति।

**नाम- तुषार**

कक्षा- षष्ठम

## आदर्शः शिक्षकः

शास्त्रेषु गुरोः बहु महत्त्वं वर्णितम् अस्ति। आदर्शः गुरुः सः अस्ति, यः यथा छात्रान् उपदिशति, तथैव स्वयम् अपि आचरणं करोति। छात्राः गुरुं दृष्ट्वा, तस्य आचरणं च दृष्ट्वा तथैव आचरणं कुर्वन्ति। आदर्शगुरोः कर्तव्यम् अस्ति यत् स शिष्यं पुत्रवत् गणयेत्, तं पापात् निवारयेत्, तं सन्मार्गम् आनयेत्, तं सद्गुणान् शिक्षयेत, तं सत्कर्मसु योजयेत, तं हितकार्येषु नियोजयेत्, तं सर्वाः विद्याः स्नेहेन् पाठयेत्। आदर्शः गुरु सदा छात्राणां हितम् इच्छति। शिष्याणां हितार्थं बहूनि दुःखानि अपि सहते। सः आस्तिकः, धार्मिकः, विनीतः, सुशीलः, सदाचारी च भवति। स सदैव वन्दनीयः भवति।

**नाम- आनन्दः**

कक्षा- अष्टम्

## परोपकारस्य भावना

परेषां उपकार: परोपकार: कथ्यते। परोपकार: मानवसमाजस्य आधारस्तम्भ:। परोपकारस्य भावनां बिना मानव जीवनस्य कल्याणं अतिदुष्करम् अस्ति।

**परोपकाराय फलन्ति वृक्षा:, परोपकाराय वहन्ति नद्य:।**
**परोपकाराय दुहन्ति गाव:, परोपकाराय सतां विभूतय:।।**

सज्जनानां जीवनं तु सदैव परोपकाराय भवति। स्वामी दयानन्द:, स्वामी श्रद्धानन्द:, महात्मा गाँधी, पं० जवाहर लाल नेहरू:, महामना मदनमोहनमालवीय:, सुभाषचन्द्र बोस:, चन्द्रशेखर:, वीर भगतसिंहादय: महापुरुषा: तु स्वदेशोद्धाराय स्वप्राणानां बलि अकुर्वन्। महर्षि दधीचिना तु परोपकाराय एव स्व अस्थीनि दत्तानि। अत: सदैव परोपकारं करणीयम्।

**नाम-हर्ष**
कक्षा-सप्तम्

## महाकवि: कालिदास:

महाकवि: कालिदासो विक्रमादित्यस्य नवरत्नेषु एकं रत्नमासीत् इति प्रसिद्धि: अस्ति। कालिदासस्य जन्म विक्रमादित्यस्य चन्द्रगुप्त द्वितीयस्य राज्यकालेऽभूत्। तस्य विषये किंवदन्ती यत् शैशवेऽसावसीन्मूर्खोऽशिक्षितश्च। तस्य शैशवं क्रीडयामेव व्यतीतम्। तस्य यौवन एका विचित्रा घटना जाता। कस्यापि नृपस्य पुत्री विद्योत्तमा रूपवती विदुषी चासीत्। सा प्रतिज्ञा कृतवती यद् य: कश्चिद् विद्वान् तां शास्त्रार्थे जेष्यति सा तस्यैव पत्नी भविष्यति। बहवो विद्वांस: तया सह विवाहेच्छया शास्त्रार्थमकुर्वन् परं सा तान् सर्वानपि जितवती। तदा तै: सर्वैरपि पराजितै: पण्डितैर्मिलित्वा निश्चय: कृतो यदस्य पराजयस्य प्रतिशोध: करणीयो गर्वित चेयं राजकुमारी यथोचितं दण्डनीया। अतस्ते मूर्ख परन्तु स्वस्थं रूपवन्तं च कालिदासं तत्रानीय तं च मौनिनं महापण्डितं प्रख्याप्य तया सह सांकेतिक शास्त्रार्थमकारयन्। कालीप्रभावे कालिदास: महापण्डित: पण्डितोऽभवत् स रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, मेघदूतम्, ऋतुसंहार:, इत्याख्यानि काव्यानि:, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् इति नामानि नाटकानि चारचयत्।

आसीत्कालिदासो रससिद्ध: स्वाभाविक: कवि। तस्य भाषा प्रसादगुण विशिष्टा सरला विद्यते। शैली च हृदयहारिणी वैदर्भी अस्ति। तस्याऽलंकाराणां प्रयोगेऽपि स्वाभाविक: प्रतीयते। उपमाप्रयोगे सोऽद्वितीय:। कालिदासस्य कवित्वप्रतिभां दृष्ट्वा वैदेशिका: विद्वांस: मुग्धा: सन्ति। संस्कृतभाषाया: सर्वेऽपि कवयस्तं कविकुलगुरुं मन्यन्ते।

**नाम-कृपाशंकर, शिवकुमार**
कक्षा-सप्तम्

## राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी

महात्मा नाम्ना विश्रुतस्य गान्धीमहोदयस्य पूर्णनाम मोहनदासः कर्मचन्दः गाँधी आसीत्। तस्य जन्म काठियावाड़प्रान्ते पोरबन्दरनाम्नि नगरे अभवत्।

नवषष्ठयुत्तराष्टादश्शतमे ईस्वीयाब्दे अक्तुबरमासस्य द्वितीये दिनांके समभवत्। तस्य जनकः राजकोटराज्ये मन्त्री आसीत्। अतस्तस्यारम्भिकी शिक्षा तत्रैवाभवत्।

आबाल्यादस्य पितृभक्तिविषये सत्यविषये च महती श्रद्धा वर्तते स्म। मैट्रिकपरीक्षायुत्तीर्य स बैरिस्टरी परीक्षामुत्तरितुमाङ्गलं (इंग्लैंड) देशं प्रस्थितवान्। प्रेषां मद्यमांसवर्जनाय परनारी गमनषिधाय च प्रतिज्ञां चकार। आंगलदेशे वसन् स निजप्रतिज्ञां पूरितवान्। स्वदेशेऽपि निवसत् तां प्रतिज्ञां सत्यभावेनापालयत्।
अध्ययनं समाप्य पुनश्च भारतं श्राद्धम् प्रत्यागत्य गान्धी अधिवक्ता कार्यं कर्तुमारभत्। किञ्चित्कालान्तरं स स्वतन्त्रोऽभवत्।
सः अस्माकं मध्ये नास्ति, तथापि तस्य चिरन्तन आत्मा सदैवास्मान् प्रेरयति।

**नाम-रोहित**
**कक्षा-सप्तम्**

## सत्यमेव जयते नानृतम्

सत्यभाषणेन मनुष्यो निर्भीको भवति। सत्यभाषणेन तस्य तेजो यशः कीर्तिः विद्याः गौरवं च वर्धन्ते। यः सत्यं वदति, सः सर्वेभ्यः पापेभ्योऽपि निवृत्तो भवति। यदा सः कस्मिश्चित् पापे प्रवर्तते तदा स चिन्तयति, यद् अहं सत्यमेव वदिष्यामि, अतः सर्वेषां दृष्टिषु हीनो भविष्यामि, एवं स पापाद् विरमति। सत्यभाषणं वस्तुतो जीवने सर्वोत्तमं तपो वर्तते।

**प्रस्तुतकर्त्ता-राहुलः**
**कक्षा-दशम्**

# वर्तमानिकी समस्याः भ्रष्टाचारः

कः भ्रष्टाचारः? अनुचित साधनेन धनोपार्जनम्। भ्रष्टाचारः अनेकरुपः। यथां-उत्कोच-ग्रहणम् खाद्यवस्तुषु अखाद्यस्य मिश्रणम्, अनुचित-साधनेन धन-प्राप्तिः स्पष्टकार्यस्य संपादनार्थम् उत्कोच-प्रदानम्। साम्प्रतं भारतवर्षे भ्रष्टाचारस्यविष-वृक्षवत् संवर्धते। उत्कोचदानम् उत्कोचग्रहणम् च आमूलं दृश्यते। उत्कोच-प्रदानं विना राजकीय-कार्यालयादिषु स्वल्पमपि कार्यं साधयितुं न शक्यते। पदे-पदे उत्कोच-ग्रहणम्-समस्याः वर्तते। केवलं सामान्याः अधिकारिणः एव अत्र न प्रवर्तन्ते, अपितु उच्चाधिकारिणः अपि आमूलम् उत्कोचग्रहणे प्रवृत्ताः। 'यथा राजा तथा प्रजा' यदा उच्चाधिकारिणः उत्कोचं ग्रहणन्ति तदा निम्नपदस्याः अधिकारिणः अपि निर्भयम् उत्कोच-ग्रहणे प्रवर्तन्ते। भारते भ्रष्टाचारस्य स्थितिः भयावहा वर्तते। जनता किं कर्तव्य-विमूढा वर्तते। कं नु शरणं गच्छामि, न कश्चित् मां शृणोति।

भ्रष्टाचारः शतविधः। यो यत्र वर्तते स तत्रेव भ्रष्टाचारे प्रवृत्तः। मन्त्रिणः सांसदाः, विधायकाः अपि एतस्मिन् कार्ये लज्जाम अनुभवन्ति।

**संग्रहकर्ता-विशान्तः**
कक्षा-दशम

# पर्यावरण-संरक्षणम्

यत् परितः आवृणोति आच्छादयति तत् पर्यावरणम्। वायुमण्डलं, जलमण्डलं, भूमण्डलं च जगत् आच्छादयति, अतः पर्यावरण-शब्देन मृत्तिका, जलं, वायुः, प्रकाशः, आकाशश्च गृह्यन्ते। यद् एतान दूषयंति, तत् पर्यावरणदूषकं कथ्यते।

1. वायुप्रदूषणम्
2. जल प्रदूषणम्
3. भूमि प्रदूषणम्
4. ध्वनि प्रदूषणम्।

निराकरणार्थम् एते उपायाः करणीयाः। धूम्रत्यागपराणां वाह्नानां न्यूनता विधेया। वृक्षाणां छेदने निरोधः स्यात्। तडाग-नद्यादिषु मलमूत्रादिकम् अन्यद् अपशिष्टं च न प्रवाह्यम्। यजुर्वेदानुसारं–

**भूमि दृंह, पृथिवी मा हिंसीः॥**
**दिवं दृंह, दिवं मा हिंसीः॥**

**प्रस्तुतकर्ता- हर्षः**
कक्षा-दशम

# विज्ञानस्य महिमा

वर्तमानयुगे विज्ञानस्य युगो मन्यते। विज्ञान मानवजीवनस्य प्रत्येकं पक्षं प्रभावयति-आर्थिकं, सामाजिक, राष्ट्रीयम्, अन्तर्राष्ट्रीयं च। आविष्काराणां तादृशी प्रगतिरस्ति या सर्वथा आश्चर्य जनयति। विज्ञानं प्रतिदिनं नवीनानां यन्त्रादीनाम् अविष्कारेण मानवस्य सुखं सुविधां च वर्धयति। विविध-यन्त्राणां प्रयोगेण, इलेक्ट्रिक-सूक्ष्म-अपकरणानां च प्रयोगेण मानवस्य अहर्निशं सेवां करोति। मानवस्य याऽपि आवश्यकता वर्तते। तस्य पूर्तिं करोति। साम्प्रतं कम्प्यूटरस्य संगणकस्य वा आविष्कारो विज्ञानस्य सर्वोत्तमा उपलब्धि: अस्ति।

**नाम-निशान्त :**

कक्षा-दशम

# प्रहेलिका:

1. **न तस्यादिर्न तस्यान्तं मध्ये यस्तस्य तिष्ठति।**
   **तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति यदि जानासि तत् वद॥**

**हिन्दी–** उसका न आरम्भ है न अन्त, जो बीच में रहता है। वह तुम्हारे पास भी है, मेरे पास भी है। यदि जानते हो तो बताओ।

**उत्तरम्–** नयनम् (आँखें)।

2. **वने वसति को वीरो योऽस्थिमांस नवर्जित:।**
   **असिवत् कुरूते कार्यम्, कार्यं कृत्वा जलं गत:॥**

**हिन्दी–** ऐसा कौन सा वीर है, जो हड्डी तथा मांस से रहित है, जल में रहता है तथा तलवार की तरह कार्य करता है और कार्य करके पुन: जल में चला जाता है।

**उत्तरम्–** कुलाल दोरक: (कुम्हार का दोरा)।

3. **क्षीयते वर्धने चैव न समुद्र: न चन्द्रमा:।**
   **एकचक्षुर्न काकोऽयं, बिलमिच्छन्न पन्नग:॥**

**हिन्दी–** एक आँख वाला है किन्तु कौआ नहीं, बिल में जाने की इच्छा रखता हुआ भी सर्प नहीं है। वह घटता है तथा बढ़ता है,, किन्तु न तो चन्द्रमा है न समुद्र।

**उत्तरम्–** सूचिक: (सुई)।

**संग्रहकर्ता- अभिषेक:**

कक्षा-नवम् ब

## सामान्यज्ञानम

1. ऋग्वेदस्य किं सूक्तं धर्मनिरपेक्षतां द्योतयति? – **अक्षसूक्तम्**
2. अश्वमेधयज्ञस्य वर्णनं कस्मिन् वेदे अस्ति? – **यजुर्वेदे।**
3. कौथमी शाखा कस्य वेदस्य अस्ति? – **सामवेदस्य।**
4. यज्ञस्य उत्तमविधि: कस्मिन् ब्राह्मणग्रन्थे अस्ति? – **शतपथब्राह्मणे।**
5. आरण्यकानां किम् उद्देश्यम? – **अध्यात्मचिन्तनम्।**
6. ओङ्कारस्य वर्णनं कस्याम् उपनिषदि वर्तते? – **माण्डूक्योपनिषदि।**
7. बलदेवप्रसादोपाध्यायमतेन कति शिक्षाग्रन्था:? – **विशंति: शिक्षाग्रंथा:।**
8. निघण्टु इत्यनेन शब्देन किं जायते? – **वैदिकशब्दकोश:।**
9. सूर्यस्य उच्चराशि: क: भवति? – **मेषराशि: दशांशे।**
10. सर्वेश्वर उपाधिना विभूषित: क: कवि:? – **महाकवि: बाणभट्ट:**

पुनीत:

कक्षा- नवम्

## सुविचार:

| | |
|---|---|
| सर्वोत्तमं दिनम् | अद्य |
| सर्वोत्तम: विद्यार्थी | प्रयत्नशील: |
| सर्वोत्तम: सम्बन्ध: | प्रेम |
| सर्वोत्तमं ज्ञानम् | व्यावहारिकं ज्ञानम् |
| सर्वोत्तमा भाषा | संस्कृत भाषा |
| सर्वोत्तम: शिक्षक: | अनुभव: |
| सर्वोत्तमं आभूषणं | हसनम् |
| सर्वोत्तम: उपहार: | क्षमा |
| सर्वोत्तमं राष्ट्रम् | भारतम् |
| सर्वोत्तमं वचनम् | मधुरम्। |

नाम- हर्ष:, विनीत:

दशम्

# प्रियं भारतम् ( धारावाहिकरूपेण )

1. बिस्मिल्लाऽस्फाक- उल्लायुतो रोशनः
सिंहरूपः सुभाषस्तथा वल्लभः।
देशभक्ताः प्रभूता महाविक्रमाः,
यत्र कीर्ति गता मे प्रियं भारतम्॥

**भावार्थ-** जहाँ बिस्मिल, अश्फाक उल्ला, रोशनलाल, भगतसिंह तथा प्रिय सुभाष जैसे अनेकों देशभक्त महापराक्रमी उत्पन्न हुए हों, ऐसी कीर्ति से सम्पन्न मेरा प्रिय भारतवर्ष हैं।

2. आगतं द्वारदेशे नवीन जनं,
कुक्कुराः स्वामिभक्ताः सतर्क स्थिरताः।
को भवान् यत्र पृच्छन्ति वै सत्वरं,
सर्वतः रक्षितं तत् प्रियं भारतम्॥

**भावार्थ-** जहाँ अतिथि के द्वार पर आने पर स्वामिभक्त तथा सतर्क कुत्ते आप कौन हैं तुरन्त ही पूछते हैं, ऐसा पूरी तरह से सुरक्षित मेरा प्रिय भारत वर्ष है।

3. ईश्वरेच्छा क्वचित् दुःखमाय चेत्,
तर्हि दैव्यापदः सम्पत न्येकतः।
प्लावनं शैलपातो धराकम्पनं,
रोगसंक्रामकश्चेति दौर्भाग्यतः॥

दृश्यते सह्ययते साहसेनापि तत्,
मानु वैबुद्धिमद्भिः समं साधनैः।
तादृशं धैर्यसम्पन्नमेकं क्षमं,
श्लाघनीयं मदीयं प्रिंय भारतम्॥

**भावार्थ-** कभी ईश्वरेच्छा से दुःखदायी देवी आपदाएं आ जाती है, जिसमें बाढ़, भूकम्प तथा भूस्खलन, सक्रांमक रोग आदि होते हैं। ऐसे अवसरों पर बुद्धिमान् मनुष्य अपने सभी साधनों के साथ उनका मुकाबला करते हैं तथा सब उन्हें सहन करते है, ऐसा धैर्य से सम्पन्न और समर्थ और प्रशंसनीय मेरा प्रिय भारतवर्ष है।

4. भीष्मशस्त्रास्त्रसज्जं प्रभतं बलं।
वर्तते सत्र नैजं हितं रक्षितुम्॥
स्वाभिमानेन शान्तिं सदा धारयेत्।
सौम्यरूपं तदेकं प्रियं भारतम्॥

**भावार्थ**- जहाँ बड़े-बड़े शस्त्रों से सुसज्जित सेना अपने हित की रक्षा के लिए सन्नद्ध रहती है, जो सदा स्वाभिमान के साथ शान्ति को धारण करती है, ऐसा सौम्यरूप मेरा प्रिय भारतवर्ष हैं।

5. नैतिकं कर्मधर्मानुगं राजते,
यत्र गीवार्णवाणी तथा शोभिता।
भौतिकं ज्ञानमध्यात्ममातसंगतं,
संस्कृति प्रोन्नतं तत् प्रियं भारतम्॥

**भावार्थ**- जहाँ नीति के अनुसार किए जाने वाले कर्म, धर्म का अनुसरण करते हुए शोभा पाते हैं। जहाँ भौतिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण देवभाषा संस्कृत सुशोभित होती है तथा संस्कृति को उन्नत बनाती है, ऐसा मेरा प्रिय भारत वर्ष है।

**संग्रहकर्ता- रूस्तमः**
कक्षा- नवम् (ब)

हिन्दी
भाषा

# रटने से बात समझ में नहीं आती है

किसी जंगल में एक विशाल वृक्ष था। उस पर हजारों पक्षी निवास करते थे। जिनमें ज्यादातर पक्षी तोते थे। जिनका शिकार एक शिकारी करता था। वह रोज आता और जाल बिछाकर कुछ दानें डालकर उनको जाल में फँसा लेता था। एक भले व्यक्ति ने उन पर तरस खाकर उनको बचाने का प्रयास किया। उसने विचार किया कि क्यों न पक्षियों को बचने का रास्ता दिखायें। उनको शिकारी से बचाने के लिए उसने तोतों को सिखाना आरम्भ किया। पहले दिन पक्षियों को सिखाया शिकारी आएगा। दूसरे दिन जाल बिछाएगा। तीसरे दिन दाना डालेगा। चौथे दिन पर फँसना मत। पाँचवें दिन उस भले व्यक्ति ने देखा कि सभी तोते बोल रहे हैं। शिकारी आएगा, जाल बिछाएगा, दाना डालेगा, पर फँसना मत। इस बात से प्रसन्न होकर वह वहाँ से चला गया और सोचने लगा कि अब शिकारी उनको अपने जाल में नहीं फँसा पाएगा। लेकिन इसका उलटा हुआ। सारा दिन तोते यही बात दोहराते रहते लेकिन शिकारी जानता था कि जब मैं जाल डालकर दाना डालूँगा तो ये अपने आप जाल में फँसते चले जायेंगे।

**नाम-उमंग**

कक्षा-षष्ठ

# कुछ महत्वपूर्ण जानकारी

1. एशिया विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है।
2. एशिया को महाद्वीपों का महाद्वीप, विषमताओं का महाद्वीप तथा मानव घर भी कहा जाता है।
3. एशिया में विश्व की लगभग 60% जनसंख्या निवास करती है।
4. विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट एवरेस्ट (8848 मी.) एशिया में है जो नेपाल में सागरमाथा के नाम से जानी जाती है।
5. एशिया में विश्व का सबसे ऊँचा पठार पामीर (5000मी.) है, जो विश्व की छत के नाम से जाना जाता है।
6. विश्व की सबसे गहरी झील बैकाल झील एशिया में स्थित है।
7. एशिया में विश्व का सर्वाधिक चाय उत्पादक देश भारत है।
8. थाइलैण्ड 'सफेद हाथियों का देश' कहलाता है।
9. विश्व में नहरों का सबसे बड़ा जाल पाकिस्तान में है।
10. एशिया का सबसे गर्म नगर जैकोवाबाद (पाकिस्तान) है।

**राहुल**, कक्षा- एकादश

# देश एवं उनके राष्ट्रीय खेल

| देश | राष्ट्रीय खेल |
|---|---|
| यू.एस.ए. | बेसबॉल |
| स्पेन | साँड-युद्ध |
| कनाडा | आइस हॉकी |
| भारत | हॉकी |
| रूस | फुटबॉल |
| चीन | टेबल टेनिस |
| ब्राजील | फुटबॉल |
| इंग्लैण्ड | क्रिकेट |
| जापान | जूडो |
| पाकिस्तान | हॉकी |
| मलेशिया | बैंडमिण्टन |
| भूटान | तीरन्दाजी |

**नाम-अर्पण**
कक्षा-द्वादश

# किसने कौन-सी खोज की

| | आविष्कार | खोजकर्ता |
|---|---|---|
| 1. | वायुयान | राइट ब्रदर्स |
| 2. | मोटरकार | हेनरी फोर्ड |
| 3. | ऑटोमोबाइल | कार्ल बेन्ज |
| 4. | टेलीफोन | ग्राह्म बेल |
| 5. | हैलीकॉप्टर | ए. ओहमिशेन |
| 6. | लिफ्ट | एलिसा ग्रेव ओटिस |
| 7. | साइकिल | मैकमिलन |
| 8. | टेलीविजन | जे.एल.बेयर्ड |
| 9. | रेफ्रिजरेटर | जेम्स हेरिमन एवं ए. कैटलीन |
| 10. | छापने की कला | थॉमस अल्वा एडीसन |

**नाम-रितिक कुमार**, कक्षा-षष्ठ

# कुछ जानने योग्य बातें

## दुनिया के कुछ सबसे भयंकर ज्वालामुखी विस्फोट

| वर्ष | ज्वालामुखी का नाम | मृतकों की संख्या | मृत्यु का प्रमुख कारण |
|---|---|---|---|
| 1631 | वीसूवियस, इटली | 3500 | कीचड़ और लावा प्रवाह |
| 1640 | कोमोगेटाकी, जापान | 700 | सुनामी |
| 1741 | असीमा, जापान | 1475 | सुनामी |
| 1772 | पापाडायन, इंडोनेशिया | 2975 | राख प्रवाह |
| 1783 | लाकी, आइसलैंड | 9350 | स्ट्रावेशन |
| 1783 | असमा, जापान | 1377 | राख व कीचड़ प्रवाह |
| 1792 | अनजीन, जपापन | 14300 | ज्वालामुखी के ढहने से |
| 1914 | मैयोन, फिलीप्राइस | 1200 | कीचड़ प्रवाह |
| 1815 | तामबोरो, इंडोनेशिया | 92000(अधिक) | स्ट्रावेशन |
| 1822 | गैलुनगुंग, इंडोनेशिया | 4011 | कीचड़ प्रवाह |
| 1845 | रुईज, कोलम्बिया | 700 | कीचड़ प्रवाह |
| 1877 | कोतोपेक्सी, इक्वेडोर | 1000 | कीचड़ प्रवाह |
| 1893 | क्राकातोआ, इंडोनेशिया | 36417 | सुनामी |
| 1902 | माउंट पेले | 2902 | राख प्रवाह |
| 1911 | टाड, फिलीपींस | 1335 | राख प्रवाह |

**नाम-मेहेर अमित**
कक्षा-दशम्

# विज्ञान ज्ञान

प्र० **ऐसी कौन-सी गैस है जिसको सूँघने पर मनुष्य केवल हँसता ही रहता है।**

उ० नाइट्रस ऑक्साइड (NO)

प्र० **मनुष्य 24 घंटे में कितनी बार साँस लेता है?**

उ० 21000 बार साँस लेता है।

प्र० **विश्व में प्रत्येक सेकंड में कितने शिशु जन्म लेते हैं?**

उ० विश्व में प्रत्येक सेकंड में 4 शिशु जन्म लेते हैं।

प्र० **स्वस्थ मनुष्य के शरीर में कितना खून पाया जाता है?**

उ० 6 से 8 लीटर के बीच।

प्र० **मनुष्य के हृदय का वजन कितना होता है?**

उ० 10 औंस।

प्र० **प्रकाश की गति कितनी होती है?**

उ० 3 लाख किलोमीटर प्रति सेकंड।

प्र० **कौन-सा रसायन पानी में जलता है?**

उ० सोडियम।

प्र० **सबसे विषाक्त पदार्थ कौन-सा होता है?**

उ० रेडियम।

प्र० **हमारी पृथ्वी किस गति से घूमती है?**

उ० 1800 कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से।

प्र० **कहाँ पर दिन में भी तारे दिखाई देते हैं?**

उ० अंतरिक्ष में।

**नाम-तुषार स्वामी**
कक्षा-षष्ठ

## भारत की महत्वपूर्ण जानकारियाँ

**प्र0 ताजमहल को कितने कारीगरों ने कितने समय में बनाया? उसमें कितनी लागत आई?**

उ0 ताजमहल को 20,000 कारीगरों ने 20 वर्ष में बनाया, इसको बनाने में उस समय चार करोड़ रुपए का खर्चा आया था।

**प्र0 श्रीमती सोनिया गाँधी का वास्तविक नाम क्या है?**

उ0 सिन्योरा मायनो।

**प्र0 भारत में सबसे अधिक जनसंख्या वाला नगर कौन-सा है?**

उ0 मुम्बई।

**प्र0 रामायण में कितनी चौपाइयाँ हैं?**

उ0 चौबीस हजार (24,000)।

**प्र0 भारत की वह कौन-सी नदी है, जिसमें हीरे पाए जाते हैं?**

उ0 कृष्णा नदी, दक्षिण भारत में।

**नाम-तुषार स्वामी**

**कक्षा-षष्ठम**

## आविष्कार और खोज में अंतर

'आविष्कार' (इन्वेंशन) का मतलब कोई अनूठी चीज बनाना है। इसकी प्रेरणा किसी कुदरती चीज से भी मिल सकती है। जैसे इंसान को हवाई जहाज बनाने की प्रेरणा पक्षियों को उड़ते हुए देखकर मिली थी और राइट ब्रदर्स ने इस कल्पना को आविष्कार के रूप में साकार कर दिया। आविष्कार से मिलता-जुलता एक शब्द है 'खोज' (डिस्कवरी) लेकिन इसका अर्थ बिल्कुल अलग है। आविष्कार का अर्थ है किसी अनूठी चीज को बनाना जबकि खोज में हम किसी पहले से मौजूद चीज को ढूंढ़ते जानते हैं। इसलिए कहा जाता है कि क्रिस्टोफर कोलंबस ने अमेरिका की खोज की। न्यूटन ने गुरूत्वाकर्षण का सिद्धांत 'खोजा' जबकि थामस अल्वा एडीसन ने बिजली के बल्ब का आविष्कार किया। अब देखो न, उन लोगों ने पहली बार रबर के पेड़ के दूधिया चिपचिपे रस के बारे में जाना तो उन्होंने इससे रबड़ बनानी शुरू कर दी। यह कोई आविष्कार नहीं था, बल्कि रबड़ के रस के गुणों की खोज थी। कुछ समय बाद वैज्ञानिकों ने कार और मोटर साईकिलों के लिए रबड़ के टायरों का आविष्कार किया।

**नाम-शशांक**

कक्षा-नवम् 'अ'

## नायलॉन ने किया कमाल

चीनवासियों ने लगभग 500 साल पहले सुअर के बालों से टूथब्रश बनाना शुरु कर दिया था। सौभाग्य से अमेरिकी कंपनी ड्यूपांट द्वारा 1930 में 'नायलॉन' के आविष्कार के बाद टूथब्रश में इसका इस्तेमाल शुरु हुआ और सुअरों को निजात मिली इंसानों के दांतों को चमकाने के लिए अपने बाल नुचवाने से।

## बच्चों की बल्ले-बल्ले

जब थॉमस हैनकॉक ने 1820 में इलास्टिक का आविष्कार किया तो उनका मानना यह था कि इसे जेबों के ऊपर लगाया जाएगा ताकि जेबकतरे लोगों का पर्स न निकाल सकें। लेकिन नायाब इस्तेमाल हुआ अंडरगारमेंट्स की बेल्ट बनाने में और बच्चों के लिए खत्म हो गई बार-बार निक्कर खिसकने की दिक्कत।

## नोटों ने बदली दुनिया

कागज का आविष्कार चीन में हुआ था और आज से लगभग 1200 साल पहले चीनवासियों ने ही शुरु किया कागज के नोटों का इस्तेमाल। इससे पहले मुद्रा के रुप में उन्होंने आविष्कार किया था चाय के ब्लॉक्स का। यह दोनों आविष्कार इसलिए बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि इनकी वजह से ही मानव सभ्यता में चीजों के लेनदेन की जगह व्यापार एक खास करेंसी पर आधारित होना शुरु हुआ।

**नाम- ब्र० पंकज**
कक्षा-नवम् 'अ'

## समाधि स्थल

| | |
|---|---|
| राजघाट | महात्मा गाँधी |
| विजय घाट | लाल बहादुर शास्त्री |
| किसान घाट | चौधरी चरण सिंह |
| वीर भूमि | राजीव गाँधी |
| महाप्रयाण घाट | डॉ. राजेन्द्र प्रसाद |
| नारायण घाट | गुलजारी लाल नन्दा |
| शक्ति स्थल | इन्दिरा गाँधी |
| शक्ति वन | जवाहर लाल नेहरू |
| अभय घाट | मोरारजी देसाई |
| समता स्थल | जगजीवन राम |
| चैत्य भूमि | बी.आर. अम्बेडकर |

**नाम-नितीश**, कक्षा-द्वादश (कला वर्ग)

## उत्तराखण्ड दर्शन

| | |
|---|---|
| प्रदेश का नाम | उत्तराखण्ड |
| गठन तिथि | 09-11-2000 |
| प्रदेश की राजधानी | देहरादून |
| कुल क्षेत्रफल | लगभग 54 हजार वर्ग किमी. |
| प्रदेश की जनसंख्या | लगभग 85 लाख |
| प्रदेश के मुख्यमंत्री | श्री हरीश रावत जी |
| प्रदेश के राज्यपाल | मा॰ अजीज कुरैशी जी |
| कुल जिले | 13 जिले |
| प्रदेश का उच्चन्यायालय | नैनीताल |
| राज्य पक्षी | मोनाल |
| राज्य पशु | कस्तूरी मृग |
| प्रमुख नदियां | गंगा, यमुना व शारदा |
| प्रमुख उद्योग | कृषि, पशुपालन |
| धार्मिक स्थान | बद्रीनाथ, केदारनाथ, हरिद्वार |
| पर्यटन स्थल | नैनीताल, मंसूरी |
| प्रमुख फसलें | धान, गेहूँ, आलू, दालें आदि। |
| राजभाषा | हिन्दी |

**नाम-वरूण**
**कक्षा-द्वादश**

## ऋग्वैदिककालीन नदियाँ

| प्राचीन नाम | आधुनिक नाम |
|---|---|
| क्रुमु | कुर्रम |
| कुभा | काबुल |
| वितस्ता | झेलम |
| अस्किनी | चिनाव |
| परूष्णी | रावी |
| शतुद्रि | सतलज |
| विपाशा | व्यास |
| सदानीरा | गण्डक |
| दृषद्वती | घग्घर |
| गोमल | गोमती |
| स्वात् | सुवास्तु |

**नाम-ऋषभ**
**कक्षा-द्वादश (कला वर्ग)**

## ओ३म्

कण-कण में विद्यमान है तू,
कण-कण में समान है तू।
सब समान हैं तेरे लिए,
तू महान है मेरे लिए।।
तेरी रचना है न्यारी,
सबको लगती है प्यारी।
तुझसे सीखा जीना मरना,
तुझसे पाया जीवन चलना।।
सुख में याद नहीं करता कोई तुझे,
दु:ख में याद करता हर कोई तुझे।
तेरा ही ध्यान करूँ मैं,
तेरा ही गुणगान करूँ मैं।

**नाम-अभिषेक**
कक्षा-नवम्

# हमारे देश के प्रधानमन्त्री

| नाम | कार्यकाल | विशेष |
|---|---|---|
| जवाहर लाल नेहरू | 1947-1964 | सबसे लम्बा कार्यकाल। |
| लाल बहादुर शास्त्री | 1964-1966 | |
| इन्दिरा गाँधी | 1966-1977 | |
| मोरारजी देसाई | 1977-1979 | प्रथम गैर कांग्रेसी प्रधानमन्त्री। |
| चरण सिंह | 1979-1980 | एकमात्र प्रधानमन्त्री जिन्होंने लोकसभा का सामना नहीं किया। |
| इन्दिरा गाँधी | 1980-1984 | लोकसभा चुनाव में पराजित होने वाली एकमात्र प्रधानमन्त्री। |
| राजीव गाँधी | 1984-1989 | |
| वी०पी०सिंह | 1989-1990 | अविश्वास प्रस्ताव द्वारा हटने वाला एकमात्र प्रधानमन्त्री। |
| चन्द्रशेखर | 1990-1991 | |
| पी.वी. नरसिम्हा राव | 1991-1996 | एकमात्र प्रधानमंत्री जो पद ग्रहण करते समय किसी भी सदन के सदस्य नहीं थे। |
| अटल बिहारी वाजपेयी | 16 मई-28 मई 1996 | सबसे छोटा कार्यकाल। |
| एच.डी. देवगौड़ा | 1996-1997 | एकमात्र प्रधानमन्त्री जो पद ग्रहण करते समय विधानसभा के सदस्य थे। |
| इन्द्र कुमार गुजराल | 21 अप्रैल 1997 से मार्च 1998 तक | |
| अटलबिहारी वाजपेयी | 19 मार्च 1998 से 22 मई 2004 तक | |
| डॉ. मनमोहन सिंह | 22 मई 2004 से अब तक | |

**नाम-अमित**
कक्षा-अष्टम

## ( आर्य वीरों से )

उठो आर्य वीरों हलचल मचा दो।
दयानन्द सन्देश घर-घर पहुँचा दो।
तूफानी सागर जो रास्ता घेरे।
कड़कड़ाती बिजली जो बादल गेरे।
रुकना नहीं जना बाजी लगा दो।
सूर्य उगले शोले निकलना हो दुष्वार।
बर्फ पड़े इतनी तन काँपे थर-थर।
वेदों की खातिर तन-मन लुटा दो।
रास्ते के पर्वत को ठोकर से तोड़कर।
आँधियों के रूख को भुजाओं से मोड़कर।
सच्चाई का रास्ता विश्व को दिखा दो।
विश्व को बनाना आर्य लक्ष्य है हमारा।
वेद का सन्देश घर-घर देकर दोबारा।

**नाम-सचिन**
कक्षा-नवम

## ( भूल )

जो भूलकर भूल जाये
उसे नादान कहते हैं।
जो भूल करता रहे
उसे इंसान कहते हैं।
जो भूल कर मुस्कराये
उसे शैतान कहते हैं।
जो भूल पर भूल करता है
उसे मूर्ख कहते हैं।
जो भूल करके भूल से
सीखें उसे बुद्धिमान कहते हैं।
जो कभी भूल न करे
उसे भगवान कहते हैं।

**नाम- अनुराग**, कक्षा-नवम

ओ३म्

## वीरों आज करो बलिदान

प्यासी धरती माँग रही आज रक्त का दान।
वीरों आज करो बलिदान।

उठो जवानों अब धरती की प्यास बुझा दो।
करो गर्जना धरती और आकाश हिला दो।
भारत माँ के चरणों में अब शीश चढ़ा दो।
रक्षा करनी है माँ की देकर अपने प्राण।
वीरों आज करो बलिदान।

बहिनों तुम भी बढ़ो और जौहर दिखलाओ
आज शत्रु के शोणित से हर माँग सजाओ।
अबला सबला बनकर अब हथियार उठाओ।
रणचण्डी बनकर अर्पण कर दो अरि मुण्डों की माल।
वीरों आज करो बलिदान।

आज समय है आपस में मत भेद भुलाओ
हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई एक हो जाओ।
अब भारत को सब मिलकर एक स्वर्ग बनाओ।
नही लुटेगा माँ का गौरव आन-बान और शान।
वीरों आज करो बलिदान।

**नाम- चिराग**
कक्षा-नवम

## प्रथम देवता माता पिता

माता-पिता हैं घर में जब तक, दूसरा देव नहीं है तब तक।
कर लो पूजा बारम्बार, तीर्थ यात्रा है बेकार।
माता-पिता की महिमा न्यारी, खुशियाँ हमें दी प्यारी-प्यारी।
पिता ने हमें किया दुलार, तीर्थ यात्रा है बेकार।
जग में इनसे बड़ा न कोई, इनसे घृणा करे न कोई?
इनका ही सर्वश्रेष्ठ है प्यार, तीर्थ यात्रा है बेकार।
मन्दिर घूमे मस्जिद घूमे माँ के पैर कभी न चूमे।
अभी वक्त है संभलो बन्दे, त्यागो अपने काम ये गन्दे।
नमन करो इन्हें बारम्बार, हो जाएगा बेड़ा पार।

**नाम- आदित्य**
कक्षा-नवम

## आसान बनाम मुश्किल

| आसान | मुश्किल |
|---|---|
| दूसरों की कमियों को ढूँढना | स्वयं में गलती ढूढना। |
| दूसरों को माफ करना | स्वयं से माफी माँगना। |
| रात में सपना देखना | देखते हुए सपने को साकार करना। |
| पत्थर से चोट खाना | चोट खाकर फिर सम्भलना। |
| दूसरों को अपमानित करना | स्वयं का अपमान सहना। |
| दूसरों से वादे करना | उन वादों को निभाना। |
| दूसरों के आँसू पोंछना | अपने आँसू को छिपाकर रखना। |
| दूसरों से अपनी इज्जत कराना | दूसरों की इज्जत करना। |

**नाम-अंकित**
कक्षा-एकादश

## अमृतवाणी

1. जिस देश में सम्मान न हो वहाँ नहीं रहना चाहिए।

**( चाणक्य )**

2. अवगुण नाव में छिद्र के समान है जो बड़ा हो छोटा, डुबा देगा।

**( कालिदास )**

3. संसार पानी का बुलबुला है।

**( बेकन )**

4. जो दूसरों का नुकसान करता है उसे दण्ड ही भोगना पड़ता है।

**( गौतम बुद्ध )**

5. मेहनत एक चाबी है जो खुद किस्मत का दरवाजा खोल देती है।

**( चाणक्य )**

6. भलाई करके उसे जताना शोभा नहीं देता।

**( विवेकानन्द )**

**नाम- शक्ति सिंह**
कक्षा-एकादश

## लौह पुरूष वल्लभ भाई पटेल

बम्बई की एक सभा में सिंह की तरह गरजते हुए एक देशभक्त ने कहा था कि **''अंग्रेजी भारत को जितना जल्दी ही आजाद कर दे उतना ही अच्छा है।''** यह सिंह गर्जना करने वाले व्यक्ति थे लौह पुरूष वल्लभ भाई पटेल। उनका जन्म 31 अक्टूबर 1875 ई० को गुजरात के पेहलाद लातुके के करमसद गाँव में हुआ था उनके पिता का नाम झबेर भाई पटेल और माता का नाम लाडबाई था। बचपन में उनकी आँख के पास फोड़ा निकल आया। किसी ने सलाह दी कि लोहे की गर्म सलाख से फोड़ा फूट जाएगा। सलाख गर्म की गई परन्तु किसी के साहस न कर पाने पर बालक वल्लभ ने स्वयं ही उसे लेकर फोड़े में धँसा दिया। वल्लभ भाई जीवन भर साहसी रहे।

**गौरव कुमार**
कक्षा-xll

## ( सफलता के 5 सूत्र )

1. गुण- न हो तो रूप व्यर्थ है।
2. विनम्रता- न हो तो विद्या व्यर्थ है।
3. उपयोग- न हो तो धन व्यर्थ है।
4. साहस- न हो तो होशियारी व्यर्थ है।
5. भूख- न हो तो खाना व्यर्थ है।

**नाम- जितेश**
कक्षा- अष्टम

# देश के प्रति चिन्तन की आवश्यकता

आज के गुजरते इस भयानक दौर में भारत की स्थिति अत्यन्त खस्ता हो चुकी है। भारत के अन्दर अनेक विदेशी कम्पनियाँ अपना प्रभुत्व जमाए हुए हैं और भारतीयों को भी उन्हीं कंपनियों के उत्पाद रास आ रहे हैं। जिसका परिणाम भारतीय अर्थव्यवस्था पर बहुत ही बुरी तरह पड़ रहा है और हम जानते हैं कि ''विश्व मुद्रा कोष'' अर्थात् विश्व बैंक का भी भारत बहुत कर्जदार है। इसी कारण भारत की मुद्रा डॉलर की अपेक्षा गिरती जा रही है जिससे आर्थिक-अर्थव्यवस्था को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। आजादी के समय रुपया लगभग डॉलर के बराबर था पर 66-67 वर्षों में ही रुपया डॉलर की अपेक्षा कम हो गया है। डॉलर लगभग 62 रु० के बराबर है। प्रत्येक नागरिक में पश्चिमी सभ्यता का गहरा रंग दिखाई पड़ रहा है अर्थात् आज के समय मे भारतीय नागरिक अपनी संस्कृति को भूलता जा रहा है और अपनी मातृभाषा को तुच्छ व अंग्रेजी आदि भाषाओं को ज्यादा महत्व देता है यह भी आज बहुत बड़ी समस्या का कारण है गिरती भारतीय अर्थव्यवस्था में। भारत अपना वसंत खो पतझड़ में प्रवेश कर चुका है मेरे कहने का आशय आप समझ ही गये होंगे। भारत में आज आवश्यकता है भारत के नेताओं में अपने देश के प्रति सकारात्मक व उच्च सोच की और देश की जनता के बारे में व देश किस दिशा में खड़ा है इसके बारे में गहन चिन्तन की । मेरा मूल सन्देश यही है कि पश्चिमी सभ्यता को छोड़ अपनी संस्कृति को वास्तविक जीवन में उतारो और ज्यादा से ज्यादा साधारण जीवन जियो।

**नाम- विनित आर्य**
कक्षा-दशम

# शाकाहार क्यों?

हर साल हजारों एकड़ भूमि पर आबाद घने हरे-भरे वनों को पशुओं की चरागाह बनाने के लिए जला दिया जाता है। पशु-पालन के लिए चरागाहें बनाने के उद्देश्य से बड़े-बड़े, मजबूत तथा सुन्दर पेड़ों को काट दिया जाता है। यह काम इतने बड़े पैमाने पर किया जाता है कि अब तो यह पूरे विश्व की जलवायु को प्रभावित करने लगा है। इसके अतिरिक्त उन स्थानों पर जहाँ पानी की कमी है, पशु और मुर्गी-पालन के लिये मांस उद्योग के लिए हजारों गैलन पानी प्रयोग में लाया जाता है। इस प्रकार बाजार-मंडी की माँग को पूरा करने के लिए, दिन प्रतिदिन बढ़ता हुआ मछली-उद्योग आश्चर्यजनक रूप से समुद्रों के पर्यावरण को प्रभावित कर रहा है। हर साल 'टयूना' मछली को पकड़ने के लिए हुए जालों में हजारों डॉल्फिन्ज (एक प्रकार की मछली) मर जाती हैं। आज तक अनगिनत जल-जीव जातियाँ लुप्त हो गई हैं और कई लुप्त होने की कगार पर हैं। पर्यावरण की दृष्टि से तथा सामाजिक तौर पर, हम इसकी बहुत बड़ी कीमत चुका रहे हैं। यह नैतिक रूप से गलत है स्वास्थ्य के दृष्टि कोण से अनावश्यक और हानिकारक है। साथ ही साथ पशुओं, मछलियों, मुर्गियों तथा अनेक अण्डों से अपना भोजन जुटाना हमारे लिए बहुत खर्चीला भी है। हम अपनी प्रोटीन की आवश्यकता कम खर्च से अधिक सरलता से शाकाहारी खाद्य पदार्थों से पूरी कर सकते हैं। ऐसे पशुओं पर, जंगलों पर, अपने आप तथा धरती पर कोई बुरा असर भी नहीं पड़ेगा। पशुओं के मांस में विद्यामान विषाणु तथा रोगों के कीटाणु मनुष्यों में बीमारियाँ फैलाते हैं। मांसाहारी भोजन में यूरिक एसिड की अधिक मात्रा मनुष्य के शरीर में ऐसा विष भर देती है। जिसको निकाल पाना बहुत कठिन होता है। हम अपने शरीर का ध्यान से अध्ययन करें तो हम पाएँगें की प्राकृतिक रूप से हमारे शरीर की रचना मांस खाने के लिए नहीं बनी है। हमारे दाँत व नाखून माँस भक्षी पशुओं के समान नहीं हैं और माँस भक्षी पशुओं के विपरीत हमारी आंतें लम्बी हैं। इस कारण मांसाहार द्वारा अन्दर जमा हो जाने वाले विष को बाहर निकालने की हमारी प्रकिया बहुत धीमी है। जो हमें संकट में डाल सकती है। ठीक उसी प्रकार यदि हम अपने ऊपर ऐसे कर्मों के भारी बोझ को रखते जाएँगे जो हमें रचना के निम्न स्तर पर रोके रखेंगे तो हमारे लिए आध्यात्मिक उन्नति करना असम्भव हो जाएगा।

**नाम- अर्जुन**
एकादश

# गणित का जादू

- कोई सी भी तीन अकों की संख्या लो जैसे-197
- अब इसे उल्टा लिखो-791
- छोटी संख्या को बड़ी संख्या से घटाओ- 791-197=594 शेष
- अब प्राप्त संख्या को उल्टा करो-495
- अब दोनों संख्याओं को जोड़ दो- 594+495=1089 उत्तर
- आप पूछेंगे इसमें चमत्कार वाली क्या बात है?
- चमत्कार वाली बात यह है कि तुम कोई सी भी तीन अंकों वाली संख्या को लो उसका उत्तर 1089 ही आयेगा।
- मगर यह ट्रिक उन संख्या पर लागू नहीं होती जो उल्टी सीधी एक सी हों जैसे-141, 252 आदि।
- अगर शेष करने पर तुम्हारे पास 99 संख्या आये तो ध्यान रखो कि संख्या 99 की जगगह 099 लिखें।
- अत: इसका उल्टा 990 होगा।
- जैसे तुमने चुनी संख्या-112
- इसका उल्टा होगा-211
- छोटी संख्या को बड़ी संख्या से घटाने पर- 211-112=099
- इसका उल्टा करो 990+099=1089

**नाम-शिवम्**

कक्षा- अष्टम

## विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता का कारण

विद्यार्थियों की अनुशासनहीनता का मुख्य कारण माता-पिता की ढिलाई है। माता-पिता के संस्कार ही बच्चों पर पड़ते हैं। बच्चों की प्राथमिक पाठशाला घर होता है। उसके संस्कार घर से ही खराब हो जाते हैं। पहले तो प्यार के कारण माता-पिता कहते नहीं, वह जहां चाहे बैठें और जहाँ चाहे खेलें, जो मन में आये वो करें। जब हाथी के दांत बाहर निकल आते हैं, तो उन्हें चिंता होती है, फिर वो अध्यापकों की आलोचना करना आरम्भ कर देते हैं। दूसरा कारण आज की शिक्षा प्राणली है, जिसमें नैतिक या चारित्रिक शिक्षा को कोई स्थान नहीं दिया जाता है। पहले विद्यार्थी को दंड का भय बना रहता था, पर अब आप विद्यार्थी को हाथ नहीं लगा सकते, क्योंकि शारीरिक दंड अपराध है केवल जबानी जमा-खर्च कर सकते है। इसमें विद्यार्थी बहुत तेज होता है, आप एक कहेंगे, वह आप को चार सुनाएगा। पश्चिमी संगीत, नृत्य तथा चलचित्रों ने भी विद्यार्थी का बेड़ा-गरक करने में कोई कमी नही छोड़ी है। इनके कारण उनमें चरित्रहीनता, उच्श्रृंखलता इस हद तक बढ़ रही है कि इस ओर ध्यान नही दिया गया, तो देश का भविष्य अन्धकारकपूर्ण हो जाएगा।

**नाम-अर्पण**
कक्षा-द्वादश

## ऋषि दयानन्द महात्म्य

जो था अकेला दुनिया से, मैं गीत उसी के गाता हूँ।
ईश्वर ही शक्ति जिसका रक्षक था, दयानन्द की बात बताता हूँ।
जो था अकेला दुनिया से .......................................

आडम्बरों के बदले ने वेदों के सूर्य को ढांप लिया
छल व कपट के माध्यम से धूर्तों ने बड़ा ही काम लिया
इन सब को तूने दूर किया-किया ये सोच के मैं हर्षाता है।
ईश्वर ही जिसका रक्षक था .......................................

गऊ माता के ऊपर ऋषिवर तूने बडा उपकार किया
गौ विश्वास मातार: यह मन्त्र वेद से तुमने दिया।
ईश्वर ही जिसका रक्षक था .......................................

**नाम - कृपा शंकर**
कक्षा- सप्तम

## 'गणगीत'

यही मंत्र हो यही साधना
भारत भव्य बनाना है
तन्त्र स्वदेशी मंत्र स्वदेशी
भाव स्वदेशी लाना है
कामधेनु सी पूज्य धरा यह।
अन्नपूर्ण रत्नों की खान,
याचकता का भाव मिटाकर,
अपना भारत बने महान।
कठिन परिश्रम कर धरती पर,
नन्दन बन सरसाना है।
अपना कृषि उद्योग बढ़ेगा,
गाँव-गाँव होगी खुशहाली
गाँव गरीब किसान उठेगा,
घर-घर में होगी दिवाली
ज्ञान और विज्ञान बढ़ाकर,
सुख और समृद्धि लाना है।
अपना देश विदेश के आगे,
अब न कभी फिर हाथ पसारें
स्वाभिमान का भाव जगाकर,
राष्ट्र भक्ति का भाव निखारें
अपने त्याग तपस्या द्वारा,
राम-राज्य फिर लाना है।
शिक्षक, श्रमिक, कृषक, व्यापारी
ब्र० ने ललकरा है
भारतीय हम, भारत माँ है
भारतीयता नारा है
विश्व गगन पर भगवा ध्वज,
फिर लहर-लहर लहराना है।

**नाम- अंकित** , कक्षा नवम अ

## ( देशगान )

## 'सुधा'

कण-कण में भगवान है
कण-कण में भगवान है।
वेदों का यह देश हमारा सुन्दर स्वर्ग समान है
इसकी नदियों में अमृत कण-कण में भगवान है।
यहीं प्रथम ब्रह्म ने अपनी
सृष्टि का निर्माण किया।
और सदा आवास बनाकर
जगती का निर्माण किया।
विध्यं , हिमाचल ,यमुना, गंगा, जिसे मिले वरदान हैं
इसकी नदियों में अमृत कण-कण में भगवान है।
सप्त सिंधु के बीच शेष
शैय्या पर हो उसका आसन।
यहीं बैठकर विष्णु जगत पर
करते हों अपना शासन।
इससे बने पुजारी हम सब करते नित गुनगान है।
इसकी नदियों में अमृत कण-कण में भगवान है।
गिरि श्रृंगो की अचल श्रृंखला
देवों का नित वास है
हंस जहाँ जल-क्रीड़ा करते
शिव शंकर का वास हो
उसके ताल भरे ताण्डव में, भरे अनेक विधान हैं
इसकी नदियों में अमृत कण-कण में भगवान है।

**नाम-सर्वजीत**
कक्षा नवम ब

## भारत आजाद

आजादी के बाद देखो, बदल सके न हम
हम पिताजी को डैडी कहते,
माताजी को मॉम
आजादी के बाद देश में,
हमने आग लगाई है।
कमजोर हम बने तभी तो,
कमर तोड़ महँगाई है।
काम हम अपना करते नहीं,
नहीं करने देते हैं।
कर्तव्यों पर लेकिन भाषण चौड़े देते हैं।
कौन स्वार्थी कौन भला है?
यह अब कैसे छाँटें हम
खुद का होते अगर भलो,
गला और का काट दें हम।

**नाम- सौरभ**
कक्षा- सप्तम

## मातृभाषा

जिस भाषा में रोते-हँसते उसी भाषा में गाएँ
और उसी में ज्ञानार्जन कर आगे कदम बढ़ाएँ
सदा मातृभाषा ही सबका सच्चा साथ निभाती
साथ जन्म के पैदा होती साथ मृत्यु के जाती
जो अपनी भाषा के बल पर है पहचान बनाते
वे ही कोटि-काटि जनता के उर में आसन पाते
दिल से दिल जोड़ सके जो वह ही अपनी भाषा
अपनी भाषा के विकास की गढ़ें नहीं परिभाषा
पढ़ें दूसरी भाषाएँ, पर उन्नति करें शिखर को छू ले
अपनी भाषा अपनी माँ सी आदरणीया प्यारी
अनुदिन इसका मान बढ़ाएँ विनती यही हमारी।

**ब्र0 हर्षित**
कक्षा - सप्तम

## लड़कियाँ

लड़के का है मान जगत में लड़की का कोई मान नहीं।
ऐ मेरे भगवान बता दे, लड़की क्या इन्सान नहीं।।
जिस घर पैदा होता है लड़का खुशियाँ खूब मनाते हैं।
नारी शुभ मंगल गाती, गोले दागे जाते हैं।
वहीं जो लड़की जन्मे उसका तो सम्मान नहीं।।
ऐ मेरे भगवान बता दे लड़की क्या इन्सान नहीं,
लड़के को स्कूल भेजकर, शिक्षा उसे दिलाते हैं।
बेचारी भोली लड़की पर घर का काम कराते हैं।।
बहू बराबर होती लड़की, जिस घर में भेजी जाती है।
हाय दहेज के पीछे लड़की, अपनी जान गँवाती है।।
लड़की ही थी इन्दिरा गाँधी, भारत का ऊँचा नाम किया।
लड़की ही थी झाँसी की रानी, जिसने महा संग्राम किया।।
किसी भी लड़की को देखो, होता क्यों सम्मान नहीं।
ऐ मेरे भगवान बता दे लड़की क्या इन्सान नहीं।।

**नाम- अरुण कुमार आर्य**
कक्षा- नवम अ

# आजादी के 66 वर्ष
## (तब और अब)

रोक सकता  एक तिनका, वेग कब सैलाब का,
रोक सकता सूर्य कब तक, ये अंधेरा रात का
चल पड़ी क्रान्ति साथ ले इस मन्त्र को।
नष्ट करने के लिए हमेशा के लिए इस तंत्र को।
सिर्फ सैनिक नहीं सामने लड़ जाने को।
संग नर नारी बहुत थे मारने मर जाने को,
अंत कर डाला तभी उस क्रूर सत्ता तंत्र का।
तब था फल पाया सभी ने, विकट भीषण द्वन्द्व का,
जान डेढ़ लाख ने दी इस फतह को पाने को।
निज, खून से उन्होने रंगा आजादी के परवाने को,
परतंत्र थे हम उस समय, ये बात बिल्कुल सत्य है।
पर आज के परिपेक्ष्य कैसे कहे यह असत्य है।
निज आस्था पर हो रहे आघात को कैसे कहें,
हम मौन रहकर के कहो आघात ये कब तक सहें
सरकार यदि यह कह रही है राम रावण झूठ है।
इस का कारण यह है हिन्दुओं में फूट है
आज ले संकल्प हम अग्नि को साक्षी मानकर।
नष्ट कर देंगे सदा के लिए हम इन्हें पहचान कर,
आज भीषण युद्ध वो रावण की फिर से उपज।
तब अंत में निर्णय करेगा युद्ध का भीषण सफर।

******

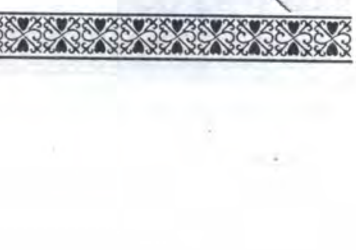

# माँ-बाप को भूलना नहीं

भूलो सभी को मगर माँ-बाप को भूलना नहीं।
उपकार अगणित हैं उनकी इस बात को भूलना नहीं।।

पत्थर पूजे गए, तुम्हारे जन्म के खातिर अरे।
पत्थर बन माँ-बाप का दिल कभी कुचलना नहीं।।

मुख का निवाला दे अरे जिसने तुम्हें बड़ा किया।
अमृत पिलाया तुमको जहर उनके लिए उगलना नहीं।।

कितने लड़ाये लाड़ सब अरमान भी पूरे किये।
पूरे करो अरमान उनके बात कभी भूलना नहीं।।

लाखों कमाते हो भले, माँ-बाप से ज्यादा नहीं।
सेवा बिना सब राख है, मद में कभी फूलना नहीं।।

सन्तान से सेवा चाहो, सन्तान बन सेवा करो।
जैसी करनी, वैसी भरनी न्याय यह भूलना नहीं।।

सोकर स्वयं को गीले पर, सुलाया तुम्हें सूखी जगह।
माँ की ममतामयी आँखों को भूलकर भिगोना नहीं।।

जिसने बिछाये फूल थे हर दम तुम्हारी राहों में।
उस राहबर के राह के कंटक भी बनना नहीं।।

धन तो मिल जायेगा मगर माँ-बाप क्या मिल पायेंगे।
पल-पल पावन उन चरणों की चाह कभी भूलना नहीं।

भूलो सभी को मगर माँ-बाप को भूलना नहीं।
उपकार अगणित हैं उनकी इस बात को भूलना नहीं।।

**नाम- निशान्त**
कक्षा-सप्तम

++++++

## पर्यावरण बचाओ

पर्यावरण बचाओ, भैया पर्यावरण बचाओ
आज समय की माँग यही है, पर्यावरण बचाओ
ध्वनि, मिट्टी, जल, वायु आदि सब, पर्यावरण हमारे,
जीव जगत के मित्र सभी ये जीवन देते सारे,
इनसे अपना नाता जोड़ो, इनको मित्र बनाओ। पर्यावरण बचाओ।
तब तक जीव है जगत में, जब तक जग में पानी,
जब तक वायु शुद्ध रहती है, सीधी मिट्टी रानी,
तब तक मानव का जीवन है, यह सब को समझाओ। पर्यावरण बचाओ।
हरियाली की महिमा समझो, वृक्षों को पहचानो,
ये मानव का जीवन दाता, इनको अपना मानो,
एक वृक्ष यदि कट जाए तो, ग्यारह वृक्ष लगाओ। पर्यावरण बचाओ।
जीव जगत की रक्षा करना, अब कर्त्तव्य हमारा,
शोर और मिट्टी का संकट, दूर करेंगे सारा,
एक वृक्ष हम नित रोपेंगे, आज शपथ ये खाओ। पर्यावरण बचाओ।

**सागर, श्रीकान्त- हर्षित**
कक्षा-सप्तम

## करके तो देखो

मिट्टी के खिलौनों को टूटते आपने जरूर देखा होगा पर कभी रिश्तों के टूटने के दर्द को महसूस करके तो देखो। परायों को पराया व्यवहार करते तो आपने जरूर देखा होगा परन्तु अपने के पराये हो जाने का गम को महसूस करके तो देखो। मृत शिशु की माँ को बिलखते आपने जरूर देखा होगा। परन्तु कभी इस गम को महसूस करके तो देखो। भिक्षुक के बच्चे को हाथ फैलाए सड़क पर जरूर देखा होगा। परन्तु कभी उसकी लाचारी और बेबसी को महसूस करके तो देखो। समुद्र की गहराई में उतरते लोगों को जरूर देखा होगा, परन्तु कभी अपने हृदय की गहराई में उतर कर तो देखो। प्रत्येक सुबह सूर्योदय होते तो आपने जरूर देखा होगा। परन्तु कभी अपने हृदय में मानवता का उदय करके तो देखो।

**नाम- निशान्त**
कक्षा-अष्टम

## गुरुकुल के संस्कार

मैं गुरुकुल का ब्रह्मचारी, हूँ मैं एक सदाचारी।
मेरी सिर्फ यह पुकार , मिलना न गुरुकुल जैसा प्यार।
कही नही ऐसे संस्कार गुरुकुल में जो आता है।
शाकाहारी बन जाता है जीवन सफल बनाता है।
यहाँ गौ माता की होती सेवा, मिलता दूध, दही और मेवा।
हर कोई बनना चाहे ऐसा, गुरुकुल के ब्रह्मचारी जैसा।
मैं करता हूँ यही आह्वान, गुरुकुल का हो जग में नाम।
मेरी सिर्फ यही पुकार, मिलता न गुरुकुल कांगड़ी जैसा प्यार।

**नाम- ब्र० अभिषेक**
कक्षा- नवम

## हमारा विद्यालय

संस्था हो उन्नत यही हमारा नारा है।
गुरुकुल कांगड़ी की संज्ञा से हमने इसे पुकारा है।
अपने सीमित ज्ञान कोष से हमने यही विचारा है।
भारत वर्ष में सबसे उत्तम शिक्षा केन्द्र हमारा है।।
अवसर मिला यहां पढ़ने का, यह सौभाग्य हमारा है।
भारत वर्ष में सबसे उत्तम शिक्षा केन्द्र हमारा है।।
कई स्थानों के छात्र यहाँ शिक्षा पाने आते हैं।
अपने शिक्षक का आशीर्वाद पाकर जीवन सफल बनाते हैं।।
शिक्षकों की कृपा से सबने अपना जीवन संवारा है।
भारत वर्ष में सबसे उत्तम शिक्षा केन्द्र हमारा है।।
श्रेष्ठ गुरूओं से शिक्षा पाकर जब से हम ज्ञानी बनें
अनुशासन, शिक्षा, खेलकूद, पढ़ने में हो रहे पूरे सभी सपने।।
यह गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के छात्रों का नारा है।
भारत वर्ष में सबसे उत्तम शिक्षा केन्द्र हमारा है।।

**नाम- हर्ष**
कक्षा दशम

## आनी-जानी दुनियाँ

ये दुनिया तो आना-जानी है,
हर एक की अपनी कहानी है।
हर तरफ मजहब का रेला है,
यह संसार सुख दुख का मेला है।
हर शख्स के आँख में पानी है,
ये दुनिया तो आना-जानी है।
रिश्वत घूसखोरों का चेला है,
इस भीड़ में ईमान अकेला है।
सच्चाई तो अब बेमानी है,
झूठ की पूरी जवानी है।

ये दुनिया तो आनी-जानी है,
नेकी ने बुराई को झेला है।
मासूम खून के रंग से खेला है,
अब शान्ति की क्रान्ति लानी है।
प्रेम की तान सुनानी है,
चाहत की गंगा बहानी है।
ये दुनिया तो आना-जानी है।

**नाम- विनीत आर्य**
कक्षा- दशम

## गुरुकुल माता की मिट्टी

गुरुकुल माता तेरी धरती पर मैं अपना शीश झुकाऊँ।
ओ! माता तेरी मिट्टी, मस्तक अपने लगाऊँ।।
जी जीओं गुरुकुल! जी जीओं गुरुकुल! जी जीओं गुरुकुल!
तुमसे कैसे शर्माऊँ, ओ माता तुमसे कैसे शर्माऊँ।।
काश कि माता मैं तेरी मिट्टी में मिल जाऊँ।
इस जीवन में बढ़कर, अपनी किस्मत आजमाऊँ।।
विद्या भी तेरी, वेद भी तेरे और क्या गीत मैं गाऊँ।
अगर कोई गुण हो मुझमें, शरण तेरी मैं पाऊँ।।
गुरुकुल माता सुन्दरता तेरी, ये चमन भी है तेरा।
जिस सुगन्ध को मैं नगर-नगर फलाऊँ।।
ओ माता मिट्टी तेरी अपने शीश पे लगाऊँ।।

**नाम - नरेन्द्र**
कक्षा- षष्ठ

## बच्चो

बस इतनी सी बात मान लो
बच्चों! आप हमारी
खुद को अर्जुन मानो तुम
शिक्षक को कृष्ण मुरारी।

रंग लाएगी फिर लाजिम यह
सुन्दर सोच तुम्हारी,
सुअवसर भागेंगे पीछे-पीछे बस
बने भिखारी।

बस इतनी-सी बात मानलो
बच्चों ! आप हमारी....।

एक तुम्हारी आँख भौतिकी जो
पढ़ाते हैं वीरेन्द्र दीक्षित जी,
दूजे बने केमिस्ट्री जो
पढ़ाते श्री वेदपाल आर्य जी
सुनने वाला दंग रह जाए
अशोक जी, बृजेश जी,
राम दयाल जी की हिस्ट्री।

खून की जगह रगों में दौड़े
केवल गणित तुम्हारी, जो पढ़ाते
जितेन्द्र जी, रणवीर जी,
हिन्दी पढ़ाते प्रकाशवीर जी, टीकम जी
इंग्लिश पढ़ाते हुकुम चन्द जी, विपुल जी
और बायो पढ़ाते प्रदीप जी, अनुज जी
और संस्कृत पढ़ाते विजेन्द्र जी, योगेश जी
ये सारे विषय हैं, तुम्हें जान से प्यारे
बस इतनी सी बात मान लो बच्चो!
आप हमारी...............।

नैतिक शिक्षा बड़ी जरुरी
जो पढ़ाते ताऊ जी, अमर सिंह जी
जो है, जीवन का श्रृंगार यह
रोम-रोम में इसे बसाओ
खुशियों का आधार
यह "रुद्रप्रताप सिंह" जो
माता-पिता का करते सत्कार रहे
जीत रही उनकी मुट्ठी में
बाजी कभी न हारी
बस इतनी-सी बात मान लो
बच्चों! आप हमारी........।

सुअवसर भागेंगे पीछे-पीछे, बने भिखारी।

**नाम-रूद्रप्रताप सिंह**
कक्षा द्वादश

## गाँधीगिरी और अंग्रेजियत

गाँधीगिरी और अंग्रेजियत
फिर से टक्टर में है।
तभी तो हर नेता
डिवाइड एंड रूल के चक्कर में है।
कभी आरक्षण,
तो कभी आतंकवादी माफी का
मुद्दा उठा रहे है।
जनता को आपस में लड़वाकर,
उम्मीद से चार गुणा कमा रहे हैं
कभी जन्मदिन का डण्डा
तो कभी विदेशी यात्रा का फण्डा
सरकारी माल बटोर कर,
देश को खूब चूना लगा रहे हैं।
छा रही हैं विदेशी कम्पनियाँ,
इम्पोर्टेड सामान घर-घर में है।
कुल मिलाकर
गाँधीगिरी और अंग्रेजियत
फिर से टक्कर में है।

**नाम- मोहित**
कक्षा- एकादश

## इस देश का यारों क्या होगा

इस देश का यारों क्या होगा
इस देश का यारों क्या होगा
जिस देश का नेता ऐसा हो
जब चाहे रंग बदलते हों
वोटों की नीति करते हों।
परदेश में खाता रखते हों।
इस देश का यारों क्या होगा।
जहाँ कानून के अधिवक्ता हों
अपमानित होने का डर हो
जहाँ न्याय का व्यक्ति भटकता हो।
अन्यायिक मौज उड़ाता हो
इस देश का यारों क्या होगा।
जहाँ बिजली पानी का तोड़ा हो।
राशन भरपेट न मिलता हो
जो सच्चों पर ही पड़ता हो
इस देश का यारों क्या होगा।
जहाँ विद्वानों का सम्मान न हो
जो देश कर्ज में डूबा हो
मजदूर जहाँ का भूखा हो
राही काँटों पर चलता हो
इस देश का यारों क्या होगा।

**नाम निशान्त**
कक्षा- एकादश

## राष्ट्रीय एकता

कितना ही हल्ला कर उग्रवाद उद्दण्ड, खण्ड-खण्ड होगा मेरा देश अखण्ड।
मेरा देश अखण्ड भाई-भाई हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, पारसी या ईसाई।
अल्लाह, ईश्वर, गॉड या खुदा सभी है एक, अलग-अलग क्यों मानते खोकर बुद्धि विवेक।
खोकर बुद्धि विवेक जीव जितने है जग में, लाल रंग का खून मिले सबकी रग-रग में।
फिर क्यों छूत-अछूत ऊँच या नीचा मानें, हरा खून मिल जाए किसी में तो हम जानें।
लालच दुश्मन से मिले उसको ठोकर मार, जन्म लिया जिस देश मे उसको दीजिए प्यार।
उसे दीजिए प्यार घृणा की खाई पाटो, जिस डाली पर बैठे हो उसे कभी मत काटो।
बनकर के गद्दार बीज हिंसा के बोते, ऐसे मनुष्य पशुओं से भी बदतर होते।
जिनके सर पर चढ़ा है हत्या, हिंसा, खून, अक्ल ठीक उनकी करे आतंकी कानून।
आतंकी कानून, विदेशी राह पर भटके, जीवन कटे जेल में या फाँसी पर लटकें।
न्याय पालिका जब अपनी शक्ति दिखलाए, उग्रवादी आतंकवादी जड़ से मिट जाए।
सींक अकेली क्या करे पड़ी-पड़ी पछताए, मिल जाए जब झुण्ड में झट झाड़ू बन जाए।
झट झाड़ू बन जाए संगठन शक्ति दिखाए, दुश्मन रूपी कूड़े को बाहर पहुँचाए।

**नाम- शगुन**
कक्षा- द्वादश

## कुछ तो बाकी.......

कुछ तो बाकी रहने दो अवशेष को
और कहाँ तक बाँटोगे इस देश को
कहाँ- कहाँ तक बाँटोगे इस देश को
कुछ तो बाकी..................।

पहले टूटा हिन्दुस्तान से
फिर बिछुड़े नेपाल और भूटान से
बने देश फिर पाकिस्तान और बंगाल से
नफरत में हो गये सभी शैतान से
पागल पन में-2 भूले हर उपदेश को
कुछ तो .......................।1।

फिर-बाँटा हमने हिन्दुस्तान को
छिन्न-भिन्न कर दिया, सुनहरी शान को
अलग-अलग कर दिया, धर्म ईमान को
छिन रहे अब गुरूओं से भगवान को
अब तो छोड़ो-2 उन्मादी आवेश को
कुछ तो .....................।2।

तुम्हें स्वार्थ सत्ता से इतना प्यार है
लगता है मिलकर रहना दुश्वार है
कदम-कदम पर गोली बम कटार है
बाढ़ खेत खाने को तैयार है
अब तो छोड़ो-2 छोड़ो अलग प्रदेश को
कुछ तो ........................।3।

**नाम- दीपक**
कक्षा षष्ठ

## शिक्षक का सम्मान

शिक्षक एक मोमबत्ती है
खुद जलकर देता प्रकाश
उसके समान नहीं कोई दूजा
न धरती पर, न आकाश में

ज्ञान दीप की ज्योति जलाकर
मन भी उज्ज्वल करते हैं
हमें देकर शिक्षा
जीवन सुख से भरते हैं

शिक्षक है ईश्वर से बढ़कर
सब सन्त यही बतलाते हैं
क्योंकि शिक्षक शिष्यों को
लक्ष्य से मिलवाते हैं।

जीवन में यदि बनना है कुछ
तो तुम ये नेक काम करो
शिक्षक का सम्मान करो
शिक्षक का सम्मान करो

**नाम- मोहित**, कक्षा नवम् (अ)

## प्रो0 इन्द्र विद्यावाचस्पति

लेखक, पत्रकार, इतिहासकार, स्वंतत्रता-सेनानी तथा वैदिक धर्म के अनन्य अनुयायी इन्द्र विद्यावाचस्पति जी स्वामी श्रद्वानन्द जी के कनिष्ठ पुत्र थे। इनका जन्म 1 नवम्बर 1889 में ग्राम तलवन (जिला जालंधर) मे माता शिवदेवी के गर्भ से हुआ। पं० हरिश्चन्द्र इनसे दो वर्ष बड़े थे। यह भी एक संयोग था कि दोनों के पिता लाला मुंशीराम और पं० मोतीलाल नेहरू कॉलेज के सहपाठी और घनिष्ठ मित्र रहे थे। पं० इन्द्र जी को भी पं० जवाहरलाल नेहरू की मैत्री और स्नेह प्राप्त हुआ था बालक इन्द्र अभी दो ही वर्ष के थे कि उनकी माता शिवदेवी का निधन हो गया इन्द्र जी का पालन-पोषण उनकी ताई जमुनादेवी ने किया। इन्द्रजी की प्रारभिक शिक्षा जांलधर के हाई स्कूल में हुई। 1902 में जब हरिद्वार के निकट गंगा के परले पार बिजनौर जिले के कॉगड़ी ग्राम में महात्मा मुंशी राम ने गुरूकुल की स्थापना की, उसमें प्रथम प्रवेश अपने पुत्रों हरिश्चन्द्र और इन्द्र का ही कराया।

**नाम- रितेश, रोहित**

कक्षा- सप्तम्

# पहेलियाँ

1. बादल लेकर उड़ती हूँ, नहीं किसी को दिखती हूँ।
2. मेरे ऊपर नदियाँ बहती, जिनमें उठती लहरें। कोई मुझ पर बाग लगाता, कोई करता खेती, तो सबको सब कुछ देती, पर किससे क्या लेती।।
3. एक गली इतनी छोटी, जिसमें रखी है बहुत सी लकड़ी।
4. दो भाई एक रंग के, एक बिछुड़ जाये तो दूजा काम न दे।
5. बीमार नहीं रहती, फिर भी खाती है गोली। बच्चें बूढ़े डर जाते, सुन इसकी बोली।
6. एक पहेली मैं बुझाऊँ, सिर को काट नमक छिड़काऊँ।
7. चार ड्राइवर एक सवारी उसके पीछे जनता सारी।
8. मीठा हूँ सब करें पसन्द, मोटी दीवारों में बन्द। मेरा पेड़ खूब है फलता कभी नहीं वह जलता।
9. मैनें सीखा सेवा करना, परहित में मर मिट जाना। मैल पसीने का है दुश्मन पानी से मेरा याराना।।
10. अन्त कटे खेत जोतता मध्य कटे तो बनूँ पवन। हर घर में खाया जाता हूँ शादी हो या करो हवन।।
11. देश की मशाल था वह भारत माँ का लाल था वह। अंग्रेजों को हराने वाला हंसकर फाँसी पर चढ़ जाने वाला।

| | |
|---|---|
| 1. हवा | 2. भूमि |
| 3. माचिस | 4. जूता |
| 5. बन्दूक | 6. खीरा |
| 7. मुर्दा | 8. केला |
| 9. साबुन | 10. हलवा |
| 11. सरदार भगत सिंह | |

**नाम- राधे श्याम**
कक्षा- अष्टम

# पहेलियाँ

- देवनागरी है लिपि, कहलाती सुरभाषा, हिन्दी की लगती नानी, जो न समझे वह अज्ञानी।

**उत्तर - संस्कृत!**

- तीन अक्षर का मेरा नाम, पानी पीकर करता काम। आठ महीने आराम करूँ, बस गर्मी में काम करूँ।

**उत्तर - कूलर!**

- राजा की बेटी बारह पास करे। बारह पास करे तो एक में पढ़े।

**उत्तर - घड़ी!**

- मैं हरी मेरे बच्चे काले मुझे छोड़ मेरे बच्चे खाले।

**उत्तर - इलायची!**

- कटोरे में कटोरा बेटा बाप से भी गोरा।

**उत्तर - नारियल!**

**नाम- दर्शन**
कक्षा-अष्टम

# पहेलियाँ

1. मेरा ऐसा धुआँ जो सबके मन को भाए। गन्ध मेरी जो घर आँगन महकाए।
2. एक फल जो सब बच्चे खाते है कोई मधुर कोई कड़वा पाते हैं।
3. चंदा सा मुखड़ा सब तन जख्मी, बिना पैर वह चलता है। सबका प्यारा राज दुलारा साल-साल में बढ़ता है।
4. धूप लगे तो सूखे नहीं, छाँव तो मुरझाए। कहो कौन सी वस्तु है, पवन लगे मर जाए।
5. रंग है पीला, तपाया तो छिला, पीटा तो फैला, कीमत है छैला।

1. अगरबत्ती
2. परीक्षा फल
3. पैसा
4. पसीना
5. सोना

**तुषार,** कक्षा सप्तम

## पहेलियाँ

1. एक मुर्गी आती है, चल-चलकर रुक जाती है। चाकू लाओ गर्दन पर, फिर चलने लग जाती है।

**पेन्सिल**

2. पेट में अंगुली सिर पर पत्थर, जल्दी बताओ उसका उत्तर-

**अँगूठी**

3. प्यार करे तो घर चमका दे, वार करे तो ले ले जान।

**बिजली**

4. कहती है रात की रानी, आँखों से निकले पानी।

**मोमबत्ती**

5. मैं अलबेला कारीगर, काटूँ काली घास। राजा, रंक व सिपाही, सिर झुकाते मेरे पास।

**नाई**

6. काली माँ लाल-लाल बच्चे, आगे चले माँ पीछे चले बच्चे।

**ट्रेन ( रेलगाड़ी )**

**नाम- आशुतोष सिंह**
कक्षा- अष्टम

## पहेलियाँ

1. तीन पैर की तितली तेल से नहा कर निकली
2. मैं हरी मेरे बच्चे काले।
3. जरा सी काटो भटक सी जाये गजभर नाड़ा लटकता जाये
4. हरा मैदान लाल घर, उसमें बैठे काले चोर

1. समोसा
2. इलायची
3. सुई- धागा
4. तरबूज

## पहेलियाँ

1. मारने को डण्डा, खाने को मिठाई, हमने खेत में उगाई।
2. देखो जादूगर का कमाल, हरे को कर दे पल में लाल।
3. एक वीर, गाना बजाकर, मारे तीर।
4. ऊपर से गिरा कालिया, मैंने उठाकर खा लिया।
5. टेढ़ी-मेढ़ी गली, रस से भरी

**1. गन्ना**
**2. पान**
**3. मच्छर**
**4. जामुन**
**5. जलेबी**

**नाम- तुषार,** कक्षा-सप्तम

# सच्ची मित्रता

एक गधा व सियार गहरे दोस्त थे। दोनों अपना अधिकांश समय एक साथ गुजारते थे। एक दिन वे दोनों चाँदनी रात में एक खेत में ककड़ियाँ खाने पहुँचे। एक दिन चाँदनी रात, ऊपर से सुहाना मौसम-यह देखकर गधा सियार से बोला यार, ककड़ियाँ खाकर पेट तो भर गया। परन्तु आज इतना सुहावना मौसम है कि मेरा गाना गाने का मन कर रहा है। यह सुनकर सियार उसे सचेत करते हुए बोला नहीं-नहीं, तुम गाना मत गाना। अगर तुम्हारा गाना इस खेत के किसान ने सुन लिया तो आफत आ जायेगी। हर कार्य का एक उपयुक्त समय होता है। तुम मेरी सुरीली व मधुर आवाज से जलते हो। मैं तुम्हारी बातों में आकर खुद को गाना गाने से नहीं रोक सकता। इतना कहने के साथ गंधा मुँह उठाकर गाने लगा। गधे की रेंकने की आवाज किसान के कानों में जा पहुँची। वह गधे की खोज में लाठी लेकर आया। किसान को डण्डा लेकर आते देख सियार भाग खड़ा हुआ परन्तु गधा उसकी पकड़ में आ गया। उसने गधे की धुनाई शुरु कर दी। बेचारा गधा वहाँ से किसी तरह जान बचाकर भागा। तब सियार भी उसके पीछे हो लिया, काफी दूर जाकर जब दोनों मिले तो गधा बोला मैंने तो गाकर अपनी खुशी जाहिर की थी। ऐसा क्या गलत किया। सियार दूर झाड़ियों के पीछे छुपकर यह सब देखता रहा। तुम ठीक कहते हो सियार भाई। मैंने तुम जैसे सच्चे मित्र की सलाह नहीं मानी। तभी मेरा ऐसा हाल हुआ। मुझे माफ कर दो। हर काम का एक अपना समय होता है। हमें उपयुक्त समय देखकर ही काम करना चाहिए। अब गधे को भी यह समझ आ गया था कि सच्चे मित्र की सलाह जरूर माननी चाहिए। **नाम- हर्ष सिंह,**

कक्षा- षष्ठ

# मातृ-भक्त स्वाभिमानी

उन दिनों की बात है, जब आशुतोष मुखर्जी हाईकोट के जज और विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर थे। उनके मित्र उन्हें विलायत जाने की सलाह दिया करते थे, किन्तु उनकी माता ने उन्हें समुद्र यात्रा करने की अनुमति न दी, इसलिए उन्होंने यह विचार सर्वथा त्याग दिया। जब लार्ड कर्जन भारत के गवर्नर जनरल होकर भारत आये तो उन्होने एक दिन मुखर्जी को विलायत जाने की अनुमति प्रदान की।

इस प्रकार मुखर्जी ने कहा, मेरी माता की हार्दिक इच्छा नहीं है कि मैं विदेश प्रवास पर जाऊँ। यह सुनकर लार्ड कर्जन ने अपने पद का रौब झाड़ते हुए कहा जाकर अपनी माता से कहो, भारत के गवर्नर जरनल ने विलायत जाने की अनुमति प्रदान कर दी है। यह सुनकर मातृभक्त, स्वाभिमानी मुखर्जी ने तिल मिलाकर उत्तर दिया ''यदि ऐसी बात है तो मैं माननीय गवर्नर जरनल से पूछना चाहता हूँ, यदि विलायत नहीं गया तो आप मेरा क्या बिगाड़ लेंगे?''

गवर्नर ने कड़क आवाज में कहा 'मैं तुम्हें नौकरी से बरर्वास्त कर दूँगा।' यह सुनकर मुखर्जी पहले तो जोर से हँसे और बोले मैं अपनी माता की आज्ञा को भंग करके किसी और की आज्ञा का पालन नहीं कर सकता। फिर वह भारत का गवर्नर जनरल हो या उससे भी बड़ा कोई अधिकारी। इतना कहकर उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया।

**नाम- वेद प्रकाश**

कक्षा-द्वादश

# यज्ञ का महत्व

यज्ञ में प्रज्वालित होने वाली अग्नि भी हमें अनेक प्रकार से प्रेरणा देती है। अग्नि में मुख्य रूप से तीन गुण है प्रकाश, ताप और गति।

**प्रकाश**- यज्ञाग्नि हमें प्रकााशित होने का संकेत करती है यज्ञाग्नि केवल वस्त्र, पात्र, भवन वाहन, धन सम्पत्ति आदि भौतिक पदार्थों में ही प्रकाशित होने का संकेत नहीं करती, अपितु सत्य, दया, प्रेम, संयम ,त्याग, ताप, सेवा, ज्ञान-विज्ञान से अपने अन्तः करण व आत्मा को प्रकाशित करने की प्रेरणा देती है।

**ताप**- यज्ञाग्नि हमें प्रेरित करती है कि तापो और जलाओ। किसको? राग, प्रेम, द्वेष, ईर्ष्या, अहंकार, मद, स्वार्थ, मोह से सम्बधित अपनी कुवासनाओं को, जो हमें कुमार्ग की और प्रेरित करती है और दु:खी बनाती है।

**गति**- यज्ञाग्नि हम में भावना भरती है कि रूको नहीं, चलते रहो, बढ़ते रहो। बाधाएँ आयेंगी, कष्ट आयेंगे, साथी छूट जाएँगें, असफलता भी मिलेगी, फिर भी हताश एंव निराश न हो। नया उत्साह, नई प्रेरणा, नये संकल्प लेकर उठो, बढ़ो जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो, चलते रहो। यज्ञ के अन्त में ''सर्व वै पूर्णं स्वाहा'' सामग्री द्रव्य पदार्थ यज्ञ वेदी में डाल दिया जाता है। यह इस बात का बोध कराता है कि एक दिन इस नश्वर संसार में हमारा सम्बंध समाप्त हो जायेगा सब कुछ यहीं रह जायेगा, केवल राख बच जायेगी। इसलिए सांसारिक एवं भौतिक सुखों के भ्रम से बाहर निकलकर आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर रहें।

**'' भवन बन रहे हैं, पतन हो रहा है। वो झोपड़ी भी अच्छी जहाँ हवन हो रहे है''**

**नाम- देवेन्द**
कक्षा- अष्टम

# संस्कृत भाषा

शुद्ध और परिष्कृत भाषा को संस्कृत भाषा कहते हैं। इसी का नाम देवभाषा, देववाणी आदि हैं। यह भारत की एक अमूल्य और अनुपम निधि है भारत वर्ष का प्राचीन ज्ञान-भण्डार इसी भाषा में सुरक्षित है। वेद, उपनिषद्, दर्शन, रामायण, महाभारत, गीता आदि ग्रन्थ इसी भाषा में हैं। कुछ विद्वानों का यह भ्रम है कि संस्कृत भाषा केवल ग्रन्थों की ही भाषा थी इसका उपयोग केवल पठन-पाठन में ही होता था। जिस प्रकार आज-कल खड़ी बोली नामक साहित्यिक हिन्दी शिष्ट समाज के व्यवहार और उपयोग की भाषा है उसी प्रकार प्राचीन भाषा में संस्कृत भाषा शिष्ट-वर्ग के दैनिक व्यवहार की भाषा थी। यास्क के निरूक्त पाणिनि की अष्टाध्यायी और पतञ्जलि के महा भाष्य के अध्ययन से यह पूर्णतया स्पष्ट होता है कि उनके समय में संस्कृत दैनिक व्यवहार की भाषा थी। यास्क, पाणिनि ने वेदों की भाषा से इसको पृथक् करते हुए इसको 'भाषा' अर्थात दैनिक व्यवहार की भाषा कहा है। जिस प्रकार आज जन-साधारण में प्रचलित बोली साहित्यिक हिन्दी में मित्र है, उसी प्राचीन समय में जन-साधारण में व्यवहत भाषा को 'प्राकृत' कहते थे।

**नाम-चिराग**, कक्षा-दशम

# हंसी के क्षण

1. एक आदमी से भिखारी- अल्लाह के नाम पर एक रूपया दे दो। आदमी भिखारी से-चलो चलो कल लेना। भिखारी आदमी से - इस कल- कल के चक्कर में इस कॉलोनी में मेरे लाखों रुपये रह गये हैं।

2. भिखारी माताजी, थोड़ी सी मिठाई मिलेगी महिला- क्यों, रोटी से काम नहीं चलता। भिखारी- चल सकता है, परन्तु आज मेरा बर्थ- डे है।

4. रोहित- दादी, यह रस्सी अपनी जीभ से काट दो। बहन-बेवकूफ, रस्सी जीभ से कैसे कटेगी। रोहित- क्योंकि, कल ही तो मम्मी ने कहा था कि आपकी जीभ कैंची की तरह चलती है।

**नाम-रवि**

कक्षा- षष्ठम

# हंसना ही जीवन

1. देवेन्द्र (मालिक से)- अब हम यहाँ काम नहीं करेंगे। हमको यहाँ ऐसा खाना मिलता है जिसे कुत्ता भी नहीं खा सकता है। मालिक- ठीक है, अब से तुम्हें ऐसा खाना दिया जायेगा जिसे कुत्ता भी खा सकता है।

2. नवीन (नाकु से)- क्यों भाई नौकरी लगी कि नहीं या अभी भी मक्खियाँ मार रहे हो। नाकु- नही आज कल मच्छर मार रहा हूँ। मैंने मलेरिया विभाग में नौकरी कर ली है।

3. मम्मी (डाँटते हुए)- कमबक्त, प्लेट तोड़ दी, आने दे तेरे पापा को दिखाऊँगी। बेटा- वो पहले ही देख चुके हैं। उन्होंनें कहा था- आने दे तेरी मम्मी को दिखाँऊगा।

4. न्यायाधीश- तुमने कुछ दिन पहले 100 रूपये चुराये थे न। चोर- साहब, इस महंगाई के जमाने में सौ रूपये कितने दिन चलते हैं।

**नाम - अंकित**

कक्षा - अष्ठम

# शिक्षा का उद्देश्य

शिक्षा मनुष्य की आन्तरिक प्रवृतियों को विकसित करती है शिक्षा के द्वारा मनुष्य में विवेक शक्ति आती है जिसके द्वारा वह अपने कर्तव्य और अकर्तव्य को समुचित रुप में समझ पाता है शिक्षा ही मनुष्य की पाश्विक प्रवृत्तियों को दूर करके उसे मनुष्य बनाती है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है - मनुष्य में विवेकशक्ति जागृत करना, उसके चरित्र को शुद्ध और पवित्र बनाना, उसकी बौद्विक शक्ति का विकास करना शारीरिक, मानसिक,और आत्मिक उन्नति करना। शारीरिक, मानसिक, और आत्मिक उन्नति से मनुष्य की पूर्ण उन्नति होती है अत: तीनों का विकास आवश्यक है शिक्षा के द्वारा ही हमारा और हमारे देश का उद्धार हो सकता है शिक्षा के बिना जीवन अनर्थ है शिक्षा के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान भी आवश्यक है। शिक्षा की जो स्थिति होनी चाहिए वह अब भारत में नहीं है। भारतीयों की मातृभाषा हिन्दी की जगह विदेशी भाषा अंग्रेजी को अधिक उपयोग में लाया जा रहा है हिन्दी से ज्यादा अंग्रेजी को अधिक महत्व दिया जा रहा है इसलिये शिक्षा को सुधारना होगा ।

**नाम-आकाश**

कक्षा-दशम

# कथनी-करनी में समानता हो

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय की स्थापना प्रसिद्व संत स्वामी श्रद्वानंदजी ने की थी विश्वविद्यालय की स्थापना से पूर्व एक बार वे दिल्ली के एक राय साहब के घर चंदा मांगने पहुँचे । उद्देश्य था कि एकमुश्त रकम मिल जाती तो विश्वविद्यालय की इमारतों को खड़ा करने में सहयोग मिलता, पर राय साहब ने आर्थिक सहयोग देने के बजाय उनका अपमान करके घर से निकाल दिया। स्वामी श्रद्वानंद ने उसी दिन प्रण किया कि वह विश्वविद्यालय केवल निजी प्रयासों से खड़ा करेंगे। उन्होंने हरिद्वार वापस लौटकर अपना पुश्तैनी मकान बेच दिया और उससे प्राप्त सम्पत्ति गुरुकुल बनाने के लिये दान कर दी। गुरुकुल की स्थापना होते ही सबसे पहले अपने पुत्र को उसमें दाखिला दिलाया । स्वामी जी का कहना था कि -**''दान लेने का सच्चा अधिकारी वही है जिसने पहले सर्वस्व दान दिया हो''**

संत ऋषि प.श्री राम शर्मा स्वामी जी का उदाहरण देते हुए कहते थे कि ''जनता का सहयोग और देवताओं का अनुग्रह उन्हीं को मिलता है जिनकी कथनी और करनी में भिन्नता नहीं होती।''

**नाम- अमित, अंकित**

कक्षा- एकादश

# प्रेम ही जीवन का लक्ष्य है

चैतन्य महाप्रभु ने अपना समस्त जीवन मनुष्य को दुर्व्यसनों से मुक्त करके उन्हें होम व भगवद् भक्ति में लगाने का पुनीत कार्य के लिए समर्पित किया था। वह अपने भक्तों को उपदेश देते हुए यही कहा करते थे, न्यायपूर्वक और धर्मपूर्वक अर्थ का उपार्जन कर, अपने परिवार का लालन-पोषण करते हुए, भगवान संकीर्तन के बल पर मानव सहज ही में अपने लोकपरलोक को सफल बना सकता है। एक बार किसी जिज्ञासु भक्त ने महाप्रभु से प्रश्न किया कि भगवान् का साक्षात्कार कैसे किया जाए? इस पर उनका कहना था कि हमारा लक्ष्य भगवान की प्राप्ति नहीं है। भगवान का साक्षात्कार तो रावण, कंस और अनेक देवों का भी हुआ था। रावण, कंस ने तो भगवान श्रीराम व श्रीकृष्ण से तो आमने-सामने युद्व भी किया चारण-मुष्टिक नामक मल्लों ने भगवान से अखाड़े में कुश्ती लड़ते समय उनके अंग से अंग मिलाया था। हमारा लक्ष्य भगवान की प्राप्ति नहीं बल्कि उनके दिव्य प्रेम की प्राप्ति होनी चाहिए। वह कहा करते थे कि वैष्णवों और सन्त पुरुषों की सेवा भगवान की ही सेवा के समान है माया ग्रस्त जीवों को भगवद्-उन्मुख करना, यही उनके प्रति सच्ची दया है। सेवा, दुर्व्यसनियों की सेवा नहीं, उन पर दया करना चाहिए। महाप्रभु ने अपने निश्छल होम के माध्यम से असंख्य कुमार्गियों को दुर्व्यसनों से पाप से मुक्त करके उन्हें भगवान का अनन्य प्रेमी बनाया। वह कलयुग में भगवन्नास संकीर्तन को भक्ति व प्रेम का सबसे सरल साधन बताया करते थे।

**नाम- ध्रुव कुमार**
कक्षा- अष्टम

# प्रेरणा पथ

एक बार एक लड़का फटी-पुरानी कमीज पहने दो-तीन किताबें लिए कक्षा के बाहर खड़ा था । मास्टर जी ने कहा, तुम फिर लेट आए हो। वापस चले जाओ। जब करीब दो घंटे बाद मास्टर जी की नजर बाहर गयी तो वह हैरान हो गये। लड़का कहीं नहीं गया था और वह जो पढा़ रहे थे उसे ध्यान से सुन रहा था जबकि कक्षा में बैठे विद्यार्थी पढ़ने में रुचि नहीं ले रहे थे मास्टर जी ने उसे कक्षा में बुलाया और कहा, बेटे कक्षा के बाहर खड़े होकर भी तुम जितनी रुचि ले रहे हो, उतनी रुचि तो कक्षा में बैठे विद्यार्थी भी नहीं ले रहे। वह बालक रोज सोलह किलोमीटर पैदल चलकर पाठशाला जाता था। वही बालक आगे चलकर के. आर. नारायणन के नाम से विख्यात हुए और भारत के राष्ट्रपति बने ।

स्वतंत्र भारत के अब तक के दसवें और पहले दलित राष्ट्रपति के.आर. नारायण जी थे।

**नाम- दुष्यन्त, आनन्द**
कक्षा-अष्टम्

# आंग्लभाषा ENGLISH

# SWAMI DAYANAND SARASWATI

There is a country which respects spiritulism much more than materialism. People are generally very open and accept social changes with a positive attitude. Swami Dayanand Saraswati is remembered with reverance and affection among the social reformers of the nineteenth century. He raised his voice against idol worship. That was a time when religious hypocrisy was a social evil like child-marriage was an accepted practice and widows were ill-treated. It was Swami Dayanand who showed remarkable courage in decrease these practices. At the Kumbha fair of 1876 at Haridwar, he spoke openly against social evils and kept his views frankly in favour of widow remarriage. He established the glory of Vedas and founded a progressive and reformist society, which he named Arya Samaj. His works Satyartha Prakash, Rigved Bhumika etc are well-known. He also wrote a treatise on the Vedas.

Swamiji was born in Gujrat. His name was Mool Shankar young. He ran away from home when his father forced him for marriage. He reached Mathura and studied Vedas and other scriptures under a guru, Swami Virjanand. As his tution fees, he pledged to his guru to serve and spread the knowledge of Vedas and the truth of his life. He fulfilled his promise.

For Swami Dayanand, foreign rule was never tolerable. He was patriot and a social reformer. Many of Swaimiji's principles were accepted and adopted by Gandhiji. It is believed that Swamiji participated in the 1857 war of independence. His works have been pioneering in the social field and will always be the torch bearer or others on this path. He was an incarnation of kindness and forgiveness. He forgave a man who gave him poison.

*Name- Saurabh, Jatin*

**Class- 7th**

## Corruption Unbound

Corruption is a pest, a disease which affects all those who come in its contact. Corruption in India is all pervasive and rampant. There is hardly any department of life where corruption is not found. In each and every walk of life it has its boundless way. **'Honesty is the best policy'** is now an empty slogan. It is found in the books of Quotation and proverbs. No body believe it, let alone practising it. People wants to become rich overnight through all sorts of unfair means. They believe neither in the firness of the means nor the nobility of the ends. Shakespear's **"Macbeth"** they too beliebve that fair is foul and foul is fair. Today all our relations are based on the calculation of gain and loss. We think of everything in terms of money and price not in terms of value, moral satisfaction etc. Making a quick buck has become the sole aim of life and **cheating, loot, rapes, drugs, murders** etc. have become very common now.

Recently we can see the example of corruption in Kedarnath in month of June 2013, where the bottles of pure water is being sold upto 200 Rs. while the actual price of the bottle is hardly 20 Rs. People do not hesitate to be corrupt even the worst condition. Lest us Arise, Akake and net stop till the wipe out the corruption from the society .

**Name- Varun**
**Class- 12th**

## Importance of 26th January

### "A day of Events"

| | | |
|---|---|---|
| 1. | 26 Jan. 1530 = | Balance died |
| 2. | 26 Jan. 1538 = | Sher Shah defeated Humayu |
| 3. | 26 Jan. 1792 = | War between Tipu Sultan and Mritish |
| 4. | 26 Jan. 1814 = | Tragedy between East India Copany and Calcutta |
| 5. | 26 Jan. 1832 = | The English first went to Kabul |
| 6. | 26 Jan. 1858 = | First Railway in India |
| 7. | 26 Jan. 1862 = | First Telegraph system in India |
| 8. | 26 Jan. 1866 = | Swej Canal built |
| 9. | 26 Jan. 1885 = | Indian National Congress was founded |
| 10. | 26 Jan. 1888 = | First Telephone in India |
| 11. | 26 Jan. 1950 = | The constitution of India come into force |

**Name- Harsh**
**Class- VIIth**

# GLOBAL WARMING

Let's take a look at some of the things we will need to say goodybye to, if our Earth gets any hotter! Simply turning of your television, DVD player, stereo and Computer when You're not using them will stop the release of thousand of pounds of carbon dioxide a year.

Do you know, if the temperature of our Earth rises, almot 7 million in India people will have to move their homes, because the sea will rise and cover some parts of Chennai and Mumbai?

Making cans from recycled aluminium uses 90% less energy than making cans from scratch. We can watch T.V. for 3 hours from the energy saved from recycling one can!

The glacial lake in Southern Chile was sighted in March, but two months later it had completely disappeared! The culprit : Global Warming.

It's true the oceans are turning to acid! Oceans absorb CO2 which, When mixed with sea water, turns to a weak carbonic acid! Take shorter hot water showers. Heating water uses energy.

***Name- Devesh Vickram Singh***
***Class-XII***

## TEN TIPS OF SUCCESS

1. Don't panic at exam time.
2. Establish a routine.
3. Look after yourself.
4. Set a time table.
5. Ask your teachers for guidance.
6. Geate a study environment.
7. Have variety in your study programme.
8. Avoid interrupting your concentration.
9. Test yourself on what you have studied.
10. Respect your well wisher.

Name-Kirpa shankar
Class-7th

## TIME

Take time to work,
it is the price of success.
Take time to think,
its the source of power.
Take time to pray,
it is the key to revelation.
Take time to play ;
it is the secret of youth.
Take time to read,
it is the source of wisdom.
Take time to be good.
it is the road of happiness.
Take time to dream,
it is the way of moon.
Take time to source,
it is the mission of life.
Take time to laugh,
it is the music of the soul.

**HARSHIT**
Class - VII

## GOD IS EVERY WHERE

Not in temple not in church,
All in vain no matter where you search
Don' look for him here and there,
God is present every where
He is love and he is beauty
He is truth and He is honesty
Love all that is fair,
You will find that God is there
Work is worship, work is life
Cut the dark with knife.

**Sagun**
Class - XI

## *FORCES OF NATURE*

Nature is always destroying and creating new landscapes. for instance, waves continually crashing on cliffs or rock on the beach break pieces of rock and over time, reveal sea stacks and sea grches standing in the sea.

In place where waves can not do this is work, such as in deserts, winds chip in. It took the erosive forces of nature like wind and water million of year to created the painted desert, a region in northern Arizona, in the united states, that is noted for bright, mutticoloured rock formations running across its eroded landscapes.

**Name- Ankit**
**Class_ xII**

## LIFE IS AN EXAMINATION

God is a examiner
We are all students
This is an answer book and
This word is examination hall
Time is allowed is three hours
The first bell rings in childhood
The second in the youth
The third in the old age
The last bell is rung by God
The examination is over

*Vinayak*
XIIth

## PHOBIAS

**Phobia comes from the Greek word from fear.**

**Cyberphobia-**
fear of computer technology
**Neophobia -**
fear of the new or unfamiliar.
**Acropobia -**
fear of heights
**Claustrophobia-**
fear of confined spaces
**Nyctaphobia -**
fear at night or darkness
**Photophobia -** fear of light
**Hydrophobia -** fear of water

***Shivam***
VII[th]

## *MISTAKE*

If a tailor makes a mistake,
It is a new style
If a programmer makes a mistake,
It is a programme.
If a writer makes a mistake,
It is a new approach.
If a painter makes a mistake,
It is a new art-
If a poet makes a mistake,
If is a new poem
It an engineer makes a mistake,
It is a new building.
If a cook for mistake
If is a new item.
If a student makes a mistake
it is always a 'MISTAKE'.

***HITESH***
Class - XI

## FAMOUS FOR

Punjab for wheat.
Bengal for rice and fish.
Nepal for duty,
Kashmir for Beauty.
Mysper for silk.
Haryana for milk.
Gujarat for peace.
Assam for tea leaves.
Rajastan for History.
Maharastra for Victory.
Kerala for brain.
U.P for sugarcane.

Jitesh
VIII

## SCHOOL

Some go to school, just for talk,
Some go to school, just for play,
Some go to school, just for friendship.
Some go to school, just for work.
Some go to school, just for feed.
Some go to school, just for formality.
Some go to school, just for meal.
Some go to school, just for violence.
But few to go school, just for study and
To cultivate their inborn characteristics.

**Name - Krishna**

Class- IX A

## *Topic scientific Discoveries*

| Discovry | Discoverger | country |
|---|---|---|
| 1. Vitamins | C-funk | poland |
| 2. Electrons | jj. Thomson | England |
| 3. Penicillin | Alexander flamiag | England |
| 4. Hydrogen | Herry covendish | France |
| 5. Microscope | Joseph pristly | Germany |
| 6. X-ray | WK.Rontgen | England |
| 7. Atom bomb | Ruther ford | England |
| 8. Termometer | Fahrenheil | Germany |

**HARSHIT**

Class 7-VII

## *WHAT IS LIFE?*

| | |
|---|---|
| 1. Life is challenge | Meet it. |
| 2. Life is adventure | Dare it. |
| 3. Life is struaggle | Fight it. |
| 4 .Life is tragedy | Face it . |
| 5. Life is mystery | Unfold it. |
| 6. Life is sorrow | Overcome it. |
| 7. Life is puzzle | Solve it. |
| 8. Life is song | Sing it. |
| 9. Life is wealth | Keep it. |
| 10. Life is health | save it. |
| 11. Life is promise | Fulfill it. |
| 12. Life is luck | Make it. |
| 13. Life is journey | Complete it. |
| 14. Life is duty | Perform it. |
| 15. Life is beautiful | Enjoy it. |
| 16. Life is gift | Accept it. |
| 17. Life is opportunity | Take it. |
| 18. Life is spirit | Realize it. |

And

at last life is love and love is life

VARUN

12 th class

# A STRANGE INTERVIEW

Manager- What is your name?
Candidate- Sir N.D
Manager- what
Candidate- Sir Niranjan Das
Manager- What is your father name?
Candidate- Sir N.D
Manager- Again N.D
Candidate- Sir Narayan Das
Manager- What is your father doing?
Candidate- Sir N.D
Manager- What N.D
Candidate- Sir my father is news director
Manager- Where do you live?
Candidate- Sir N.D
Manager- What is N.D? Are you not in your sense?
Candidate- Sir I live in New Delhi
Manager- Did you work in any departmet before?
Candidate- Sir N.D
Manager- Oh God? do you know anyting other than N.D.
Candidate- Sir I worked in Natural Department.
Candidate- Sir what do you think about me?
Manager- N.D
Candidate- Sir what N.D
Manager- Nil Duffer (Get out)

**AKASH**
Class- XII

# FRIENDSHIP

Frindship is a sweet river of love
In which every body wants to flow,
And when you get a friend,
Your life shines & glows.
Friends can tell each other.

Their secrects, dreams & desire
True friends together can,
be a key & lock
True friends respect each other,
And admire
when we are disappointed.

Friend wipe our tears,
And on success,
True friends have a special,
place in each others heart
Friendship is not a trend,
But the person who understand you
Is only a true friend.

**HITESH & Gourav**
Class - XI

# Did you know.... sports

**Did you know....**The shortest game ending in checkmate is my two moves.?

**Did you know....** The youngest winner of Tour De France was Henri cornet at the age of 19.

**Did you know....** The olympic gold medal must contain at least six grams of gold.

**Did you know....**The first women's boxing match in the us took place in NYC.1876.?

**Did you know....** The penalty kick in fotball was introduced to the Game in 1891.

**Did you know....** Hockey has been played for over three centuries.

**Did you know....** A golf balls can reach speeds up to about 170 miles an hour.

**Did you know....** Babe Ruth hit 113 home runs in only two seasons.

**Did you know....** Tennis was originally played with bare hands.

**Did you know....** A hockey puck is made of vulcanized rubber.

**Did you know....** Scuba diving was invented by jacques yves cousteau in 1943.

**Did you know....** Snow boarding was invented in the 1960 in Austria.

***NAME- AMAN SAINI***
Class- XII

## SOLAR ENERGY

Solar energy is the energy derived from the sun through the from of solar radition. solar powered electrical generation reties on photovoltaics and heat engienes A partial list of other soler application include space heating and cooling through solar architecture, daylighting, solar hot water, solar cooking and high temperature process heat for industrial purposes.

Solar technologies are broadly charactrized as either passive solar or active solar depending on the way they capture, convert and distribute solar energy. Active solar technique include the use of photovoltaic panels and solar thermal collectors to harness and solar thermal collectors to harness the energy. passive solar technique include orienting a building to the sun, selecting materials with favorable thermal mass or light dispersing properties and designing spaces that naturally circulate air.

India is both densely and has high solar insolation, providing an ideal combination for solar power in India. India is already a leader in wind power generation (wind power in India) and, suzlon Energy. in soler energy sector, some large projects have been proposed, and a 35,000 km2 area of the thar Desert has been set aside for solar power project, sufficient to generate 700 to 2,100 gigawatts In july 2009, India unveiled a us 19 billion plan, to produce 20 gw of soler power by 2020. under the plan, solar-powerd equipment and application would be mandatory in all goverment building including hospitals and hotels. on November 18,2009, it was reported that india was ready to launch its National solar mission under the Nationl Action plan on climate change, with plans to generate 1,000 MW of power by 2013 the amount of solar energy produced in india is merely 0.4.1. compared to other energy resources. the grid interactive solar power as of june 2007 was merly 2.12 MW. Goverment-funded solar enrgy in India onlay accounted for approximately 6.4 megawatt-year of power as of 2005. However, as of october 2009, India is currentiy ranked number one along with the United States in terms of installed solar power generation capacity.

Name- Chetanya Kumar & Rohit
**Class- xII**

## Negative Effects Of Glodal Warming

There are many predicted effects for the envirment and for human life due to Global warming. The main effect centres around an increase in the golbal average temperature. It's been confirmed by at least 20 scietnific societies and academies of sciencs, as well as all the national academies of science of the G8 states, that the Earth's global average air temperature near its surface rose by 0-56-0.92c (0.98-1.62f) degrees during the last 100 years. The Intergovermental panel on climate change (1pcc) conclude that this increase is very likely due to the "observd increae in anthropogenic green house gas concentrations, which leads to the warming of the surface and lower atmosphere by increasing the green house effect."

For humans, these changes in climate are particularly dangerous to those who live near the ocean shore and who already suffe from drought, flooding and poverty.

The IPCC concludes from models that global temperature will likely rise by 1.1to6.46 (2.0to11.5 F) degrees between 1990 and 2100, with the range of temperature of future green house gas emissions and varying degrees of climate sensitivity.

Other effects of global warning include a rising sea level and changes in the amount and pattern of precipitation In addition, There may be more frequent and intense weather events such as more intense hurricanes tornados, tsunamis, thunderstorm, blizzards etc, though its is difficult to connect specific event to global warning.

Global warming is also causing changes in agricultural yields, glacier retreat, reduced summer stream flows flows, species extinetions, and increased volumes of carbon burning of fossil fuels, land activities are the major reasons why global warning has been occurring and increasing over the least 50 year.

Effects of Global warming are expected to cause more changes as it become more pronuced example include the following projected climate changes (From Wikipedia) "A significant slowing of the ocean circulation that transports warm water to the North Atlantic; Large reduction in the Greenland and west Antarctic Ice sheet; Accelerated Global warming due to carbon-cycal feedbacks in the terrestrial biosphere, and releases of terrestrial carbon from perma frost region and methane from hydrates in coastal sediments.

It is uncertain whether for sure these event will occur or to what severity thay will occur if they do, but most believe that the chances of at least ane of the above events occurring are likely to increase the longer and more severe climate change becomes.

**Name- Chetanya Kumar**
Class-xII

# प्राध्यापकों की कलम से

# स्वामी श्रद्धानन्द की दृष्टि में आदर्श शिक्षा का स्वरुप

स्वामी श्रद्धानन्द जी के मतानुसार मनुष्य जीवन का उद्देश्य वेदों के अनुसार दिव्य शान्ति, दिव्य ज्योति, दिव्य आनन्द अथवा आर्दश शिक्षा के द्वारा आत्मा के अन्दर काम एवं क्रोध शत्रुओं को वश में करने की पूर्ण शक्ति विधमान उसको ईश्वर–भक्ति आत्म विश्वास द्वारा विकसित करते हुए पवित्र जीवन बनाना है, किये हुए कर्म के फल से कोई अपने को नही बचा सकता। परमेश्वर कर्म फल दाता है। प्रत्येक व्यक्ति को सदा अन्धकार से अमृत तथा पाप से पुण्य की ओर ले जाने वाली ही आर्दश शि़क्षा है, इसी आर्दश शिक्षा के द्वारा ,शारीरिक ,मानसिक ,आत्मिक शक्तियो का विकास होता है। आदर्श शिक्षा का पान कराने से पूर्व गुरु की शिष्य के प्रति यह उक्ति है कि –

**वाचं ते शुन्धामि प्राणं ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि**
**श्रोतं ते शुन्धामि नाभिं ते शुन्धामि मेद्रं ते शुन्धामि।**
**पायुं ते शुन्धामि  चरित्रास्ते शुन्धामि।।**[1]

मै तेरी वाणी को शुद्ध करता हूँ। तेरी आख को मे शुद्ध करता हूँ। तेरी नाभि उपस्थेन्द्रिय, और गुदेन्द्रिय को मै शुद्ध करता हूँ।तेरे चरि,त्र तथा आचरण को मै शुद्ध करता हूँ किन्तु आज से कुछ वर्षो पूर्व हमारे देश के पाश्चात्य शिक्षा के पक्ष में एक प्रबल लहर उठी थी। उस समय बडा विचित्र था विजित जाति के साहित्य से चुंधियाकर हमारे देश के लोग विवेक शाक्ति सवार्थ खो बैठे थे वे भले बुरे की पहचान करने योग्य नही थे। उसी लहर मे एक देश के शिक्षित लोगो ने अपने प्रचीन साहित्य, कला–कौशल और आचार व्यवहार को तिला देकर विदेशी–शिक्षसपद्धति का आश्रय लिया था उस समय संस्कृत विद्या के पक्षपाती, मुर्ख और जाति की उनन्ति को रोकने वाले समझे जाते थे।

किन्तु समय की गति बडी विचित्र है। आज पुराना समय और उसके साथ पुरानी सम्मतियॉ सर्वथा परिवर्तित होती  हुई दिख रही है। एक दिन मैकाले ने अपने शिक्षा ो पत्र में साहित्य की निन्दा करते हुए लिखा था कि सारे संस्कृत साहित्य में इतनी भी उपयोगी बाते नही मिल सकी जितनी एक अग्रेंजी की छोटी से छोटी पुस्तक में प्राप्त हो सकती है परन्तु आज वे ही अंग्रेजी शासक है। स्वयं सम्राट ने कलकत्ता यूनिवर्सिटी से अभिनन्दन पत्र का उत्तर देते हुए कहाथा कि देशा की पुरानी विद्या की रक्षा करना भी विश्वचिद्यालय का प्रधान कर्तव्य है। ढाका मे सारस्वत समाज के संस्कृत अभिनन्दन पत्र का उत्तर देते हुए वायसराय ने जो शब्द कहे थे ,वे ध्यान देने योग्य है। वयसराय ने कहा – pandit of the saraswat samj, the samaj ,the sanskrit language in its hoary antiquity cherishes gams of morality and philosophy which are a precious heirloom to all generatoins, and I am glad to meet you

who make its elevating literature your study.

ससारस्वत समाज के पंडितो , संस्कृत का प्राचीन साहित्य ,ऐसे धार्मिक और दार्शनिक रत्नो से परिपूर्ण है जिन्हे भारतीय सन्तान को अपनी अमूल्य सम्पत्ति समझना चाहिए और आपसे जो सदा इस पावन साहितय के अनुशीलन में लगे रहते है मैं मिलकर बड़ा ही प्रसन्न हुआ हूँ।

**यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्**
**आयुष्यमग्रयं प्रतिमुंच शुभ्रं यजोपवीतं बलमस्तुतेजः।।2**

शिक्षा का प्रारम्भ उपनयन संस्कार द्वारा होता था। इस अवसर पर बालक और बालिकाओं को यज्ञपवीत धारण कराया जाता था। तीन धागों में निर्मित हुआ यज्ञोपवीत तीन व्रतो का प्रतीक था, जिन्हे ब्रह्मचारी धारण करते थे। वैदिक साहित्य में यज्ञोपवीत को परम पवित्र तथा आयुष्य दीर्घ आयु दान करने वाला और शुद्ध कहा गया है।

**''कस्य ब्रह्मचर्यरसि भवतः। इन्द्रस्य ब्रह्मचर्यतवाहमार्यस्तेम असौ।''3**

उसके धारण करने के अन्तर बालक और बालिकाये आचार्य कुल मे निवास करने के अधिकारी होते थे। जब कोई ब्रह्मचारी आचार्य कुल में विद्या ग्रहण के लिए जाता था तो आचार्य उससे पूछता था तुम किसके ब्रह्मचारी हो ?

**उपनीय तु यः शिष्य वेदमध्यापयेद् द्विजः।**
**सकल्प सरहस्यं च तमाचार्य प्रचक्षते।।4**

विद्याथियो के यह कहने पर कि मैं आपका बह्मचारी हूँ आचार्य उससे कहता था कि नही ,तुम इन्द के ब्रह्मचारी हो तुम अग्नि के ब्रह्मचारी हो और मैं तुम्हारा आचार्य हूँ। इन्द्र को देवतोओ का राजा कहा जाता है और अग्नि द्वारा याज्ञिक कर्मकाण्ड का अनुष्ठान होता है। देवो और पितरो द्वारा जिन विद्याओ व ज्ञान का विकास पहले किया जा चुका हो, उन्ही की शिक्षा प्राप्ति के लिए ब्रह्मचारी आचार्य कुल मे प्रवेश किया करते थे इसलिए ये इन्द्र के ही ब्रह्मचारी हुआ करते थे एक याज्ञिक अनु ठान अग्नि द्वारा ही सम्पादित होता था आचचर्य कुल में शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को कोई शुल्क नही देना पड़ता था। प्राचीन भारत के आचार्य ने केवल सदाचारी, तपस्वी, त्यागी और विद्वान हुआ करते थे, अपितु अभिमान उन्हें स्पर्श नही कर पाता था। यदि किसी बात का उन्हें ज्ञान न हो तो उस विषय में वे अपनी अनभिज्ञता स्वीकार कर लेते थे। प्रश्नोपकनबाद में आता है। कौशल्य राजपुत ने आचार्य सुकेशा भारद्वाज से सोलह कलाओ से युक्त पुरु के विषय में प्रश्न किया जिस पर आचार्यने कहा कि मैं इसे नही जानता। यदि मैं जानता होता तो उत्तर क्यो नही देता ? जो अनृत भाषण करता है। वह समूल सुख जाता है। अतः मैं झूठ नही बोलूंगा।

तैत्रिरीयोपनिषद् में उन नियमो का उल्लेख किया गया हैं जिन्हें आचार्य कुल में रहते हुए गुरुओं तथा शिष्यों को सदा अपने सम्मुख रखना आवश्यक होता था। उस समय शिष्यो के अध्ययन करते हुए और गुरुओं को प्रवचन करते हुए ऋतु, सत्य, दम, अग्निहोत्री का अनुष्ठान अतिथि सेवा सबके प्रति समुचित व्यवहार, प्रजा के प्रति यथायोग्य व्यवहार और अपने साथियो प्रति कर्तव्य पालन का सदा ध्यान रखना आवश्यक था अध्ययन और प्रवचन ही पर्याप्त नही उसके साथ सत्य तथा तप भी आवश्यक रुप से कर्तव्य था। गुरुकुलों मे विधिवत् उपनीत ब्रह्मचारी तथा उनके शिक्षक जहॉ अध्ययन तथा अध्यापन में व्यस्त रहते थे वहा उन्हें अपने जीवन में सत्य ,शम ,दम आदि से ओत–पोत होकर तपश्चर्या से युक्त बनाना होता था।प्राचीन काल में विद्यार्थि कौन–कौन सी विद्या पढा करते थे ? इसका वर्णन भी छान्दोग्य उपनिषद् में प्राप्त होता है। जिसमें कहा गया है कि–सनत कुमार के प्रश्न करने पर नारद ने उन विद्याओं को गिनाया हैं जिनका उसने अध्ययन किया था। वे विद्यायें ये है–ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथवेद, इतिहास, पुराण, व्याकरण, पितृ विद्या, राशिविद्या, देवविद्या, निधि शास्त्र ,तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र, ब्रह्मविद्या, भूत विद्या, क्षत्र विधा ,नक्षत्र विद्या ज्योति सर्प विद्या और देवजन विद्या। इससे स्पष्ट होता है कि गुरुकुलों में निवास करते हुए प्राचीन काल के बालक और बालिकाओं को वेदशास्त्रों के अतिरिक्त इस समय के आद्युनिक विषय गणित, ज्योतिशास्त्र, व्याकरण और चिकित्सा विज्ञान आदि का भी अध्ययन करया जाता था

**न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपो ,**
**नानाहिताग्निर्नाविद्वन् न स्वैरो स्वैरिणी कुतः।**

अश्वपति ने यह उदद्योषणा की हैकि मेरे राज्य में कोई ऐसा व्यक्ति नकी है जो चोर हो ,जो जुआं खेलता हो, जो शराब पीता हो ,न कोई ऐसा व्यक्ति है जो अग्निहोत्र न करता हो न कोई चरित्रहीन है इसलिस चरित्रहिन स्त्री कहॉ से होगी ?इस उदद्योषण का अभिप्रायः यही है कि प्रचीन काल में शिक्षा अनिवार्य रुप से दी जाती रही होगी।

महात्मा मुंशीराम स्वामी श्रद्धानन्द ने आर्दश शिक्षा पद्धति के स्वरुप का बीजारोपण अपने मन में किया था। उस बीज को सफल करने के लिए उन्होने अपने समाचार–पत्र "सद्धर्मप्रचारक" के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन करते हुए आन्दोलन प्रारम्भ किया उन्होने "सद्धर्मप्रचारक "के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन करते हुए आन्दोलन प्रारम्भ किया। उन्होने "सद्धर्मप्रचारक" में लिखा कि शिक्षा ऐसे वातावरण में होनी चाहिए जो शहर से दूर एकान्त स्थान पर नदियो के सुरम्यु तटों पर, पर्वत मालाओ के समीप अवस्थित हो। इन संस्थाओं में बचपन से बालक ब्रह्मर्चव्रत करते हुए वेदशास्त्रो का अध्ययन करे। आर्यसमाज गुण ,कर्मानुसार ,वर्णव्यवस्था में आस्था रखता

है। जन्म के आधार पर किसी को ब्राह्मण या शुद्र नही माना जाता गुण, कर्म, व स्वभाव के अनुसार वर्ण व्यवस्था को स्थापित किया जाय। यह आर्य समाज का महत्वपूर्ण उद्वेश्य होना चाहिए स्वामी जी का यह भी विचार थाकि व्यवस्था के बिना वर्ण व्यवस्थ कायम नही की जा सकती आश्रम व्यवस्था के लिए गुरुकुलो की स्थापना आवश्यक है। आश्रम पद्धति के अनुसार सब बालकिओ बालिको का जीवन का प्रथम भाग ब्रह्मचारी के रुप में व्यतीत करना चाहिए। गुरुकुल में रहकर विद्याध्ययन के साथ–साथ अपने अन्दर छिपी हुई शक्तियो का विकास करना चाहिए। अध्ययन समाप्ति के पश्चात जिसमें जो योग्यता हो, जिसमें जो गुण ,कर्म ,स्वभाव हो उनके अनुसार ही वर्ण निशचित किया जाना चाहिए। उनमें से कौन ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण में जाने योग्य है इनका निश्चय ब्रह्मचर्य आश्रम के बाद ही किया जा सकता है। इसलिए उनका मानन था कि आश्रम पद्धति को स्थापित करने के पश्चात् ही वर्ण व्यवस्था को पुनःस्थापित करना संम्भव है। इस प्रकार के विचार ''सद्धर्मप्रचारक ''में 8 आषाढ संवत् 1953–1896ई0 में लाला मुंशी ने एक लेख माला सुरु की जिसका शीर्षक था ''सन्तान को आर्य क्योंकर बना सकते हो ?''इसके अन्तर्गत यह विस्तार पूर्वक समझाया गया था कि शहरो में बच्चों पर बुरा प्रभाव पडता है। उन्हें वहा पर कुसंगति से नही बचाया जा सकता।

शिक्षा के उद्वेश्य के सम्बन्ध में स्वामी श्रद्धानन्द ने 1925 में लिख था कि ''आजकल गुरुकुलों के कुछ संचालको में शिक्षा के स्वरुप में मतभेद हो रहा है।

ऋषि दययनन्द ने वैदिक शिक्षा के सर्व विषय गिना दिये है। उनका परिज्ञान प्राप्त करने के लिए शिष्यो की बुद्धि भेद से समय भेद होता ही रहेग। संसार की अवस्था के परिवर्तन के कारण उसके क्रम में भी कोई भेद आता रहेग।यह सब गौण बाते है।मुख्य बात यह है कि शुद्ध आर्श ग्रन्थों की शिक्षा और विषमय अनार्थ ग्रन्थों का म्याग । ग्रन्थ गौण है। ग्रन्थों में लिखे शब्द और इनका सम्बन्ध गौण है। मुख्य मो शरीर ,मन बुद्धि और आत्मा की समान शिक्षा है। शिक्षा सार्वदेशिक होनी चाहिए न कि एकदेशी।

**(डा0 विजेद्र शास्त्री)**
मुख्याध्यापक

# संस्कृतेः उन्नत्याम् महर्षि दयानन्दस्य योगदानम्

विदितमेव सर्वेषामपि भारतीयानां यद् पराधीन भारते गुजरात राज्ये टंकारा नगरे अस्माकं सौभाग्याद् मूलशंकर नाम्ना काचिद् पुण्यात्मा जनिं लेभे। असावेव मूलशंकरः संन्यास दीक्षा दीक्षितो दयानन्द नाम्ना विश्व प्रसिद्धो बभूव। निखिलं वैदिक वाङ्मयम् अधीत्य समाधिनिर्धूत कल्मषोऽसौ दयानन्दः तत् कार्यमकार्षीत् यन्न कोऽपि अन्यो कर्तुं प्रभवति।

पाखण्डखण्डन पण्डितः, समाजसुधारकः, दलितोद्धारकः, नारीजीवनोन्नायकः, ऋषिवरः सत्यमिदं जानाति स्म, यद् संस्कृतस्य प्रचारेण-प्रसारेण वेदादीनामध्यनेन, सदाचारेणैव वा देशोऽयं, पुनरपि विश्वगुरुपदं प्राप्स्यति नान्यथा।

अतएव महर्षिणा सर्वत्र संस्कृत भाषैव सुतरामभिनन्दिता, वन्दिता, सेविता च। वेदभाष्ये ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकायां वा महर्षेः सरला, सरसां, मधुरां ललितां देवभाषां पाठं-पाठं, श्रावं-श्रावं च मोमुद्यन्ते सहृदयानां चेतांसि। संस्कृतवाक्य प्रबोध नामकमेकमद्भूतं पुस्तकमपि संस्कृतभाषण कौशलमासादयितुं विरचितवन्तः स्वामी दयानन्द वर्याः। वेदभाष्ये महर्षेः संस्कृतं पठित्वा पतञ्जलिप्रभृतीनां प्रातः स्मरणीयानां मुनीनां रसभावसिक्ता, माधुर्य गुणोपेता भाषा स्मृतिपथमायाति। मातृभाषातोऽपि हिन्दीभाषातोऽपि सरला विद्यते। स्वामी दयानन्दस्य संस्कृतभाषा।

संस्कृतभाषामेवाश्रित्य आचार्यप्रवरस्य सर्वेऽपि ग्रन्थाः किमपि अलौकिकं ज्ञानालोकं प्रकाशयन्ति। महर्षिणा मनुस्मृति प्रभृतयः संस्कृत ग्रन्था एव प्रमाणरूपेण उद्धृताः सन्ति। स्वामिनः दयानन्दस्य संस्कृतभाषायां, संस्कृतग्रन्थेषु, वेदेषु च परमा भक्तिः आसीत्। संस्कृतस्य विकासाय, प्रचाराय प्रसाराय च तेन किं किं न कृतम्?

पुराकाले भारतदेशे संस्कृतभाषा सर्वत्र सुप्रतिष्ठिता आसीत्। न केवलं मानवाः अपितु पशु पक्षिणोऽपि संस्कृतं भाषन्ते स्म। स्वामिदयानन्दवर्याः तादृशमेव संस्कृतमयं वातावरणं द्रष्टुमिच्छन्ति स्म।

वयं जानीमो यत् प्राचीन समये स्थाने-स्थाने विद्यमानानां गुरुकुलानां माध्यमेनैव संस्कृतभाषा सुरक्षिताः सुप्रतिष्ठिताः च आसीत्, अतएव महर्षिवर्याः स्वीये अमरग्रन्थे सत्यार्थप्रकाशे गुरुकुलानां गौरवं, आर्षपाठविधेश्च महत्वं प्रतिपादितवन्तः। तेषामेव प्रेरणया अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्दः परमपवित्रे हरिद्वारनगरे भगवत्याः भागीरथ्याः तटे कांगड़ी गुरुकुलं स्थापितवन्तः। अस्मादेव गुरुकुलाद् संस्कृते नैपुण्यं प्राप्य सहस्रशः वेदविद्याविशारदाः, यशस्विनः स्नातकाः देश-विदेशे च संस्कृतस्य विजय-वैजयन्तीं प्रकाशितवन्तः।

भारते विद्यमानानां समेषामपि गुरुकुलानां गंगौत्री इदमेव गुरुकुलम् वर्तते। इदानीम् उत्तराखण्ड राज्यस्य द्वितीय राजभाषाऽपि संस्कृत भाषा एव अस्ति। इदानीं उत्तराखण्डराज्यस्य द्वयोः विश्वविद्यालयोः कुलपति पदमत्रत्याः विद्वद्वरेण्याः, यशस्विनः स्नातकाः एव विभूषयन्तः सन्ति। एतत् सर्वं महर्षि दयानन्दस्यैव संस्कृतेः उन्नत्याम् विशिष्टं योगदानं वर्तते।

जयतु संस्कृतम्। जयतु भारतम्।

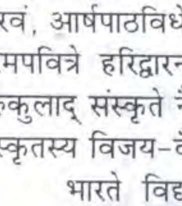

**डॉ० योगेश शास्त्री**
प्राध्यापक, (संस्कृत)
विद्यालय-विभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

# जन्मना संन्यासी- स्वामी दयानन्द सरस्वती

गत माह श्री अभिमन्यु कुमार खुल्लर द्वारा रचित ऋषि-अर्पण पुस्तक पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसमें स्वामी दयानन्द जी के जीवन के अनछुये पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है, उसी से यह लेख ऋषि पुत्रों के पठन-पाठन हेतु दे रहा हूँ, जिससे पाठकगण लाभ उठा सकेंगे।

विद्वान् लोग कहते हैं कि महर्षि जैमिनी के पश्चात् सिवाय दयानन्द के ओर कोई ऋषि नहीं हुआ। जैमिनी और दयानन्द के बीच की कालावधि 6-7 हजार वर्ष है। हो सकता है कुछ अधिक ही हो। संन्यासी की परिणति क्या ऋषित्व में होकर ही उच्चतम महत्ता प्राप्त करती है? दयानन्द को देखकर तो ऐसा लगता है। तभी, योगीराज अरविंद कह उठे थे कि समकालीन संन्यासियों व योगियों में दयानन्द हिमालय के उच्चतम शिखर सागरमाथा (माउन्ट एवरेस्ट) पर विराजमान हैं।

टंकारा के जमीदार (कलेक्टर) श्री करसन जी तिवारी व उनकी भार्या अंधेरे में ही रहे कि जिस बालक का नामकरण उन्होंने मूलशंकर किया है, वह मूलशंकर (परमात्मा) के सान्निध्य से लौटी हुई मुक्त आत्मा है। योगेश्वर कृष्ण की तरह महर्षि दयानन्द भी मोक्ष से लौटी हुई आत्मा। ऐसी आत्मा को भी मनुष्य शरीर धारण करने पर मानवीय जीवन के अनेक झंझावातों से गुजरना होगा ही। ब्रह्मचारी चैतन्य व दयानन्द सरस्वती तो लौकिक सीढ़ियां थीं जिसे इस मुक्त आत्मा ने पार करना ही था।

पिता यजुर्वेदीय औदीच्य ब्राह्मण थे, इसलिये मूलशंकर ने 14 वर्ष की आयु में ही यजुर्वेद के 1975 मंत्रों को कण्ठस्थ कर लिया था। अन्य संहिताओं का पठन-पाठन जारी था।

निराकार से मिलन की चाह में पहला टकराव शिवमूर्ति से, शिवलिंग पूजा से हुआ। शिवमूर्ति को वह मुक्त आत्मा कैसे सर्वशक्मिान, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र परमात्मा स्वीकार कर सकती थी, नहीं स्वीकार किया और 35 वर्ष की दीर्घकालावधि में भारत का कोई भी योगी, कोई भी संन्यासी यह स्वीकार नहीं करा पाया।

गुरु विरजानन्द ने यही तो हृदयंगम करा दिया। दयानन्द तेरी सोच, तेरा चिन्तन, जिस धारा में प्रवाहित हो रहा है, वही सही है। प्रतिमा परमात्मा का स्वरूप नहीं हो सकती। परब्रह्म परमेश्वर, निराकार, सर्वशक्मिान्, अजर, अमर, अभय, नित्य व पवित्र है। यह ज्ञान परमात्मा ने अपनी वेदवाणी में मनुष्यमात्र के लिये दिया है। उसे राम, कृष्ण या अन्य कोई अवतार लेने की आवश्यकता नहीं। उस तक पहुंचने के लिये ईसा या रसूल की आवश्यकता नहीं। परमात्मा के इस स्वरूप को समझ कर अंगीकार कर ध्यान, धारणा व समाधि द्वारा उसे प्राप्त किया जा सकता है।

इस जन्मजात संन्यासी को हम अकिंचन, क्षुद्र मानव किन उदाहरणों से समझने का प्रयास करें। ऋणी हैं हम रक्तसाक्षी पं. लेखराम एवं देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय के जिन्होंने ऋषि का जीवन चरित हप लोगों को दिया।

महर्षि दयानन्द का प्रथम शास्त्रार्थ कांशी का शास्त्रार्थ 300 से अधिक दिग्गज. पौराणिक पंडित, कांशी का सम्पूर्ण जनसमुदाय लगभग 25 हजार व्यक्ति और उस पर मूर्तिपूजक काशीराज का सभापतित्व, यह संकल्प लेकर उपस्थित हुआ था कि येनकेन प्रकारेण इस प्रतिमा पूजन विरोधी को पराजित करना ही है, नहीं तो सदैव के लिये न केवल हमारी धार्मिक आस्थाओं का ही मूल नष्ट हो जावेगा व लाखों लोगों की रोजी, रोटी व असंख्य धर्मधुरीण गुरु घन्टालों का, मठाधीशों का शताब्दियों से चलता आ रहा कारोबार ही ठप्प हो जावेगा। नहीं, दयानन्द को यह नहीं करने दिया जा सकता। इस प्रबल विरोधी वातावरण व विकट परिस्थिति में भी दयानन्द अविचलित।

गुलगपाड़े में, प्रपंच रचकर, अन्यायपूर्वक कांशीराज ने स्वामी विशुद्धानन्द के स्वर में स्वर मिलाकर दयानन्द को पराजित घोषित कर दिया।

स्वामी दयानन्द इस सुनियोजित षड्यंत्र के तीव्रतम आघात को सहन कर पायेंगे अथवा नहीं? इतना बड़ा आघात उनके संकल्प को पूर्णतया तोड़ तो नहीं देगा? देखने के लिये संध्या समय निर्मल साधु पंडित ईश्वर सिंह स्वामी दयानन्द से मिलने पहुंचे। महर्षि चहल-कदमी कर रहे थे। सामान्य वार्तालाप होता रहा। पराजय का किंचितमात्र भी अवसाद नहीं, खिन्नता नहीं, दु:ख नहीं, कोई शिकवा-शिकायत नहीं। पंडित ईश्वर सिंह आश्चर्यचकित। ऐसा निर्विकार, निर्लेप, संन्यासी।

ऐसा ही आश्चर्य न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानाडे को हुआ। महर्षि को सम्मान प्रदान करने के लिए हाथी पर बैठाकर गाजे-बाजे के साथ जलूस निकाला जा रहा था। उपद्रवियों ने एक गधे को जूतों की माला डाल, गर्दभानन्द की तख्ती लगाकर गोबल नाली का कीचड़ व अन्य गंदी वस्तुओं को दयानन्द के ऊपर फेंका। निर्विकार भाव से दयानन्द बैठे रहे। हाथी पर बैठाकर निकाले जाने पर दयानन्द के मुख-मण्डल पर प्रसन्नता का कोई आभास नहीं था। कोई गौरवान्वित अनुभव नहीं कर रहे थे। न ही गधे के समकक्ष रखे जाने पर क्रोध, अप्रसन्नता या अवसाद क्षण मात्र को भी उनके मुखमण्डल पर परिलक्षित हुआ। दयानन्द यदि जन्मना संन्यासी नहीं होते तो क्या यह कदापि सम्भव था? बिलकुल नहीं।

संन्यास जन्य विरक्ति के अन्य उदाहरण देखिए। ओखी मठ के महन्त ने अपना उत्तराधिकार स्वीकार करने के लिए कहा। लाखों की सम्पत्ति, फिर पैर पूजने के लिए भारत के अगणित राजे-महाराजे एवं असंख्य जनसमुदाय। लौकिक एवं पारलौकिक ऐश्वर्य का अकूत

भण्डार, पर महर्षि ने अस्वीकार करने में, कहें ठुकराने में, एक क्षण भी तो नहीं लगाया। वित्तेषणा एवं लोकेषणा से ऐसी भयंकर विरक्ति।

उदयपुर के महाराणा सज्जन सिंह ने प्रस्ताव किया कि वे (महर्षि दयानन्द) एकलिंग की गद्दी स्वीकार कर लें। सम्पूर्ण मेवाड़ राज्य एवं स्वयं महाराणा उनका स्वामित्व स्वीकार लेंगे। यहाँ पर भी महर्षि ने अस्वीकृत प्रदान करने में एक क्षण भी नहीं लगाया। महाराणा ने प्रस्ताव को और प्रगाढ़ किया। स्वामी जी! आपको ऐसा दानी कहीं और नहीं मिलेगा। महर्षि ने अपने उत्तर से केवल महाराणा के अभिमान को ही नहीं तोड़ा बल्कि इस बात का भी एहसास करा दिया कि प्रस्ताव कितना लुभावना है, वह भलीभांति जानते हैं, लेकिन राजन्! ऐसे प्रस्ताव को ठुकराने वाला भी दयानन्द के अतिरिक्त तुम्हें और कोई नहीं मिलेगा। जो मुक्त-आत्मा अभी समय, चौबीसों घण्टे परमात्मा के सान्निध्य सुख में रहती थी, उसे अन्यथा क्या सोचना था?

कहते हैं कि चौरासी लाख योनियों के बाद मनुष्य जन्म मिलता है। अनेक जन्म के संचित पुण्य कर्मों के पश्चात् मोक्ष की प्राप्ति होती है। दयानन्द की मोक्ष से परावर्तित आत्मा ने एक ही शरीर धारण कर पुनः मोक्ष पद प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त कर लिया। यह सब केवल इसीलिये सम्भव हुआ कि उस जन्मजात संन्यासी को परमात्मा की अनुभूति रही होगी। ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द ने भी भलीभांति समझ लिया होगा कि इस मुक्तात्मा का मानव कल्याण के लिये ही पुनरागमन हुआ है। इसलिये इसे स्वमुक्ति के स्थान पर मानव कल्याण के लिये प्रेरित करना होगा। तभी गुरुदक्षिणा में सर्वस्व जीवन मांग कर पदाक्रान्त, पददलित, देवभूमि, ऋषि भूमि में जड़ता, अज्ञान, अंधकार में पड़े भारत के कल्याण का मार्ग प्रशस्त कराया। सम्पूर्ण विश्व के लिये वेद-ज्ञान का द्वार खुलवाया जो महर्षि जैमिनी के बाद बन्द हो गया था।

महर्षि ने जीवन की अंतिम श्वांस तक यह सब कर अपने आपको परमात्मा को सौंप दिया। ईश्वर, तेरी इच्छा पूर्ण हो। कबीर के शब्दों में कहें– जस की तस धर दीनी चदरिया। क्या इतनी पूंजी मोक्ष पद प्राप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं?

**॥ इति ओ३म् ॥**

**साभार – ऋषि अर्पण**


द्वारा

**अशोक कुमार आर्य**

(अध्यापक) इतिहास, हिन्दी

# वेद में राजनीति का स्वरूप

मानवीय संस्कृति की चार प्रमुख प्रवृत्तियां – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष है। इनके प्रवर्तन के लिए समाज में समुचित वातावरण की व्यवस्था होना आवश्यक है। इस दिशा में समाज का संगठन करने का उत्तरदायित्व राजा का होता है। राजा द्वारा स्थापित राज्य व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य सब प्राणियों का सुख वर्धन है तथा यह तभी सम्भव है जब राष्ट्र सुरक्षित रहे एवं राष्ट्र की सुरक्षा, विद्या और मोक्ष के साधनों की निर्विघ्नता के लिए धार्मिक राजा तथा आप्त विद्वान् अपेक्षित हैं। दुष्टों से श्रेष्ठों की रक्षा का कार्य भी राजा की आवश्यकता है। राजा के बिना प्रजा सुखी नहीं रह सकती।[3] इन सब कार्यों की पूर्त्यार्थ राजा की आवश्यकता होती है।

**आदर्श प्रजातन्त्र –**

वेद आदर्श प्रजातन्त्र का विधान करता है। वेदानुसार एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिए, किन्तु राजा जो सभापति तदाधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के अधीन रहना चाहिए। अन्यथा स्वाधीन राजा राज्य में प्रवेश करके प्रजा का नाश करता है।

**निर्वाचन व्यवस्था –**

वेद में प्रजा द्वारा राजा के चुने जाने का उल्लेख मिलता है। किन्तु चुनाव का अधिकार उत्तम कोटि के मनुष्यों अध्यापक कोटि के लोगों को ही हैं। सर्व साधारण को नहीं। राजा को चुनने वालों को देव कहा गया है। जो शतपथ के अनुसार विद्वान् ही होते है।

**राजा –**

संसार के सभी मनुष्य सभी कार्यो में समर्थ नहीं होते। इसलिए वैदिक धर्म में वर्ण वयवस्था का विधान है। वेदानुसार जो श्रेष्ठ क्षत्रिय होता है उसे राजा के पद पर अभिषिक्त किया जाता है। विद्वान् लोग ऐसे मनुष्य को राजा बनाएं जो राष्ट्र की रक्षा कर सके, शत्रुओं, को रुलाने वाला, प्रजा को ऐश्वर्य देने वाला, सत्यनिष्ठ तथा तपस्वी हो। जो सत्य की कामना वाला पवित्रात्मा वरणीय, सुखों का दाता, जितेन्द्रिय, राष्ट्र का पालक, नरों में श्रेष्ठ, हिंसक, शत्रुओं का विनाशक, उत्कृष्ट गुण और विज्ञान वाला तथा प्रजा की वाणी सुनने वाला हो। वही राजा होने योग्य है जिसे समस्त प्रजाएं स्वीकार करें। जो अग्नि के समान प्रतापी, जागरूक, बली, दुष्ट, हिंसक, प्रजा द्वारा पुकारने योग्य हो, वही सिंहासन पर बैठने का अधिकारी है। राजा राष्ट्र की धूरि होता है।

**शासन व्यवस्था –**

शासन व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए ऋग्वेद में तीन सभाओं का उल्लेख मिलता है। अथर्ववेद में भी राजधर्म के संचालनार्थ सभा, समिति तथा सेना की चर्चा मिलती है।

**राजसभा –**

राजसभा द्वारा राजा राष्ट्र की आन्तरिक तथा बाह्य सुरक्षा को निष्पन्न करता है। बाह्य सुरक्षा हेतु सेना तथा दूत

आदि का संग्रह करता है तथा आन्तरिक व्यवस्था के अन्तर्गत न्याय पूर्वक प्रजारक्षण का कार्य करता है। इसके लिए वह प्रजा के आरोग्य, व्यापार, पशुरक्षा, न्याय, यातायात, उन्नत करने आदि की सुविधा जुटाता है।

**विद्या सभा** -

राष्ट्र में विद्या का प्रसार सभ्य समाज के लिए आवश्यक है। राष्ट्र में कोई व्यक्ति अपठित न रहे। यह प्रयत्न राज्य की ओर से सतत् होना चाहिए।[1]

**धर्म सभा** -

समाज में धर्म का होना अत्यन्त आवश्यक है। धर्म के अभाव में समाज में अनैतिकता जन्म ले लेती है। वेद में जितेन्द्रिय, धर्मात्मा, परोपकार में प्रीति रखने वाले विद्वानों को धर्मोपदेश के लिए राजा द्वारा नियुक्त करने का उल्लेख मिलता है। इन्हीं के उपदेश आदि से राजा भी धर्मात्मा बनता है।

**सभासदों की योग्यता** -

सभासदों की नियुक्ति विद्वानों द्वारा अच्छी प्रकार परीक्षा करके करनी चाहिए। सभाओं के सभासद् विद्वान् वीर, तेजस्वी, धनाढ्य, कुलीन, प्रशंसित निरपराधी, उत्कृष्ट शरीर वाले विद्यावयोवृद्ध हों।

**राजदूत** -

दूतों को सब शास्त्रों में प्रवीण, राजधर्म को ठीक–ठीक जानने वाले पर–अपर इतिवृत्तों के वेत्ता, धर्मात्मा, निर्भयता से सब विषयों के वक्ता और शूरवीर होना चाहिए[1] राजा को उचित है, जो पूर्ण विद्वान् प्रगल्भ स्नेही, धार्मिक जन हैं और राज्य के व्यवहार को वहन कर सकते हैं उन शूरवीर, सुहृद् मनुष्यों को दूत बनाकर राज्य के समाचारों को जानें।

**युद्ध** -

राजा का कर्तव्य बाह्य तथा आन्तरिक सुरक्षा कर प्रजा का पालन करना है। बाह्य तथा आन्तरिक सुरक्षा के लिए युद्ध अनिवार्य हो जाता है। शत्रु विनाश किये बिना सुराज्य नहीं हो सकता। इसके विपरीत जब मनुष्य लोग परमेश्वर की आराधना करके अच्छे प्रकार सब सामग्री को संग्रह करके युद्ध में शत्रुओं को जीत कर चक्रवर्ती राज्य को प्राप्त कर प्रजा का अच्छे प्रकार पालन करके बड़े आनन्द का सेवन करते हैं तब उत्तम राज्य होता है।

**सेना** -

युद्ध के लिए सेना अपेक्षित होती है, सुशिक्षित सेना युद्ध विजय के लिए अतीव आवश्यक है। अतः राजपुरुषों को शत्रुओं से अप्रधर्षिणी हृष्ट पुष्ट सेना बनानी चाहिए जिसमें सुन्दर परीक्षित योद्धा और अध्यक्ष हो तथा वे अस्त्र शस्त्र संचालन में कुशल हो। राजा को चाहिये कि जिन साधनों से और दृढ़ राज सेनांगों से प्रजा की सब प्रकार रक्षा हो सकें उनका प्रबन्ध करें। राजा को चाहिए कि सेना के भोजन प्रबन्ध को उत्तम रखें और सेना के आरोग्य के लिए कुशल वैद्यों को रखें। उन्हीं पुरुषों को सेना में भर्ती करना चाहिए जो शत्रुओं को जीत सकें।

**सेनापति** -

सेना के संचालनार्थ सेनापति की आवश्यकता होती है। कैसे पुरुषों को सेनापति नियुक्त किया जाये इसके वेदों

में निम्न निर्देश अधिगत होते हैं। राजा को चाहिए कि जो धनुर्वेद और ऋग्वेदादि शास्त्रों का जानने वाला, निर्भय, सब विद्याओं में कुशल, अतिबलवान्, धार्मिक अपने स्वामी के राज्य में प्रीति रखने वाला, जितेन्द्रिय, शत्रुओं को जीतने वाला तथा अपनी सेना को सिखाने और युद्ध कराने में कुशल वीर पुरुष हो उसको सेनापति के अधिकार पर नियुक्त करे।

**न्याय व्यवस्था** -

शासन में न्याय का बहुत महत्व है। न्याय के अभाव में सर्वत्र अराजकता की स्थिति होने से भय व्याप्त हो जाता है तथा मत्स्य न्याय प्रवृत्त होने लगता है। इस भयावह तथा दुःखद स्थिति को दूर करने के लिए राजा स्वयं तथा अन्य न्यायाधीश विद्वान् रखकर प्रजाजनों को यथोचित न्याय प्रदान करता है। राजा के प्रत्येक व्यक्ति को न्याय का आचरण करना चाहिए चाहे वह स्वयं राजा हो अथवा सभापति सेनापति राजसभासद राजपुरुष न्यायाधीश अथवा अन्य कोई भी हो न्याय सभी के लिए करणीय है।

**दण्ड व्यवस्था** -

शासन व्यवस्था में दण्ड का बड़ा महत्व है। यदि दण्ड का भय न हो तो प्रायः सभी प्रजा अपथगामी बन जाया करती है। समाज में जो दुष्ट वर्ग होता है उसका नियमन दण्ड से ही किया जाता है। दण्ड ही सबको अनुशासन में रखता तथा उसकी रक्षा करता है। सबके सो जाने पर भी राजदण्ड जागता रहता है बुद्धिमान् लोग दण्ड को ही धर्म मानते है। दण्ड का मुख्य उद्देश्य अपराधों को रोकना तथा राज्य के प्रति विरोधी शक्तियों को समाप्त करना है। राज्य में इस कार्य को अध्यापक उचित अध्ययन द्वारा, उपदेशक शिक्षा द्वारा तथा राजपुरुष दण्ड द्वारा करते है। वीर पुरुष डाकु आदि का विशेषतया नाश करने में कटिबद्ध रहते है। राजपुरुष यह प्रतिज्ञा करते है कि हम सर्वदा प्रजा की रक्षा करेंगे तथा डाकु, चोर, लम्पट, कपटी, कुमार्गी, अन्यायी और कुकर्मियों को निरन्तर दण्ड देंगें। धर्मात्मा राजपुरुष अपने अनुकूल सेना और प्रजा का सत्कार करें तथा विरोधी सेना तथा प्रजा एवं डाकु, चोर, खोटे वचन बोलने वाले, मिथ्यावादी, व्यभिचारी मनुष्यों को अग्निदाह आदि भयंकर दण्डों से शीघ्र ताड़ना देकर वश में करे।

**कर व्यवस्था** -

राज्य कार्य संचालनार्थ राजा को ध् ान की आवश्यकता होती है। उसके लिए वह प्रजा से कर लेता है। राजा द्वारा प्रजा से जो कर लिया जाता है वह अपने भोग विलास के लिए नहीं अपितु कालिदास के शब्दों में **''सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः''** के आधार पर प्रजा के हितार्थ कार्यों में लगाने के लिए प्रजा से लिया जाता है।

**अश्विनी कुमार**
सहायक अध्यापक, राजनीति विज्ञान

# TIPS FOR MANAGING YOUR TIME AND GETTING AHEAD

Time management is the act or process of planning and exercising conscious control over the amount of time spent on specific actives ,especilly to increase effectiveness, efficiency or productivity .

Time management is often considered necessary because

(1) Available time is limited ,

(2) Time cannot be stored;if unused it is lost forever,

(3) One's goal are usually multiple , sometimes conflict, and not all goals are of equal priority.

(4) Goals cannot be accomplished without the application of effort, which requires the use of time .

(5) To be able to have control over your life _manage your time.

(6) To be healthier and happier (less stress).

**Seven Suggestions for Effectively Managing Your Time**

**1.Be Organized**

- Use time saving tools; appointment calendars , "to do" list, e-mail, answering machines , file folders, etc.
- Have an organized workplace(don't wast time constantly looking for your work).
- Use your appointment calendar for everything, including listing study time .
- Use "to do" lists for both long term and for each day/week .

**2.Plan Ahead (Schedule it and it will happen!)**

- Determine how long your task will take (do this before agreeing to tak on a task !)
- Consider whether any activities can be combined.
- Determine if big tasks can be broken down into smaller tasks that may be easier to schedule (such as studying for exams and visiting the library as part of an assignment to write a term paper).

**3.Prioritize Your Task**

- Use an A-B-C ratng system for items on your "to do" lists with A items being highest priority.
- Set goals for both the short term and long term as to what you whant to accomplish.
- Look at all of your " to do " s to gauge the time requirement and whether additional reasources will be needed to accomplish them (if yes , schedule time to obtain those resources).Don't postpone the small tasks (a sense of accomplishment is good and over looked small tasks can become larger tasks.)

**4. Avoid Overload**

- Include time for rest, relaxation, sleep , eating ,exercise, and socializing in your schedule.
- Take short breaks during study and work periods.
- Don't put everything off until the last minute (for example ,don't cram for exams).
- Learn to say " no "when appropriate and to negotiate better deadlines when appropriate.

**5. Practice Effective Study Teachiques .**

- Have an appropriate study environment .
- Split large tasks into more manageable tasks .
- Read for comprehension ,rather than just to get to the end of the chapter.
- Be prepared to ask question as they come up during study rather than waiting until just before an exam.
- Do the most difficult work first ,perhaps breaking it up with some easier tasks .
- Don't wait until the last minute to complete your syllabus.
- Read the syllabus as soon as you get it and note all due date (and "milestone" time ) on your calendar.
- Be a model student :(be attentive and participative in class , and punctual, prepared, and eager to learn ).

**6. Be Able to be Flexible**

- The unexpected happens (sickness , vehicles troubles,etc); you need to be able fit it into your scheduale .
- Know how to rearrange your schedule when necessary (so it doesn't manage you -you manage it ).
- Know who to ask for help when needed.

**7. Have a Vision (Why are you doing all of this?)**

- Don't forget the "big picture" -why are you doing the task -is it important to your long -term personal goals?
- Have and follow a personal mission statement (personal and career ). (Are your activities ultimately helping you achive your goals?)
- Know what is important to you .(what do you value most )

**Have a positive attitude.**

**Hukam Chand**
Asstt. English Teacher

# नारी सशक्तिकरण

नारी सदा ही शक्तिशाली रही है, समाज को उसने सदैव अपनी भाव शक्ति से बांधे रखा है, समाज और परिवार की विपत्ति का नारी ने सदैव अपने विवेक और बुद्धि से सामना किया और उसे दूर किया। लेकिन समाज के स्वार्थी एवं कमजोर वर्ग ने सदैव नारी को सताया। नारी की शक्ति से घबराये, उस वर्ग ने उसे कभी भी सिर ऊंचा करने नहीं दिया। उसपर अनेकों अत्याचार तथा परम्पराओं के नाम पर प्रतिबन्ध लगाये गये, परन्तु नारी तो शक्तिशाली है, उसने अपनी कर्मठता, समर्पणता एवं लगन से समाज में आज सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया है। समाज अभी भी नारी की उन्नति एवं बुद्धिमानी को पचा नहीं पा रहा है, उसके रास्ते में अनेकों रूकावट पैदा की जाती है, उसके आत्म-गौरव को बार-बार ललकारा जाता है। इसके बावजूद भी आज नारी ज्ञान में, विज्ञान में, राजनीति में, प्रशासन में, स्वयं समाज के लगभग अन्य सभी क्षेत्रों में अपनी योग्यता के झण्डे गाड़ रही हैं। जिस क्षेत्र में भी नारियों ने नेतृत्व संभाला है, वहीं तरक्की ने अपनी गति बढ़ाई है।

आज तो संसद में 33 से 50 प्रतिशत महिला आरक्षण के लिए जान लगाई जा रही है। कहा जा रहा है कि इससे नारी का कल्याण होगा, वे सशक्त होंगी। मेरे विचार से आज नारी को शिक्षा, प्रोत्साहन व सम्मान देने की आवश्यकता है। नारी सदा ही योग्य रही है, उनकी योग्यता को स्वीकार करने की आवश्यकता है। हमें अपने दुर्विचारों से उनकी उन्नति की राह में रोड़ा नहीं बनना चाहिए। नारी को योग्यतानुसार प्रतिफल चाहिए। आरक्षण जैसा अपमान नहीं, आरक्षण योग्यता को प्रोत्साहित करने की कला का नाम है, जबकि नारी सदैव कर्मठ एवं योग्य रही हैं। समाज के दृष्टिकोण को व्यापक रूप से बदलने की आवश्यकता है। अभी तक सर्वोच्च शिखर पर प्रत्येक नारी अपनी मेहनत व योग्यता से वहां पहुंची है, न कि आरक्षण से।

प्रत्येक नारी को सबसे पहले अपने परिवार की सद्भावना व प्रोत्साहन चाहिए। प्रत्येक को नारी के प्रति विशेष पक्ष लेकर उनका उत्साहवर्धन करना चाहिए, जिससे कन्या-भ्रूण-हत्या जैसा जघन्य अपराध समाप्त हो सके और नारी का कानूनन सम्पत्ति के प्रत्येक क्षेत्र में परिवार के साथ नाम अनिवार्य होना चाहिए, जिससे आज के पेचीदा माहौल में नारी अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रति सजग रह सके। यदि समाज व सरकार नारी को उसकी योग्यता के प्रतिफल देता रहे तो वह दुर्गम स्थान पर भी अपनी राह बना लेगी, फिर आरक्षण जैसी सुविधा की उसे आवश्यकता ही नहीं होगी। आज की नारी का नारा है - ''हमें शिक्षा का अवसर दो, हम मुकाम खुद पा लेंगी।''

**जो सबला रही हमेशा, मत कहो उसे अबला।**
**सम्मान दो बस उसे, उसी का है जमाना अगला।।**

**वेदपाल सिंह आर्य**
सहायक अध्यापक, रसायन विज्ञान

# स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्य समाज का योगदान

आज यह आम धारणा है कि हमारे देश को स्वाधीनता दिलाने में कांग्रेस का हाथ है। इस धारणा को झुठलाया भी नहीं जा सकता, क्योंकि जब भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई, उस समय आन्दोलन की बागडोर कांग्रेस के हाथ में ही थी, और जब स्वंतन्त्रता प्राप्त हुई, उसके बाद भी देश की बागडोर कांग्रेस के नेताओं के हाथ में ही आई। अब प्रश्न उठता है कि क्या इस विचारधारा के प्रणेता कांग्रेस के ही नेता थे अथवा इससे पहले भी किसी ने स्वाधीनता के लिए कोई प्रयास किया था? आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के मस्तिष्क में यह विचार बहुत पहले से अंकुरित हो चुका था। उन्होंने सन् 1975 में घोषणा की थी कि अन्य देशवासी राजा हमारे देश में न रहें तथा हम पराधीन कभी न रहें। उन्होंने भारतीयों को चेतावनी देते हुए कहा था कि कोई कितना भी करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोच्च, सर्वोत्तम, होता है।

आर्य समाज ने अपने संस्थापक के भावों के अनुसार भारत में स्वराज्य का मन्त्र फूँका, इतना ही नहीं अपितु आर्य समाज ने लाला लाजपतराय, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, भाई परमानन्द, लाला हरदयाल, अमर शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे शहीदों को पैदा किया जो हँसते-हँसते अपने राष्ट्र और धर्म के ऊपर बलिदान हो गये। जब हम भारतीय सवाधीनता आन्दोलन का गहन अध्ययन करते हैं तो उसके मूल में आर्य समाज का महान योगदान परिलक्षित होता है।

स्वातन्त्र्य समर के महान निर्भीक योद्धा लाला लाजपतराय आर्य समाज के पलने में बड़े हुए थे उन्होंने कहा था कि स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं आर्य समाज मेरी माता है। इन दोनों की गोद में मैं खेला हूँ। साइमन कमीशन के विरोध के समय प्रदर्शन कारियों का नेतृत्व करते समय पुलिस ने इन पर लाठियाँ बरसाई। उस समय इन्होंने कहा था – ''मेरे शरीर पर पड़ी हुई एक-एक लाठी अंग्रेजी साम्राज्य के लिए कफ़न की कील साबित होगी''

स्वामी स्वतंत्रता नन्द महाराज ने स्वतंत्रता के आन्दोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। स्वाधीनता के लिए वायसराय की आज्ञा से बन्दी बनाए गए वे ही अकेले साधु थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा से गुरुकुल काँगड़ी की स्थापना करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी ने भी अद्भुत साहस का परिचय देते हुए सन् 1919 में दिल्ली के

चाँदनी चौक बाजार में जब गौरे सिपाही गोलियों की बौछार करने की तैयारी कर रहे थे तब इन्होंने सीना खोल कर उन्हें ललकारते हुए यह घोषणा की थी कि लो चलाओ गोलियाँ, सन्यासी का सीना खुला हुआ है। उनके साहस और निर्भीकता को देखकर गोरे सिपाहियों को पीछे हटना पड़ा।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ऐसे कट्टरवादी और देश भक्तों में से थे जिन्होंने भारत की स्वाधीनता के लिए देश से बाहर रहकर क्रान्तिकारियों की सहायता की थी।

महान क्रान्तिकारी पं. रामप्रसाद बिस्मिल के नाम से तो सब परिचित ही हैं। इन्होंने महर्षि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा था जिससे उनके जीवन की दिशा ही बदल गई। काकोरी काण्ड में पकड़े जाने पर जब उन्हें फाँसी की सजा सुनाई गई तो उन्होंने कहा था कि मैं ब्रिटिश राज्य का विनाश चाहता हूँ। उसके बाद फाँसी के तख्ते पर खड़े होकर **'ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि'** आदि प्रार्थना मंत्र बोलकर फाँसी के फंदे पर झूल गए। ऐसे अनेक महापुरुष हुए जिन्होंने आर्य समाज से प्रेरणा लेकर देश के स्वाधीनता आन्दोलन में अपना योगदान दिया ।

वेलेन्टाइन शिरोल ने इण्डियन अनरेस्ट में लिखा था कि जहाँ-जहाँ आर्य समाज का दौर है वहाँ-वहाँ राजद्रोह प्रबल है। माहत्मा गाँधी भी जब दक्षिण अफ्रीका से लौटे तो बिना बुलाए स्वामी श्रद्धानन्द जी से मिलने गए थे। वह समय था जब आर्य समाज और विद्रोह पर्यायवाची बन गये थे।

कांग्रेस का इतिहास लिखने वाले डा॰ पट्टाभिरमैया ने लिखा था कि असहयोग आन्दोलन में भाग लेने वाले और जेल काटने वाले अस्सी प्रतिशत आर्य समाजी थे। निश्चय ही आर्य समाज की भूमिका स्वाधीनता आन्दोलन में अग्रणी रही है। आर्य समाज एक वास्तविकता है जिसने जनसाधारण का आश्चर्यजनक उत्थान किया है।

**प्रकाशवीर**
प्राध्यापक हिन्दी

# विद्यालय प्रगति विवरण

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

## सत्र- 2013-14

# वार्षिक प्रगति विवरण

## शिक्षण सत्र- 2013-14

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विद्यालय विभाग ने खेल जगत् में बहुत से अविस्मरणीय कीर्तिमान् स्थापित किये उत्सुकतापूर्ण विषय यह है कि फुटबॉल खेल में सर्वाधिक ख्याति प्राप्त की, तथा उपलब्धियाँ हासिल की। जिससे गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय-विभाग की प्रतिष्ठा में चार चाँद लग गये। इस वर्ष में फुटबॉल खेल की उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं-

1. सर्वप्रथम गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में जिला स्तरीय विद्यालयी क्रीडा प्रतियोगिता तथा विद्यालय स्तर के अन्डर 14, 17 के उत्तम खिलाड़ियों का राज्य स्तर हेतु हरिद्वार जिले की ओर से चयन किया गया। जिसमें गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा हरिद्वार जिले का प्रतिभाग करने हेतु राज्य स्तर में चयन हुआ।
2. राज्य स्तरीय विद्यालयी फुटबॉल प्रतियोगिता में हरिद्वार की टीम प्रतिभाग करने देहरादून पहुँची तथा गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय की टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
3. इसके पश्चात् ऋषिकेश में स्थित ग्राम श्यामपुर खदरी में ओपन टूर्नामेन्ट में प्रतिभाग किया तथा गुरुकुल कांगड़ी की टीम ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए तृतीय स्थान प्राप्त किया तथा इस टूर्नामेंट के उपरान्त तीन खिलाड़ियों का चयन देहरादून की टीम के लिए हुआ, जिनके नाम इस प्रकार हैं **ब्र0 आशीष, ब्र0 सिद्धार्थ, ब्र0 वैभव**। जिसके पश्चात् देहरादून जनपद का प्रतिभाग करने पहुँची टीम की राज्य स्तरीय फुटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन बर्फीले क्षेत्र हिमाचल प्रदेश में हुआ। जहाँ हमारे विद्यालय की ओर से चयनित तीनों ब्रह्मचारियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया।

**वॉलीबाल**– सितम्बर माह के प्रथम सप्ताह में ब्लॉक स्तरीय वॉलीबाल प्रतियोगिता का आयोजन पथरी ग्राम के राजकीय इण्टर कॉलेज में किया गया, जिस प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने पहुँची गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय-विभाग की पूरी टीम का जिला स्तर हेतु चयन हुआ। इसके पश्चात् जिला स्तरीय वॉलीबाल प्रतियोगिता जिसका आयोजन किसान इण्टर कॉलेज लक्सर में हुआ, वहाँ भी हमारे विद्यालय की ओर से अपनी प्रतिभा दर्शाते हुए ब्र० मोहित मलिक कक्षा XII ने राज्य स्तर हेतु अपना नामांकन कराया तथा राज्य स्तरीय वॉलीबाल प्रतियोगिता जो हल्द्वानी में आयोजित हुई थी उस प्रतियोगिता में ब्र० मोहित ने प्रतिभाग किया।
**तैराकी**– अगस्त माह के प्रथम सप्ताह में P.S.C. बी.एच.ई.एल. में जिला स्तरीय तैराकी प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जिसमें गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के **ब्र0 राधेश्याम** ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए राज्य स्तर हेतु अपना नामांकन कराया तथा द्वितीय स्थान के पद

को अलंकृत करते हुए व्यायाम शिक्षक लोकेश शास्त्री जी की प्रेरणा से अपने विद्यालय की विजय का परचम भी लहराया तथा अगस्त माह के अन्तिम सप्ताह में अल्मोड़ा जनपद में आयोजित होने वाली राज्य स्तरीय विद्यालयी तैराकी प्रतियोगिता में प्रतिभाग कर वहाँ भी **ब्र0 राधेश्याम** ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

**बास्केट बॉल–** आपको यह जानकर बहुत प्रसन्नता होगी कि बास्केटबॉल जैसे विदेशी खेल में पहली बार गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के ब्रह्मचारियों ने राष्ट्रीय स्तर तक न सिर्फ प्रतिभाग किया अपितु श्रेष्ठ स्थान को अपने नाम भी किया। सर्वप्रथम सितम्बर माह के अन्तिम सप्ताह में जिला स्तरीय बास्केट बॉल प्रतियोगिता का आयोजन राष्ट्रीय इण्टर कॉलेज, रुड़की में हुआ, जिसमें हमारे विद्यालय की बास्केट बॉल टीम ने प्रतिभाग कर अपने प्रदर्शन से सभी निर्णायकों को मोहित किया तथा राज्य स्तर हेतु हरिद्वार जिले की ओर से राज्य स्तरीय विद्यालयी बास्केट बॉल प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया। राज्य स्तर हेतु हरिद्वार जनपद की ओर से चयनित हुए गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के ब्रह्मचारियों के नाम निम्नलिखित हैं– *1.हिमांशुचौहान,2.सूरज (अष्टम)3.शुभम4.अमृतगिरि5.योगेशपन्त6.मननडबराल।* देहरादून में इसके पश्चात् अक्टूबर माह के द्वितीय सप्ताह में आयोजित 'राज्य स्तरीय' विद्यालयी बास्केट बॉल प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते हुए विद्यालय के छः ब्रह्मचारियों में से दो ब्रह्मचारी का चयन राष्ट्रीय स्तर हेतु हुआ, जिनके नाम निम्न हैं– 1. हिमांशु चौहान 2. सूरज (अष्टम्) तत्पश्चात् नवम्बर माह के प्रथम सप्ताह में असम राज्य में राष्ट्रीय विद्यालयी बास्केट बॉल प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जिसमें हमारे विद्यालय के ब्रह्मचारियों ने उत्तराखण्ड राज्य की ओर से प्रतिभाग किया।

**क्रिकेट**– अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक विषय है कि गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय में पहली बार भगत सिंह जी, लोकेश शास्त्री P.T.I. एवं प्रदीप मौर्य जी की प्रेरणा से तथा सहायक मुख्याधिष्ठाता जी के सहयोग से विद्यालयी क्रिकेट टूर्नामेन्ट का अयोजन हुआ। अपने ही क्रीड़ा स्थल में दिनांक 24-12-2013 से दिनांक 20-12-2013 तक 17 वर्ष की निर्धारित आयु वाले छात्रों का किया गया। जिस टूर्नामेन्ट में पहली बार ही 16 टीमों ने प्रतिभाग किया। इस टूर्नामेन्ट का उद्घाटन विद्यालय के माननीय सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री जयप्रकाश विद्यालंकार जी के कर कमलों द्वारा किया गया। विद्यालयी क्रिकेट टूर्नामेन्ट में सभी विद्यालयों की टीमों के मध्य बहुत कठिन प्रतिस्पर्धा हुई परन्तु गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय की दोनों टीमों क्रमशः विद्यालय विभाग एवं हास्टल इलेवन ने सभी टीमों की चुनौती को पूरा करते हुए प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इस टूर्नामेन्ट में प्रतिदिन 3 मैच खेले गए जिनमें वेदपाल जी तथा व्यायाम शिक्षक लोकेश शास्त्री जी ने निष्पक्ष रुप से निर्णायकों की भूमिका निभाई। इस टूर्नामेन्ट का समापन तथा पुरस्कार वितरण समारोह बी.एच.ई.एल. रानीपुर क्षेत्र के विधायक **श्री आदेश चौहान,** गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के खेल विभाग में कार्यरत डॉ० अजय मलिक, सहायक मुख्याधिष्ठाता तथा फार्मेसी के जी.एम. द्वारा किया गया। पुरस्कार वितरण तथा समापन समारोह

के अवसर पर मुख्याध्यापक, व्यायाम शिक्षक लोकेश शास्त्री, वेदपाल जी, भगत सिंह जी, प्रदीप मौर्य जी, रणवीर सिंह जी तथा साथी अध्यापक गणों एवं कर्मचारियों ने सहयोग किया तथा विद्यालय में पहली बार आयोजित क्रिकेट प्रतियोगिता सफलतापूर्वक समापन हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 योगेश शास्त्री जी ने किया।

**फुटबॉल–** एक बार पुन: राज्य स्तरीय विद्यालयी फुटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन उत्तराखण्ड राज्य के कोटद्वार जनपद में हुआ। जिस प्रतियोगिता की में प्रतिभाग करते हुए गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय की फुटबॉल टीम ने राज्य स्तर में भी तृतीय स्थान प्राप्त किया। यह पहला अवसर है कि हरिद्वार जनपद की टीम ने सम्पूर्ण राज्य के जनपदों में कड़ी प्रतिस्पर्धा करते हुए तृतीय स्थान प्राप्त किया। यह प्रतियोगिता 14 व 17 बर्ष की निर्धारित आयु वाले वर्ग की थी जिसमें हमारे विद्यालय के क्रमश: **ब्र० लक्ष्मण, ब्र० बब्बन** अंडर **14 वर्ग ब्र० हिमांशु रावत अंडर 17 वर्ग का चयन राष्ट्रीय स्तर हेतु हुआ और विद्यालय के तीनों ब्रह्मचारियों** ने राष्ट्रीय स्तरीय विद्यालयी फुटबॉल प्रतियोगिता में प्रतिभाग कर विद्यालय का नाम ऊँचा किया। इसके पश्चात् गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय की फुटबॉल टीम ने हरिद्वार स्थित सेक्टर 4 में 14 व 12 वर्ष की निर्धारित आयु वर्ग वाली प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया, जिस प्रतियोगिता में सभी टीमों को पराजित कर अपनी प्रतिभा दिखाते हुए क्रमश: प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किया। तत्पश्चात् बी.एच.ई.एल. स्थित सेक्टर 4 में ही एक ओपन लीग (टूर्नामेन्ट) का आयोजन हुआ। इस लीग गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय की टीम ने प्रतिभाग करते हुए सभी निर्णायकों व दर्शकों को अपने खेल से आश्चर्यचकित कर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इसके पश्चात् हाल ही में जनवरी माह में दिनांक 26-1-14 से दिनांक 28-1-14 तक जनपद स्तरीय फुटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में हुआ, जिस प्रतियोगिता में 16 टीमों ने प्रतिभाग किया। अत्यंत हर्ष का विषय है कि सभी टीमों को पराजित करते हुए पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी व्यायाम शिक्षक लोकेश शास्त्री की प्रेरणा से हमारे विद्यालय की टीम ने प्रतियोगिता के फाइनल में प्रवेश कर इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

**बौद्धिक प्रतियोगिताएँ–** शारीरिक एवं खेल प्रतियोगिताओं में अपने विद्यालय को सर्वश्रेष्ठ पद पर अलंकृत करने के साथ-साथ बौद्धिक प्रतियोगिताओं में भी विद्यालय के ब्रह्मचारियों ने सभी विद्यालयों से अपनी विजय का लोहा मनवाया। शिक्षण-सत्र 2013-14 की कुछ बौद्धिक प्रतियोगिताओं का विवरण इस प्रकार है–

1. **अखिल भारतीया भाषा-भाषण प्रतियोगिता–** शिक्षण सत्र 1013-14 में सर्वप्रथम पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी अपने विद्यालय में ही दिनांक 26-10-13 को त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न विद्यालयों के

छात्रों ने प्रतिभाग किया एवं कुल 35 छात्रों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। गौरव का विषय यह है कि तीनों भाषाओं में (हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी) अपने विद्यालय के ब्रह्मचारियों क्रमशः **ब्र० रुस्तम, ब्र० भव्य, ब्र० हर्ष कपूर, ब्र० आलोक व ब्र० वरुण** ने अपनी प्रतिभाओं का प्रदर्शन करते हुए प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किये तथा विद्यालय की विजय पताका को लहराया। इस प्रतियोगिता में संयोजक की भूमिका **डॉ० योगेश शास्त्री जी** ने निभाई तथा सभी अध्यापक गणों व कर्मचारी गणों ने अपना सहयोग दिया जिसके कारण प्रतियोगिता सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

2. **स्वामी दर्शनानन्द सांस्कृतिक प्रतियोगिता–** गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के संस्थापक स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती की 152 वीं जयन्ती पर दिनांक 26-1-14 को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में आयोजित भाषण, समूह गान एवं श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों के छात्रों ने प्रतिभाग किया। जिनमें गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के ब्रह्मचारियों ने भी प्रतिभाग किया तथा गुरुकुल महाविद्यालय के कुलपति प्रशासनिक वर्ग तथा निर्णायक गणों के हृदय को अपनी प्रतिभा द्वारा मंत्रमुग्ध कर दिया। हिन्दी भाषण प्रतियोगिता में **ब्र० हर्ष कपूर, श्लोकोच्चारण में डॉ० योगेश शास्त्री जी के सुपुत्र अथर्व वत्स (D.A.V.)** ने प्रथम स्थान प्राप्त कर गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के अध्यापकों तथा अपने विद्यालय का नाम गौरव से ऊँचा उठाया और यह प्रमाणित कर दिया कि गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के ब्रह्मचारियों ने किसी भी प्रतिस्पर्धा अथवा प्रतियोगिता में किसी से कम नहीं हैं, चाहे वह बौद्धिक प्रतियोगिता हो या फिर शारीरिक प्रतियोगिता गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के ब्रह्मचारियों ने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी श्रेष्ठता का परिचय दिया।

**योग–** पिछले 13 वर्षों की भाँति इस सत्र में भी गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के ब्रह्मचारियों ने न सिर्फ राज्य स्तर तक अपितु राष्ट्रीय स्तर तक की योग प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग किया तथा उत्तराखण्ड राज्य एवं गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय का नाम ऊँचाइयों तक पहुँचाया इस सत्र की विद्यालयी योग प्रतियोगिता में गुरुकुल के बढ़ते कदमों पर प्रकाशन अग्रलिखित है–

1. सर्वप्रथम जनपद स्तरीय विद्यालयी योग प्रतियोगिता का आयोजन गायत्री विद्यापीठ, शान्तिकुञ्ज हरिद्वार में हुआ जसमें प्रतिभाग करते हुए गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के योग के ब्रह्मचारियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए राज्य स्तर हेतु अपना नामांकन कराया तथा विद्यालय का नाम प्रथम व श्रेष्ठ स्थान पर विभूषित किया।
2. तत्पश्चात् गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के ब्रह्मचारियों ने जनपद टिहरी गढ़वाल में आयोजित राज्य स्तरीय विद्यालयी योग प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया और वहाँ भी अपनी प्रतिभा द्वारा सभी को मोहित कर प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा कुछ ब्रह्मचारियों का चयन राष्ट्रीय स्तर हेतु हुआ, जिसके नाम निम्न हैं– **1. ब्र० आर्यन, 2. ब्र०**

**सत्यम, 3. ब्र० सरबजीत, 4. ब्र० आनन्द, 5. ब्र० राघव, 6. ब्र० अक्षित, 7. ब्र० निशान्त।**

3. इसके बाद विद्यालय के चयनित ब्रह्मचारियों ने गुजरात प्रान्त में आयोजित राष्ट्रीय स्तर विद्यालयी योग प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया तथा उत्तराखण्ड राज्य का प्रतिनिधित्व कर रहे ब्रह्मचारियों ने अपना एवं अपने विद्यालय का नाम स्वर्णिम पृष्ठों पर अंकित किया।

**वार्षिक अन्तर विद्यालयी क्रीड़ा प्रतियोगिता–** प्रतिवर्ष की भाँति इस शिक्षण सत्र 2013-14 में भी अक्टूबर के द्वितीय सप्ताह में विजयदशमी के पावन पर्व पर अपने ही विद्यालय में कक्षा 1 से 12 तक की क्रीड़ा प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इस प्रतियोगता का उद्घाटन बी.एच.ई.एल. रानीपुर क्षेत्र के विधायक माननीय आदेश चौहान जी के द्वारा हुआ। इस क्रीड़ा प्रतियोगिता में विभिन्न खेलों द्वारा ब्रह्मचारियों की प्रतिभा का निरीक्षण किया गया। जिनमें बॉलीवाल, क्रिकेट, फुटबॉल, कबड्डी, दौड़, गोला फेंक, चक्का फेंक, फल दौड़, कुर्सी दौड़ आदि खेलों का आयोजन हुआ। जिन खेलों में ब्रह्मचर्याश्रम के सभी कक्षाओं के ब्रह्मचारियों ने प्रतिभाग किया। इस वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता का समापन मा० कुलाधिपति पं० रामप्रकाश जी, संस्था के कुलपति डॉ० सुरेन्द्र कुमार एवं सभी अध्यापक गण मुख्याधिष्ठाता आचार्य यशपाल जी, सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री जयप्रकाश जी विद्यालंकार, व्यायाम शिक्षक श्री लोकेश शास्त्री जी, मुख्याध्यापक डॉ० बिजेन्द्र शास्त्री जी एवं संयोजक संचालक डॉ० योगेश शास्त्री जी उपस्थित थे तथा इस वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक समापन हुआ।

**अन्तर्राष्ट्रीय योगा सम्मेलन–** दिनांक 4, 5, 6 मार्च में अन्तर्राष्ट्रीय योग प्रतियोगिता का आयोजन देव संस्कृति विश्वविद्यालय में हुआ। जिसमें हमारे विद्यालय के छात्रों ने निम्न वर्गों में ने प्रतिभाग किया।

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. आर्यन (XI) | 2. निशान्त (XI) | 3. अक्षित (XI) | 4. सत्यम् (X) |
| 5. सरवजीत (IX) | 6. आनंद (IX) | 7. कौशल (IX) | 8.शशीशेखर (IX) |
| 9. राघव (VII) | 10. नितेश (VII) | 11. सिद्धार्थ (VI) | |

इस प्रतियोगिता में अपनी प्रतिभा दिखाते हुए ब्र० सरवजीत ने अपने वर्ग 13-18 आयु वर्ग में तृतीय स्थान प्राप्त किया।

## गुरूकुल विद्यालय की बाल सभा के क्रियाकलाप

गुरूकुल कां०वि०वि० छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए हमेशा कार्यशील है। गुरूकुल एक आदर्श शिक्षण संस्थान है। गु०कां०वि०वि० में छात्रों का शारीरिक, मानसिक,

चारित्रिक एवं सर्वांगीण विकास होता है। प्रतिवर्ष की भांति सत्र 2013-14 में दिनॉक 1जौलाई 2013 को नवीन सत्र प्रारम्भ हुआ इस अवसर पर उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति माननीय डा० महावीर जी अग्रवाल जी की अध्यक्षता में यज्ञ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हरिद्वार जनपद के शिक्षा जिला अधिकारी श्रीमान् राम कृष्ण उनियाल जी उपस्थित रहे। गुरूकुल कां० वि० वि० के सहायक मुख्य अधिवक्ता श्री जयप्रकाश जी विद्यालंकार जी के सानिध्य में यज्ञ का कार्य सम्पन्न हुआ। विद्यालय के मुख्य अध्यापक श्री विजेन्द्र जी शास्त्री ने उपस्थित अतिथि एंव अध्यापक गण तथा कर्मचारियों का धन्यवाद एंव आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमान् डॉ० योगेश जी ने किया। नवीन प्रवेश हेतु आये हुए छात्रों की लिखित व मैखिक परीक्षा का कार्य प्राराम्भ हुआ।

सत्र 2013-14 की बाल सभा का गठन दिनांक 27-07-13 को मुख्य अध्यापक श्रीमान विजेन्द्र जी शास्त्री की अध्यक्षता में हुआ। बाल सभा के पदाधिकारी छात्र निम्नवत चयन किये गये।

## बाल सभा के पदाधिकारी

**अध्यक्ष**- ब्र० अर्पण कक्षा XII

**मन्त्री**- ब्र० आलोक कक्षा X

**सेनापति**- ब्र० अशीष कक्षा X

**उपाध्यक्ष**-•ब्र० राहुल कक्षा XII

**उपमन्त्री**- ब्र० विनीत कक्षा XII

**उप सेनापति**- ब्र० आर्यन कक्षा XI

**प्रार्थना प्रमुख**- ब्र०दुष्यन्त कक्षा XIII

**प्रार्थना सहायक**- ब्र० अवनीश तिवारी कक्षा XIII

**क्रीड़ा विभाग प्रमुख**- ब्र० नितिन कक्षा XI

**सहायक**- ब्र० भीषम कक्षा XI

**पुस्तकालय+वाचनालय प्रमुख**- ब्र० हिमांशु कक्षा 7

**सहायक**- ब्र० हर्ष कक्षा X

**अनुशासन प्रमुख**- ब्र० अर्पण कक्षा XII

**सहायक**- ब्र० नितिन कक्षा XI

## सदन

1- **स्वामी दयानन्द सदन प्रमुख**- ब्र०राहुल कक्षा XII
**सहायक**- ब्र०अक्षय सैनी कक्षा XII

2- **श्रद्धानन्द सदन प्रमुख**- ब्र०नितिन चौधरी कक्षा XI
**सहायक**- ब्र०गौरव कुमार कक्षा XI

3- **आचार्य रामदेव सदन प्रमुख**- ब्र०नीरज कक्षा XII
**सहायक** - ब्र० अक्षय राठी कक्षा XII

4- **भगत सिंह सदन, प्रमुख** - ब्र० अक्षित मेहरवाल कक्षा XI
**सहायक** - ब्र० रोहित कक्षा XII

5- **गुरुदत्त सदन प्रमुख** - ब्र० योगेश पंत कक्षा XI
**सहायक** - ब्र० अमन कक्षा XII

**जयप्रकाश विद्यालंकार**
(सहायक मुख्याधिष्ठाता)

**डॉ० विजेन्द्र शास्त्री**
(का०मुख्याध्यापक)

# घोष ( बैण्ड ) के ब्रह्मचारी छात्र

**घोष निर्देशक-श्री प्रकाशवीर** (हिन्दी प्राध्यापक)

| | | |
|---|---|---|
| 1. | ब्र० नेमिश जैन | नवम घोष प्रमुख |
| 2. | ब्र० शशांक | नवम सहायक घोष प्रमुख |
| 3. | ब्र० हिमेश अग्रवाल | दशम |
| 4. | ब्र० अभिषेक हलधर | दशम |
| 5. | ब्र० भूपेन्द्र | दशम |
| 6. | ब्र० ऋतिक | दशम |
| 7. | ब्र० अमन | दशम |
| 8. | ब्र० यश | दशम |
| 9. | ब्र० देवांश | दशम |
| 10 | ब्र० जतिन | दशम |
| 11. | ब्र० विशान्त | दशम |
| 12. | ब्र० वैभव | दशम |
| 13. | ब्र० आशीष चौधरी | नवम |
| 14. | ब्र० रुस्तम चौधरी | नवम |
| 15. | ब्र० चिराग मित्तल | नवम |
| 16. | ब्र० अनुराग | नवम |
| 17. | ब्र० शुभम गौतम | नवम |
| 18. | ब्र० भानु प्रताप | नवम |
| 19. | ब्र० केशव | नवम |
| 20. | ब्र० प्रिंस | नवम |
| 21. | ब्र० भूप सिंह | नवम |
| 22. | ब्र० अंकित कश्यप | नवम |
| 23. | ब्र० शशि शेखर | नवम |
| 24. | ब्र० अंकित वर्मा | नवम |
| 25. | ब्र० मनीष कश्यप | नवम |
| 26. | ब्र० आशीष | नवम |
| 27. | ब्र० मनीष चौहान | नवम |
| 28. | ब्र० राधेश्याम | अष्टम |
| 29. | ब्र० उदित | अष्टम |
| 30. | ब्र० सूर्या | अष्टम |
| 31. | ब्र० साहिल | अष्टम |

# मास अप्रैल 2013 से दानदाताओं की सूची

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी गुरुकुल के विकास के लिए धन-संग्रह (दान रुप में) प्राप्त हुआ। जिसका विवरण निम्न है-

| क्र.स. | दान राशि | दान दाताओं का नाम | स्थान |
|---|---|---|---|
| 1. | आर्य विद्या सभा, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार के प्रधान दानवीर महाशय धर्मपाल जी के द्वारा महाशय धर्मपाल चेरेटेबिल ट्रस्ट के सौजन्य से गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के विस्तारीकरण हेतु 20x37, के 10 कक्षा-कक्षों का निर्माण बरामदे सहित कराया गया। | | |
| 2. | 10,00,000 | आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट | दिल्ली |
| 3. | 2,00,000 | श्रीमती रंजना पत्नि श्री अशोक राजदान | दिल्ली |
| 4. | 1,00,000 | श्री अशोक कुमार गुप्ता | दिल्ली |
| 5. | 51,000 | श्री जयसिंह गायवाड़ | जबलपुर |
| 6. | 51,000 | श्री मनोज गुलाटी | दिल्ली |
| 7. | 45,000 | श्रीमती ओबराय | नई दिल्ली |
| 8. | 25,000 | प्रो0 परमानन्द प्रकाश पाठक | गु.कां.वि.वि |
| 9. | 25,000 | आर्य समाज ओरंगाबाद | महाराष्ट्र |
| 10. | 21,000 | प्रो0 श्री सुरेन्द्रर कुमार जी, कुलपति | गु.कां.वि.वि |
| 11. | 21,000 | आचार्य यशपाल जी,मुख्याधिष्ठाता | गु.कां.वि.वि |
| 12. | 21,000 | श्री जयप्रकाश विद्यालंकार,सहायक मुख्याधिष्ठाता | गु.कां.वि.वि |
| 13. | 21,000 | श्री आशीष गुप्ता जी | दिल्ली |
| 14. | 21,000 | प्रो0 राजेन्द्र अग्रवाल जी | गु.कां.वि.वि |
| 15. | 21000 | डा. संगीता विद्यालंकार | गु.कां.वि.वि |
| 16. | 21,000 | श्री दुष्यन्त राणा | गु.कां.वि.वि |
| 17. | 21,000 | श्री ओमप्रकाश जमदग्नि | हरिद्वार |
| 18. | 12,001 | श्री शैलेन्द्र प्रकाश गोयल | जोधपुर |
| 19. | 11,700 | श्री महिपाल सिंह | मेरठ |
| 20. | 11,001 | प्रो0 प्रभात सैंगर, गौशाला मरम्मत | गु.कां.वि.वि |
| 21. | 11,000 | श्री दयानन्द पुत्र श्री जयलाल जी | मुण्डका,दिल्ली |
| 22. | 11,000 | श्री आनन्द पुत्र श्रीलालचन्द्र जी | मुण्डका,दिल्ली |
| 23. | 11,000 | श्री चन्द्रप्रकाश जी | गु.कां.वि.वि |
| 24. | 11,000 | श्रीमती दूलो जौहरी | गुजरात |
| 25. | 11,000 | श्री विनोद कुमार | गु.कां.वि.वि |
| 26. | 11,000 | श्री वीरेन्द्र चौहान | गुरुकुल |
| 27. | 11,000 | श्री राजेन्द्र कुमार | गु.कां.वि.वि |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 28. | 11,000 | श्री प्रमथेश भट्टचार्य | गु.कां.वि.वि |
| 29. | 11,000 | श्री ब्रहममुनि वानप्रस्थी | वानप्रस्थी |
| 30. | 11.000 | प्रो0ईश्वर भारद्वाज | गु.कां.वि.वि |
| 31. | 11,000 | श्री आर.पी.दुर्गा | दिल्ली |
| 32. | 11,000 | श्री ईश नारंग | दिल्ली |
| 33. | 11,000 | डा. सोमवीर | बालीद्वीप इण्डोनेशिया |
| 34. | 11,000 | प्रो0 वी.के.शर्मा | गु.कां.वि.वि |
| 35. | 11,000 | डा. राजेन्द्र कुमार | गु.कां.वि.वि |
| 36. | 11,000 | इंजीनियर हजारिलाल | हरिद्वार |
| 37. | 11,000 | श्री विक्रम नरुला | दिल्ली |
| 38. | 11,000 | श्री जशवीर सिंह(पूर्व अध्यापक) | गुरुकुल कांगडी |
| 39. | 10,000 | डा. सोमवीर | बालदीप इण्डोनेशिया |
| 40. | 10,000 | श्री अतुल मगन माता पुष्पा देवी की स्मृति में | हरिद्वार |
| 41. | 10,000 | श्री अनिरूद्व सिखौला | कुशाघाट हरिद्वार |
| 42. | 10,000 | श्री शैलेन्द्र प्रकाश गोयल | जोधपुर |
| 43. | 10,000 | श्री भूमेश अग्रवाल | हल्द्वानी |
| 44. | 10,000 | श्री ज्ञानेश अग्रवाल | हल्द्वानी |
| 45. | 10,000 | श्री प्रबोध कुमार अग्रवाल | हल्द्वानी |
| 46. | 10,000 | श्री विवेक कुमार अग्रवाल | हल्द्वानी |
| 47. | 7,100 | श्री सोमवीर | बालदीप इण्डोनेशिया |
| 48. | 6,000 | श्री अमित आर्य | जालन्धर |
| 49. | 5,100 | श्री वरुण आर्य/श्री विनय आर्य | न्यूजीलैण्ड |
| 50. | 5,100 | डा. दीनदयाल वेदालंकार | गु.कां.वि.वि |
| 51. | 5,100 | श्री एस.पी.सिंह | दिल्ली |
| 52. | 5,100 | डा. अमर जीवन | नई दिल्ली |
| 53. | 5,100 | डा. बृजेश कुमार (अंशदान) | गु.कां. |
| 54 | 5,100 | श्री ईश नारंग | दिल्ली |
| 55. | 5,100 | डा. विनय विद्यालंकार | रामनगर, नैनिताल |
| 56. | 5,100 | अरुण प्रकाश वर्मा | दिल्ली |
| 57. | 5,000 | स्व0 आत्माराम द्वारा विपिन | विलासपुर हि.प्र. |
| 58. | 5,000 | गुप्तदान | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 59. | 5,000 | D/L 20 | जालन्धर |
| 60. | 5,000 | श्री अतुल मगन | हरिद्वार |
| 61. | 4,000 | श्री वी.के प्लास्टिक | दिल्ली |
| 62. | 4,000 | श्री महेश चन्द सक्सैना | मुम्बई |
| 63. | 3,500 | डा0 नमिता जोशी | क.गु.महाविद्यालय हरिद्वार |
| 64. | 3,500 | डा0 श्यामलता जुयाल | क.गु.महाविद्यालय हरिद्वार |
| 65. | 3,500 | डा0 अंजलि शर्मा | क.गु.महाविद्यालय हरिद्वार |
| 66. | 3,500 | डा0 सीमा शर्मा | क.गु.महाविद्यालय हरिद्वार |
| 67. | 3,500 | डा0 मुदिता अग्निहोत्री | क.गु.महाविद्यालय हरिद्वार |
| 68. | 3,500 | डा0 आभा शुक्ला | क.गु.महाविद्यालय हरिद्वार |
| 69. | 3,500 | डा0 निधि हाण्डा | क.गु.महाविद्यालय हरिद्वार |
| 70. | 3,500 | डा0 दीपा गुप्ता | क.गु.महाविंद्यालय हरिद्वार |
| 71. | 3,500 | डा0 बबीता शर्मा | क.गु.मंहाविद्यालय हरिद्वार |
| 72. | 3,500 | डा0 मंजूषा कौशिक | क.गु.महाविद्यालय हरिद्वार |
| 73. | 3,500 | डा0 रीतू अरोड़ा | क.गु.महाविद्यालय हरिद्वार |
| 74. | 3,500 | डा0 संगीता मदान | क.गु.महाविद्यालय हरिद्वार |
| 75. | 3,500 | डा0 सुचित्रा मलिक | क.गु.महाविद्यालय हरिद्वार |
| 76. | 3,500 | डा0 पद्मा सिंह | क.गु.महाविद्यालय हरिद्वार |
| 77. | 3,500 | डा0 मृदुला सिंह | क.गु.महाविद्यालय हरिद्वार |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 78. | 3,500 | डा0 ऋचा सैनी | क.गु.महाविद्यालय हरिद्वार |
| 79. | 3,500 | डा0 मनीषा | क.गु.महाविद्यालय हरिद्वार |
| 80. | 3,500 | डा0 सुनीता | क.गु.महाविद्यालय हरिद्वार |
| 81. | 3,500 | डा0 बरिन्दर वाहला | क.गु.महाविद्यालय हरिद्वार |
| 82. | 3,100 | श्रीमती राज | मुण्डका दिल्ली |
| 83. | 3,100 | श्री दयानन्द | मुण्डका दिल्ली |
| 84. | 2,520 | श्री अरविन्द शर्मा | गाजियाबाद |
| 85. | 2,100 | श्री कमल जीत | मुण्डका दिल्ली |
| 86. | 2,100 | श्री भीम सिंह | मुण्डका दिल्ली |
| 87. | 2,100 | श्रीमती राजो | मुण्डका दिल्ली |
| 88. | 2,100 | श्री पंडित कृष्ण पुत्र श्री देवीलाल | मुण्डका दिल्ली |
| 89. | 2,100 | श्री प्रेम सिंह | मुण्डका दिल्ली |
| 90. | 2,100 | श्री अशोक | मुण्डका दिल्ली |
| 91. | 2,100 | श्री प्रकाश | मुण्डका दिल्ली |
| 92. | 2,100 | श्री मुरारी | मुण्डका दिल्ली |
| 93. | 2,100 | श्री जितेन्द्र | मुण्डका दिल्ली |
| 94. | 2,100 | श्री राजेन्द्र | मुण्डका दिल्ली |
| 95. | 2,100 | श्रीमती परमेश्वरी | मुण्डका दिल्ली |
| 96. | 2,100 | श्री श्वेतांक आर्य पुत्र श्री वेदप्रकाश जी | गु.कां.वि.वि. |
| 97. | 2,100 | श्री श्वेतांक आर्य पुत्र श्री वेदप्रकाश जी | गु.कां.वि.वि. |
| 98. | 2,100 | श्री अमन आर्य | जालन्धार |
| 99. | 2,100 | डा0 योगेश शास्त्री | गु.कां.वि.वि. |
| 100. | 2,100 | प्रो0 प्रियव्रत जी | पानीपत |
| 101. | 5,000 | श्री रामेश्वर दयाल गुप्ता | दिल्ली |
| 102. | 5,100 | श्री सुभाषचन्द्र चान्दना | दिल्ली |
| 103. | 11,000 | श्री उमाशंकर सैन | दिल्ली |
| 104. | 5,100 | श्री वेदप्रकाश सिंघल | दिल्ली |

**अपील**

गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय स्ववित्तपोषित संस्था है। ब्रह्मचारियों से मात्र भोजनादि का व्यय ही लिया जाता है शिक्षा निःशुल्क है समस्त कार्य दानवीर महानुभावों के सहयोग से ही संचालित किये जाते है।

भविष्य में ब्रह्मचारियों को शिक्षण हेतु उत्तम सुविधा प्रदान करने के लिए हॉस्टल

(छात्रावास), बड़ी कम्प्यूटर लेब, बृहद पुस्तकालय-वाचनालय, घुड़सवारी, तीरदांजी, तैराकी एवं निशाने बाजी के कार्यो को पूर्ण करने हेतु दानवीर महानुभावों से सहयोग की अपेक्षा है।

कृपया अपना दान (सहयोग) सहायक मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, हरिद्वार के नाम/पते पर भेंजे।

सधन्यवाद!

नोट-1. सभी दानी महानुभावों का गुरुकुल परिवार हृदय से अभिनन्दन, स्वागत एवम् धन्यवाद् ज्ञापित करता है।

2. शेष दानदाताओं की सूची पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित की जायेगी।

**जयप्रकाश विद्यालंकार**
सहायक मुख्याधिष्ठाता

## कुल-वन्दना

जय जय जननि! कुलदेवी, तुझको बार-बार प्रणाम है।
यह मंजु अञ्जलि प्रेममय, अर्पित तुझे अभिराम है।।
महिमा हिमालय की शिखायें गा रहीं तेरी स्वयं।
भागीरथी की बीचियों में, स्पष्ट तेरा नाम है।।1।।
हम देखते तुझमें सदा, नव प्रेम का उल्लास हैं।
हमको मधुरतम गोद ही तेरी परम विश्राम है।।2।।
तेरे विशद आकाश की, स्वाधीनता में हम पले।
स्वर्गीयता मिश्रित जहाँ उज्ज्वल उषा का धाम है।।3।।
तेरे बनों की स्तब्धता में दिव्य कोई राग है।
सब ओर से मानो बरसता, पुण्य का परिणाम है।।4।।
तूने हृदय मोती पिरो कर, प्रेम के दृढ़ सूत्र में।
अनुपम बनाई यह हमारी, चारु मुक्तादाम है।।5।।
तू ही बजाती वीणा वह, जिसके कि हम सब तार हैं।
जो तार सारे एक स्वर हों, कह रहे अविराम हैं।।6।।
हम हैं सदा तेरे, हमारी तू हृदय वर वासिनी।
सम्बन्ध यह तेरा हमारा, नित्य है निष्काम है।।7।।

**- श्री वागीश्वर विद्यालंकार**

कोटद्वार में राज्य स्तरीय फुटबाल प्रतियोगिता में हरिद्वार और के अंडर 14 वर्ग में खेल के लिए जुझते खिलाड़ी।

# योग में गुरुकुल ने जीते पांच स्वर्ण

## सर्वजीत और अभिषेक को पहला मकाम

अमर उजाला ब्यूरो

देवसंस्कृति में 13वीं

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में फुटबाल प्रतियोगिता की विजेता टीम की ट्रॉफी प्राप्त करते गुरुकुल कांगड़ी टीम के फुटबालि।

# गुरुकुल कांगड़ी के नाम रहा फुटबाल मैच

गुरुकुल कांगड़ी विवि से कोटद्वार में होने वाली प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिता के लिए रवाना होते जिले की फुटबाल की टीम के खिलाड़ी

| | | | |
|---|---|---|---|
| 105. | 45,000 | श्रीमती कीर्ति शर्मा | दिल्ली |
| 106. | 45,000 | आर्य समाज कीर्तिनगर | दिल्ली |
| 107. | लॉन मेकर मशीन | डा॰ आर॰के॰एस॰ डागर | गु.कां.विश्वविद्यालय |
| 108. | 21,000 | प्रो॰ वी॰के॰ शर्मा | गु.कां.विश्वविद्यालय |
| 109. | 11,000 | प्रो॰ ब्रह्मदेव विद्यालंकार | गु.कां.विश्वविद्यालय |
| 110. | 11,000 | श्री आलोक जौहरी | हरिद्वार |
| 111. | 11,000 | श्री आर॰डी॰ शर्मा | गु.कां.विश्वविद्यालय |
| 112. | 11,000 | डा॰ करतार सिंह | गु.कां.विश्वविद्यालय |
| 113. | 11,000 | रवि सेल्स कार्पोरेशन | दिल्ली |

# विद्यालय में ब्रह्मचारियों के अध्ययन हेतु एम.डी.एच. ब्लॉक का शिलान्यास एवं वृक्षरोपण

एम.डी.एच. ब्लॉक का शिलान्यास करते महाशय धर्मपाल जी

वृक्षारोपण करते महाशय जी

वृक्षारोपण करते कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी
एवं प्रेम अरोड़ा जी, दिल्ली

वृक्षारोपण करते मुख्याधिष्ठाता आचार्ययशपाल जी

विद्यालय में नवनिर्मित एम.डी.एच. ब्लॉक का प्रगतिरत् निर्माण कार्य

गुरुकुल ने कैसा अपना, चमत्कार दिखलाया है
अच्छी-अच्छी औषधियों से सबको लाभ करवाया है
सबके तन-मन पर इसने जादू है फेरा
रोग-कष्ट से मुक्ति देकर सबको ही हर्षाया है
देश-विदेश में इसने तभी अपना लोहा मनवाया है
अपना ही नहीं पूरे देश का, इसने मान बढ़ाया है।

*प्रकृति के अनमोल उपहार*
*आपके लिए*

**प्रमुख उत्पाद**

- गुरुकुल च्यवनप्राश
- गुरुकुल अमृत रसायन
- गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
- गुरुकुल पायोकिल
- गुरुकुल द्राक्षारिष्ट
- गुरुकुल रक्तशोधक
- गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट
- गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
- गुरुकुल ब्राह्मी सुधा
- गुरुकुल शांति सुधा

## GURUKUL KANGRI PHARMACY


Post Office : Gurukul Kangri-249404 Distt.-Haridwar (Uttaranchal)
Ph. : 01334-246073 Fax : 01334-246982
E-mail : gm_gurukul@zyberway.com

गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय में बास्केटबॉल प्रतियोगिता में जीतकर आए बच्चों को आशीर्वाद देते कुलपति प्रो. सुरेंद्र कुमार।

**गुरुकुल के खिलाड़ी जिला टीम में चयनित**

हरिद्वार। गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय विभाग की बास्केटबाल टीम का चयन जिला स्तरीय विद्यालयी टीम में किया गया। [illegible] खेल समन्वयक मंजीत राणा ने बताया कि राजकीय इंटर कालेज रुड़की में आयोजित चयन प्रतियोगिता में गुरुकुल से सीनियर वर्ग अंडर-19 में मनन डबराल, योगेश पंत और अमृत गोस्वामी का चयन किया गया। जूनियर वर्ग अंडर-17 में हिमांशु चौहान, सूरज, कर्मवीर, शुभम और प्रद्युम्न को चुना गया। सब जूनियर अंडर-14 में दर्शन मलिक, कृपाशंकर और विशाल कुमार चयनित किए गए। इस मौके पर केपी सिंह, संदीप कुमार, केपी यादव, विवेक सैनी उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय [illegible]


Printed by: Kiran Offset Printing Press, Kankhal, Haridwar #9837007222